छन्द साधना, आत्म अनुभूति और शिवत्व

(11 स्तोत्रों का छन्दानुवाद मूल स्तोत्रों के ही छन्दों में)

लेखक

सुरेश चौधरी 'इंदु'

शुक्तिका प्रकाशन

छन्द साधना, आत्म अनुभूति और शिवत्व

CHHAND SADHANA, AATAM ANUBHUTI AUR SHIVATWA *By* **Suresh Choudhary 'Indu'**

ISBN :

प्रकाशक :

शुक्तिका प्रकाशन
माइंडस्टार वेलनेस प्राइवेट लिमिटेड
24, हरिंगटन मेंशन
8, हो ची मिन्ह सारणी, कोलकाता-700071
email : ritzoff@gmail.com
मो. : +91 82409-61596

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

© सर्वाधिकार लेखकाधीन सुरक्षित

मूल्य :

संस्करण : 2026

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550-21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

अनुक्रमणिका

1.	प्रस्तावना	05
2.	शिव तांडव स्तोत्र	11
3.	महिषासुर मर्दिनी	29
4.	कनकधारा स्तोत्र	49
5.	नमस्ते सदा वत्सले	67
6.	श्री जगन्नाथ अष्टकम	73
7.	भारतभावस्तवः	83
8.	मातृ-स्तोत्रम्	105
9.	कृष्णाष्टकम	123
10.	श्री अष्टलक्ष्मी स्तोत्र	133
11.	निर्वाण षट्कम	143
12.	गोपी गीत	151
13.	कवि परिचय	177

प्रस्तावना

छन्द साधना, आत्म अनुभूति और शिवत्व

**''न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता, चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥''**

साहित्य की वीथिकाओं में 41 सोपान (पुस्तकें) चढ़ने के बाद, जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो पाता हूँ कि लेखन मेरे लिए कभी केवल अक्षरों का जोड़-तोड़ नहीं रहा। यह तो एक निरंतर संवाद रहा है—स्वयं का स्वयं से, और फिर स्वयं का उस समष्टि से जिसे हम ईश्वर कहते हैं। मेरी पिछली कृतियों, चाहे वह 'बून्द-बून्द सागर' की क्षणिकाएँ हों या 'तिमिर ढलेगा' की ओजस्वी कविताएँ, उनमें एक छटपटाहट थी—अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की। किंतु **'छंद साधना, आत्म-अनुभूति और शिवत्व'** के इस पड़ाव तक पहुँचते-पहुँचते वह छटपटाहट एक शांत, गंभीर प्रवाह में बदल गई है।

भारतीय काव्य परंपरा कितनी प्राचीन है, इसका निर्णय करना मुश्किल है। कहा जाता है कि प्रारम्भिक काव्य व्याकरण-बद्ध नहीं थे, पर वेदों में भी छंदों को देखने का अवसर मिलता है। रावण रचित छंद हम सब पढ़ते हैं। संभवतः किसी छंदकार ने रावण की कथा लिखी और रावण के मुख से यह छंद कहलवा दिया, तब से यह रावण द्वारा लिखा माना जाने लगा।

अक्सर लोग पूछते हैं कि इतने वर्षों के लेखन के बाद अब 'अनुवाद' क्यों? मैं इसे अनुवाद नहीं कहता। यह तो 'पुनर्जन्म' है।

आदि शंकराचार्य या व्यास जी के मानस से जो स्तोत्र निकले, वे हज़ारों वर्षों से अंतरिक्ष में ध्वनियों के रूप में तैर रहे हैं। उन ध्वनियों को पकड़कर हिन्दी के कलेवर में इस प्रकार ढालना कि उनकी 'आत्मा' यानी लय न मरे—यही मेरी सबसे बड़ी साहित्यिक चुनौती और उपलब्धि रही है। **यह विश्व का प्रथम ऐसा प्रयास है जहाँ 11 स्तोत्रों का अनुवाद उनके ही मूल छंद विधान में अक्षुण्ण रूप से किया गया है।**

1. प्रेरणा का वह परम क्षण (प्रेरणा स्रोत)

इस विलक्षण ग्रंथ की रचना की पृष्ठभूमि कोई पूर्व-नियोजित विचार नहीं था, बल्कि यह तो उस परम सत्ता का एक अकल्पनीय विधान था। बात कुछ वर्ष पूर्व की है, जब मैं यूट्यूब पर आदि गुरु शंकराचार्य रचित 'कनकधारा स्तोत्र' सुन रहा था। उसकी अलौकिक ध्वनि और अद्वितीय छंद-प्रवाह ने मेरे अंतस को भीतर तक झंकृत कर दिया। जब मैंने इसका दिव्य पाठ अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शारदा चौधरी को सुनाया, तो उन्होंने सहज भाव से एक अत्यंत सुंदर और मर्मस्पर्शी आग्रह किया। उन्होंने कहा—"**आप इतनी पुस्तकें लिखते हैं, क्यों न आदिगुरु के इस कनकधारा स्तोत्र का हिंदी में ऐसा काव्यानुवाद करें जो इसके मूल संगीत और लय को बनाए रखे, ताकि जो लोग संस्कृत नहीं जानते, वे भी इसके दिव्य भावों का रसपान कर सकें।**"

पत्नी का यह आग्रह मेरे मन में घर कर गया। मैंने इस चुनौती को स्वीकार तो कर लिया, लेकिन यह कार्य मेरी सोच से कहीं अधिक कठिन और तपस्या भरा था।

2. छंद : अनुशासन या मुक्ति?

आधुनिक युग में जब कविता छंदों के 'बंधन' तोड़कर मुक्त होने का दावा करती है, मैंने जानबूझकर छंदों की शरण ली। मेरा मानना है कि जैसे गंगा को किनारों की मर्यादा ही उसे पावन और वेगवान बनाती है, वैसे ही काव्य को छंदों का अनुशासन ही उसे अमरता प्रदान

करता है।

मेरे सर्वाधिक प्रिय छंदों में पहला है **अनंग शेखर छंद**। इस समूह में अनेक छंद हैं जो लघु-गुरु के क्रम से लिखे जाते हैं। लघु-गुरु की 4 वर्ण आवृत्ति से प्रमाणिका, 8 से पञ्चचामर और 16 से अनंग शेखर छंद बनता है। रावण रचित शिवतांडव स्तोत्र इसी छंद में है। आज के रैप सांग सुनिए, तो ऐसा लगता है मानो इस छंद की लय को सुनकर ही वे इसकी नकल करने की कोशिश कर रहे हैं। इसका विधान 1212121212121212 वर्णों के क्रम पर आधारित है।

दूसरा छंद है **इंदिरा छंद** जिसमें प्रसिद्ध 'गोपी गीत' रचा गया है, जो हर सनातन संस्कृति को मानने वाले के हृदय में बसा है। श्रीमद्भागवत महापुराण के दसवें स्कंध के 29वें अध्याय का यह गीत प्रेम को अध्यात्म से जोड़ने की पराकाष्ठा है। इसका विधान नगण, रगण, रगण, लघु और गुरु (111 212 212 12) है।

तीसरा छंद है **कनक मंजरी**, जिसमें आदि शंकराचार्य रचित प्रसिद्ध 'महिषासुर मर्दिनी स्तोत्र' आबद्ध है। भारत में रहने वाले हर व्यक्ति ने कभी न कभी इस ध्वनि को अवश्य सराहा होगा। इसका विधान 4 बार लघु, फिर 6 बार भगण (211) और अंत में गुरु के नियम से चलता है।

इन गणों की मर्यादा में बंधकर ही यह हिंदी अनुवाद संभव हो पाया। उस समय मुझे लगा कि छंद बंधन नहीं, बल्कि वह द्वार है जहाँ से आत्मा असीमित आकाश में उड़ान भरती है। छंद साधना ही वास्तव में आत्म-अनुभूति का सर्वोत्तम सेतु है।

3. एकादश स्तुतियाँ : चेतना के ग्यारह आयाम

ये अलौकिक अद्भुत छंद जन-जन तक पहुँचकर असंख्य बार पढ़े और सुने गए हैं। इन कठिन छंदों को साधने का एक छोटा सा प्रयास मैंने किया है। शिवतांडव का अनुवाद उसके मूल छंद (अनंग

शेखर/पञ्चचामर) में ही किया है, गोपी गीत का अनुवाद उसके मूल छंद इंदिरा में और महिषासुर मर्दिनी का अनुवाद भी उसके मूल छंद कनक मंजरी में ही किया है।

इस ग्रंथ में संकलित 11 स्तोत्र और उनके छंदों का स्वरूप इस प्रकार है :-

1. **कनकधारा स्तोत्र -** वसंत तिलका, उपेन्द्रवज्रा, रथोद्धता, पुष्पिताग्रा
2. **शिवतांडव स्तोत्र -** अनंग शेखर / पञ्चचामर
3. **महिषासुर मर्दिनी स्तोत्र -** कनक मंजरी
4. **जगन्नाथ अष्टकम -** शिखरिणी
5. **कृष्णाष्टकम -** पञ्चचामर
6. **गोपी गीत -** इन्दिरा
7. **अष्टलक्ष्मी मंत्र -** कनक मंजरी
8. **नमामि वत्सले -** भुजंग प्रयात
9. **निर्वाण षट्कम -** भुजंग प्रयात
10. **भारतभावस्तवः** (भारत भाव) - भुजंग प्रयात **(स्वरचित मौलिक)**
11. **मातृस्तुति -** भुजंग प्रयात **(स्वरचित मौलिक)**

जब-जब मेरी लेखनी इन छंदों के प्रवाह में उतरी, तब-तब अंतस में एक नया रूपांतरण घटित हुआ। 'कनकधारा' का अनुवाद करते समय मन में करुणा का ज्वार था, तो 'निर्वाण षट्कम' तक आते-आते यह अनुभूति उस अद्वैत स्थिति में बदल गई जहाँ न मैं हूँ, न मेरी 41 पुस्तकें, न मेरा कोई सांसारिक नाम—वहाँ केवल एक अनादि-अनंत 'शिवत्व' ही शेष बचता है।

4. राष्ट्रभक्ति और अध्यात्म का सेतु

इस साधना यात्रा में अब दो नए मौलिक शिखर जुड़े हैं— "**भारतभावस्तव**" और "**मातृस्तुति**"। इन्हें मैंने स्वयं संस्कृत में भुजंग

प्रयात छंद में रचा है और उसी सर्पिल, वेगवान छंद में इसका हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया है। मेरे लेखन में अध्यात्म कभी भी संसार से भागना या विमुख होना नहीं रहा। मेरी दृष्टि में जो माँ जगदम्बा है, वही मेरी भारत-भूमि है। उस वत्सला माँ के चरणों में स्वयं को समर्पित करना ही मेरी लेखनी का परम पुरुषार्थ है।

5. भावी पीढ़ी से संवाद

यह पुस्तक उन युवा आँखों के लिए है जो संस्कृत की कठिनता के कारण अपने ही सांस्कृतिक कोष से दूर हो गई हैं। मैं चाहता हूँ कि जब वे हिंदी में ''चिदानंद रूपा अनादी अनंता'' पढ़ें, तो उन्हें वह गौरव महसूस हो जो हज़ारों साल पहले हमारे ऋषियों ने अनुभव किया था। यह ग्रंथ एक सेतु है—प्राचीन मेधा और आधुनिक मेधा के बीच।

6. कृतज्ञता और समापन

अंततः, यह कृति मेरे उन पाठकों के लिए एक भेंट है जिन्होंने मेरी पिछली 41 पुस्तकों को अपार स्नेह दिया। यह लेखकीय यात्रा अब एक ऐसे पड़ाव पर है जहाँ शब्दों का शोर कम हो गया है और छंदों की लय मुखर हो गई है। 'छंद साधना से शिवत्व' तक की यह यात्रा मेरी आत्मा का वह नाद है जो अब पाठकों के हृदय में गूँजने के लिए व्याकुल है।

हे पाठकों! जब आप इन पन्नों को पलटें, तो इसे केवल कविता न समझें। इसे उस आदि-शक्ति का आह्वान समझें, जिसने मुझ जैसे साधारण लेखक को इन असाधारण छंदों के सारथी के रूप में चुना। यह संपूर्ण पुरुषार्थ देवों के देव महादेव के चरणों में समर्पित है।

''चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥''

— सुरेश चौधरी 'इन्दु'

गंगा दशहरा 2083

दिनांक : 25 मई, 2026

शिव तांडव स्तोत्र

शिव तांडव स्तोत्र : रावण की भक्ति की अमर कथा, गहन व्याख्या और आध्यात्मिक महत्व

शिव तांडव स्तोत्र हिंदू धर्म का एक अत्यंत शक्तिशाली और लोकप्रिय स्तोत्र है, जो भगवान शिव के प्रचंड तांडव नृत्य, उनकी अलौकिक शक्ति, सौंदर्य और करुणा का वर्णन करता है। यह स्तोत्र ''रावण'' द्वारा रचित माना जाता है, जो शिव के परम भक्त थे। पञ्चचामर छंद में रचित इस 15-16 श्लोकों वाले स्तोत्र की भाषा अनुप्रासपूर्ण, संगीतमय और जटिल है, जो सुनने वाले के मन में शिव की उपस्थिति का अनुभव कराती है।

यह न केवल एक स्तुति है, बल्कि भक्ति, अहंकार के त्याग और शिव कृपा की गाथा है। आइए, इस पर विस्तृत निबंध के लिए पूरी कथा, स्तोत्र का पूर्ण पाठ, प्रत्येक श्लोक की व्याख्या, महत्व और लाभ जानते हैं।

शिव तांडव स्तोत्र की कथा : अहंकार का मर्दन और भक्ति की विजय

पौराणिक कथाओं (शिव पुराण और रामायण से प्रेरित) के अनुसार, लंकाधिपति रावण शिव के महान भक्त थे। वे दस सिर वाले दशानन (रावण) कहलाते थे, लेकिन उनकी भक्ति अटूट थी। एक बार रावण लंका लौट रहे थे, तो रास्ते में कैलाश पर्वत आया। रावण ने सोचा कि यदि वे कैलाश को उठाकर लंका ले जाएं, तो शिव सदैव उनके साथ रहेंगे और उन्हें बार-बार कैलाश आने की जरूरत

नहीं पड़ेगी।

अपनी 20 भुजाओं की शक्ति से रावण ने कैलाश पर्वत को हिलाना शुरू कर दिया। पर्वत हिलने लगा, जिससे शिव ध्यान में थे और माता पार्वती उनके साथ बैठी थीं। शिव ने रावण के अहंकार को तोड़ने के लिए अपने दाहिने पैर के अंगूठे से पर्वत को हल्का सा दबा दिया। पर्वत स्थिर हो गया और रावण की भुजाएं दब गईं। असहनीय पीड़ा में रावण चीख उठे-''शंकर! शंकर!'' (अर्थात् हे शंकर, क्षमा करो!)

इस पीड़ा में रावण ने शिव की स्तुति शुरू की। उन्होंने अपने ड्रम (या कुछ कथाओं में बिना वाद्य के) की ताल पर तुरंत 1008 छंदों की रचना कर डाली, जिसका संक्षिप्त रूप शिव तांडव स्तोत्र कहलाया। रावण की यह स्तुति इतनी भावपूर्ण और शक्तिशाली थी कि शिव प्रसन्न हो गए। उन्होंने रावण को मुक्त किया और वरदान दिए-लंका की समृद्धि, ज्ञान-विज्ञान, सिद्धियां और अमरत्व का आशीर्वाद। रावण के चीत्कार (''राव'') से शिव ने उन्हें ''रावण'' नाम भी दिया।

यह कथा अहंकार के त्याग और सच्ची भक्ति की शिक्षा देती है। रावण जैसे महान विद्वान भी शिव के सामने नतमस्तक हो गए और उनकी स्तुति आज भी लाखों शिव भक्तों द्वारा जपी जाती है। कुछ कथाओं में कहा जाता है कि पार्वती ने शिव को रावण के संगीत से बाहर निकाला, क्योंकि शिखर पर जगह कम थी और शिव ने रावण को धक्का देकर नीचे गिरा दिया, जिससे कैलाश पर एक लकीर बन गई।

शिव तांडव स्तोत्र का महत्व और लाभ

आध्यात्मिक : नकारात्मक ऊर्जा नाश, मानसिक शांति, आत्मबल वृद्धि।

भौतिक : लक्ष्मी, स्वास्थ्य, संतान सुख (प्रदोष पाठ से)।

वैज्ञानिक : ध्वनि तरंगों से वातावरण शुद्धि (आधुनिक अध्ययनों में)।

सांस्कृतिक : मंदिरों, महाशिवरात्रि में गाया जाता है।

यह स्तोत्र सिखाता है कि भक्ति में अहंकार नहीं, समर्पण चाहिए। रावण जैसे राक्षस भी शिव कृपा से महान बने।

निष्कर्ष : शिव तांडव स्तोत्र सिर्फ शब्द नहीं, शिव का स्वरूप है। इसे नियमित जपें-''हर हर महादेव''। शिव आपकी सभी आपत्तियों को तांडव नृत्य से नष्ट करेंगे!

शिव तांडव स्तोत्र की शैली और साहित्यिक महत्व : एक विस्तृत साहित्यिक विश्लेषण

शिव तांडव स्तोत्र न केवल भक्ति का अमर गान है, बल्कि संस्कृत साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति भी है। रावण द्वारा रचित यह स्तोत्र ''स्तोत्र साहित्य'' की परंपरा में एक अनुपम उदाहरण है, जहां काव्य की गहराई, ध्वनि की लय और भाव की तीव्रता एक साथ मिलती है। इसकी ''शैली'' (काव्य शैली) इतनी अनोखी है कि इसे सुनकर शिव का तांडव नृत्य आंखों के सामने नाच उठता है। आइए, इस पर विस्तार से चर्चा करें-छंद, अलंकार, भाषा, साहित्यिक विशेषताएं और इसका साहित्य में स्थान। यह विश्लेषण आपके विस्तृत निबंध के लिए एक स्वतंत्र अध्याय के रूप में काम कर सकता है।

1. काव्य शैली : पञ्चचामर छंद (अनंग शेखर छंद) की जादुई लय

शिव तांडव स्तोत्र ''पञ्चचामर छंद'' (Panchachamara Chhand) में रचित है। यह संस्कृत के क्लासिकल काव्य की एक विशेष वृत्ति है, जिसमें प्रत्येक पाद (quarter) में ''32 ब मात्राएं होती

हैं -''लघु-गुरु'' (short-long) का वैकल्पिक क्रम, यानी "iambic octameter" की शैली।

विशेषता : हर श्लोक के चार चरणों में लय ऐसी है कि पढ़ते या सुनते समय डमरू की थाप गूंजती है। उदाहरण :-

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥

यहां ''डमड्डमड्डमड्डम'' शब्द डमरू की ध्वनि का "onomatopoeia" (ध्वन्यनुकरण) है। यह छंद इतना संगीतमय है कि इसे गाते समय शरीर में कंपन होता है - ठीक तांडव नृत्य की तरह।

तुलना : यह छंद आदि शंकराचार्य के ''नर्मदा अष्टक'' में भी प्रयुक्त हुआ है, लेकिन रावण ने इसे शिव के प्रचंड रूप के अनुरूप बनाया। अन्य स्तोत्रों (जैसे विष्णु सहस्रनाम) की तुलना में यह अधिक ''गतिशील'' और ''उग्र'' है।

2. अलंकारों का अनुपम प्रयोग : ध्वनि और अर्थ का साम्राज्य

स्तोत्र में ''शब्दालंकार'' (ध्वनि-आधारित) का प्रभुत्व है, जो इसे साहित्य की उच्चतम श्रेणी में रखता है :-

अनुप्रास (Alliteration) : व्यंजनों की पुनरावृत्ति से संगीत पैदा होता है।

- ''धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके' - 'ध' और 'ग' की ध्वनि अग्नि की लपटों का चित्रण करती है।

- ''विलोलवीचिवल्लरी'' - 'व' की लहरें गंगा की तरंगों को जीवंत बनाती हैं।

- यमक (Pun/Repetition) : शब्दों का दोहराव अर्थ को गहरा करता है।

- ''चकार चण्डताण्डवं'' - 'च' की पुनरावृत्ति से गति बढ़ती है।

- उपमा और रूपक : विरोधाभासों का सुंदर मेल।

- शिव का ललाट अग्नि से जलता है, लेकिन सिर पर ''किशोर चंद्र'' (नवीन चंद्रमा) - अग्नि और शीतलता का समन्वय।

- गले में सर्प माला, लेकिन कुंकुम से सजी दिशाएं - भय और सौंदर्य का संगम।

- समास (Compounds) : लंबे समासों से भाषा घनी और शक्तिशाली बनी है। जैसे ''जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी'' - एक शब्द में जटा, कटाह, संभ्रम, भ्रमण, नीलिम्प, निर्झरी सब समाहित। यह रावण की विद्वता का प्रमाण है - कुछ पलों में 1008 छंद रचने की क्षमता।

ये अलंकार स्तोत्र को ''संगीतमय काव्य'' बनाते हैं, न कि सिर्फ प्रार्थना।

3. भाषा की विशेषताएं : संस्कृत का चरम सौंदर्य

- जटिलता और सरलता का मेल : भाषा कठिन है, लेकिन ध्वनि से सरल लगती है। महाविद्वान रावण ने इसे पीड़ा में रचा, फिर भी हर शब्द शिव की महिमा को उजागर करता है।

- विरोधाभास (Paradox): शिव को दिगंबर (नग्न) कहकर ब्रह्मांड को उनके वस्त्र बताना - दर्शन और काव्य दोनों।

- भाव की तीव्रता : पहले श्लोकों में तांडव का उग्र वर्णन, बाद में करुणा और भक्ति। अंत में फलश्रुति - पाठक को शिव भक्ति की ओर ले जाना।

- सांस्कृतिक प्रभाव : आज भी फिल्मों, भजनों (शंकर महादेवन का संस्करण) में इसका उपयोग होता है, जो इसकी साहित्यिक अमरता को दर्शाता है।

4. साहित्यिक महत्व : संस्कृत साहित्य का रत्न

- स्तोत्र साहित्य में स्थान : भक्ति काव्य की परंपरा (जैसे जयदेव का गीत गोविंद) में यह ''रुद्र रूप'' का प्रतिनिधि है। अन्य शिव स्तोत्रों (लिंगाष्टक, बिल्वाष्टक) से अलग - यहां ''नृत्य'' केंद्र में है।

- रावण की उपलब्धि : एक राक्षस राजा द्वारा रचित, लेकिन इतना दिव्य की शिव प्रसन्न हो गए। यह साहित्य को सिखाता है - भक्ति में जाति-वर्ग नहीं, भाव महत्वपूर्ण।

- ऐतिहासिक संदर्भ : क्लासिकल संस्कृत काल (6वीं-8वीं शताब्दी) का प्रतीक। छंद की परिपक्वता से लगता है कि यह प्राचीन परंपरा का हिस्सा है।

- आधुनिक प्रासंगिकता : मानसिक स्वास्थ्य, योग और ध्यान में इसका उपयोग - ध्वनि चिकित्सा के रूप में। साहित्य के रूप में यह ''भक्ति आंदोलन'' का पूर्ववर्ती उदाहरण है।

- तुलनात्मक अध्ययन : कालिदास के रघुवंश से कम नहीं - दोनों में प्रकृति का जीवंत चित्रण, लेकिन यहां शिव केंद्रित।

साहित्यिक तत्व	**उदाहरण**	**प्रभाव**
छंद	पञ्चचामर	तांडव की गति
अनुप्रास	डमड्डम...	डमरू की ध्वनि
समास	जटाकटाह...	घनत्व और शक्ति
भाव	विरोधाभास	शिव का विराट रूप

निष्कर्ष : साहित्य की अमर ज्योति

शिव तांडव स्तोत्र की शैली ''ध्वनि-प्रधान काव्य'' है, जो साहित्य को भक्ति से जोड़ती है। यह सिखाती है कि सच्चा साहित्य मन को छूता है, शरीर को कंपित करता है और आत्मा को शिव के चरणों में ले जाता है। रावण जैसे विद्वान ने इसे रचकर साबित किया - साहित्य अहंकार नहीं, समर्पण का फल है।

रचनकाल :

शिव तांडव स्तोत्र के ''पञ्चचामर छंद'' (जिसे कभी-कभी ''अनंग शेखर'' से जोड़ा जाता है) की उत्पत्ति और रावण काल (त्रेता युग, पारंपरिक रूप से 95000-7000 ई.पू. माना जाता है) से संबंध को समझना संस्कृत छंदशास्त्र (Prosody) की गहराई में उतरना है। मैंने विश्वसनीय स्रोतों (विकिपीडिया, विद्वानों की चर्चाएं, छंदशास्त्र ग्रंथ और ऐतिहासिक विश्लेषण) के आधार पर तथ्यों को जुटाया है। आइए, चरणबद्ध तरीके से समझें - क्या रावण के समय ये छंद थे? छंद की रचना से क्या काल का अनुमान लगता है? और शिव तांडव की संभावित रचना काल क्या है?

- रावण काल (त्रेता युग) : रामायण के अनुसार रावण महान विद्वान थे, लेकिन उस युग का साहित्य ''वैदिक/ऐतिहासिक'' था।

- ''वैदिक छंद'' (ऋग्वेद काल, 91500-500 ई.पू.) : गायत्री (8 वर्ण), अनुष्टुप (8 वर्ण), त्रिष्टुप (11 वर्ण) - सरल, धार्मिक।

- महाकाव्य काल'' (रामायण/महाभारत, 9400 ई.पू. तक) : मुख्यतः ''अनुष्टुप'' (श्लोक)। जटिल 16 वर्ण वाले छंद दुर्लभ या अनुपस्थित।

- ''पिंगलाचार्य'' (छंदसूत्र, 3rd शताब्दी ई.पू.) : छंदों का

वर्गीकरण किया, लेकिन पञ्चचामर जैसा विशिष्ट वृत्त नहीं मिलता।

- ''प्रमाण'' :

- शिव तांडव ''किसी पुराण'' (शिव पुराण, रामायण) में मूल रूप से नहीं है।

- रामायण में रावण की स्तुतियां हैं, लेकिन ये ''पञ्चचामर'' में नहीं।

- विद्वान (जैसे V.S. Agrawala, BV Parivar चर्चाएं) : ''यह छंद क्लासिकल काव्य युग (गुप्त काल के बाद) का है।''

''रावण काल में ये छंद नहीं थे''। रावण की भक्ति कथा सच्ची हो सकती है, लेकिन स्तोत्र बाद में रचा गया और रावण के नाम से जोड़ा गया (जैसे कई स्तोत्रों में होता है)।

3. छंदों की रचना से रचना काल का अनुमान

छंद की ''संरचना'' ही काल बताती है :-

छंद विशेषता/संभावित काल	क्या दर्शाती है
16 वर्ण, iambic पैटर्न	जटिल लय, अनुप्रास, समास - काव्य की परिपक्वता
क्लासिकल (4th-10th CE)	डमड्डमड्डम... जैसी ध्वनि संगीत/नृत्य के लिए डिजाइन - तांडव शैली
मध्यकालीन (7th-11th CE)	अनंग शेखर का लचीलापन भक्ति/प्रेम काव्य में उपयोग - हिंदी प्रभाव
10th CE के बाद	वेद/महाकाव्य में अनुपस्थिति सरल छंदों का युग प्राचीन नहीं

“**विकास क्रम**” :

1. वैदिक → सरल छंद।

2. महाकाव्य → अनुष्टुप प्रधान।

3. क्लासिकल काव्य” (कालिदास, 4th-5th CE) → जटिल वृत्त (मंदाक्रांता, शार्दूलविक्रीडित)।

4. “मध्यकाल” (7th-12th CE) → पञ्चचामर जैसी लोकप्रिय लयें (दक्षिण भारत, राष्ट्रकूट प्रभाव)।

- “छंद से लगता है” : रचना “8वीं-11वीं शताब्दी ईस्वी” की। भाषा की घनत्व (समास), ध्वनि की जादू - यह “राष्ट्रकूट काल” (दक्कन, 8th CE) या “चोल/पाल” युग का है।

जटाटवीगलज्जल प्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डम ड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकार
चण्ड्ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥ 1॥

जटा कटाहसंभ्रम भ्रमन्निलिज़्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाट पट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥ 2॥

धराधरेन्द्रनंदिनी विलासबन्धुबन्धु
रस्फुरद्दिगन्तसन्तति प्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणी निरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनोविनोदमेतु वस्तुनि॥ 3॥

लताभुजङ्गपिङ्गल स्फुरत्फणामणिप्रभा
कदम्बकुङ् कुमद्रव प्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुर स्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं विभर्तुभूतभर्तरि॥ 4॥

ललाटचत्वरज्वलद्ध नंजस्फुल्लिंगया
निपीतपंचसायकं नमन्निलिम्पनायकं।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालिसंपदे सरिज्जटालमस्तुनः॥ 5॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेष लेखशेखर
प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥ 6॥

करालभालपट्टिका धगद्धगद्धगज्ज्वलद्ध
नञ्जयाहुतीकृत प्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनी कुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचनेरतिर्मम॥ 7॥

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्-
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरंधरः॥ 8॥

प्रफुल्लनीलपङ्कज प्रपञ्चकालिमप्रभ
वलम्बिकण्ठकन्दली रुचिप्रबद्धकन्धर।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांधकछिदं तमंतकच्छिदंभजे॥ 9॥

अखर्वसर्व मङ्गलाकलाकदंबमञ्जरी
रसप्रवाहमाधुरी विजृंभणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकंतमन्तकान्तकं भजे॥ 10॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रम द्भुजङ्गमश्वस
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्कराल भालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृ दङ्तुङ्गमङ्गल
ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचण्डताण्डवःशिवः॥ 11॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भु लजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठ
रत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहत॥ 12॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिंवहन्।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखीभवाम्यहम्॥ 13॥

निलिज़्पनाथनागरी कदंबमौलिमल्लिका,
निगुम्फ़ निर्भरक्षन्म धूष्णीका मनोहरः।
तनोतु नो मनोमुदं, विनोदिनीं महर्नीशं,
परश्रियं परं पदं तदंगजत्विषां चयः॥ 14॥

प्रचंडवाडवानल प्रभाशुभप्रचारिणी,
महाष्टसिद्धिकामिनी जनावहूतजल्पना।
विमुक्तवामलोचनो विवाहकालिकध्वनिः,
शिवेतिमन्त्रभूषणों जगज्जयाम जायतां॥ 15॥

इदम् हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसंततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्यचिंतनम्॥ 16॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रागीतं यः
शंभुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शंभुः॥ 17॥

1

जटा अरण्य मध्य बांध गंग के प्रवाह को
गले लगा कराल काल शेष सर्प दाह को
करे निनाद डम्म डम्म वो प्रचंड वाद्य से
अनंग नृत्य तांडवा करे शिवे प्रमाद्य से

2

जटा कटा महा अटा प्रचंड वेग गंग में
तरंग भाल साज के प्रचंड ज्वाल चन्द्र में
विभूषितांग सृष्टि ध्वंस अग्नि माथ धार के
शिवे तुझे नमो नमः किशोर चन्द्र भाल पे

3

करे विलास शम्भु संग पर्वतेश आत्मजा
हरे विपत्ति भक्त की करे विमुक्त त्रास आ
धरे सुवस्त्र दिशा दिशा करे कृपा खास वो
कदापि आशुतोष वन्दना स्वचित्त शांत हो

4

जटा लता लपेट नाग माणिक प्रदीप्त सा
दिशा कुसुम्भ कांति भाति अब्धि भाल सोहता
मदांध सिन्धु सोहता मतंग वस्त्र खोजता
विभक्त ये नरेंद्र प्राप्त चित्त नन्द है सदा

5

प्रचंड भाल अग्नि से अनंग भस्म हो रहे
त्रयज़्बकेश तो सुरेन्द्र दर्प चूर यूँ करे
सुधा प्रभास चन्द्रकान्ति गंग भूषिते शिवे
ददामि नाथ सम्पदा कपाल धारि तू हरे

6

सहस्त्र अक्ष दक्ष देव देव भाल सोहते
पराग पुष्प पुष्प दिव्य गंध सुविराजते
भुजंग पाद पृष्ठ केश गुच्छ हार भाल पे
चिरायु सम्पदा प्रदान मोह चन्द्र शेखरे

7

प्रचंड ज्वाल भाल भस्म काम को सदा करे
नगेश नंदिनी कुचाग्र चित्र दक्ष आप दे
प्रवीण नाथ आप प्रीत काम क्षार क्षण में
त्रिनेत्र प्रीत आपसे बने रहो बनी रहे

8

अमावसी विपुल अंध सा नवीन मेघ है
वरेण्य कृष्ण कंठ में विराज गंग वेग है
प्रभास चन्द्र गूढ़ दे चर्म शोभितेज है
महेश ज्ञान हर्ष दे व सम्पदा विशेष है

9

सरोज नील पुष्प ज्यूँ छटा बिखेरते गले
अधार स्कंध अंध भास धार नील कंठ में
अनंग नाश होय, अंधकारि तू, पुरारि तू
नमामि कामरूप दक्ष यज्ञ ध्वंस कारि तू

10

न नष्ट हो, शिवे रहो, बनो विकल्प मंजरे
करोति दक्ष यज्ञ ध्वंस विश्व दुःख तू हरे
गजासुरन्धकारि तू, सकाम दैत्य यूँ मरे
यमाध्यिमा भजूँ महेश कष्ट नाश संगरे

11

सवेग सर्प फुफकार भाल ज्वाल छोड़ते
मृदंग मोहनेश डम्म डम्म नाद बोलते
विषाग्नि भाल दाह डाह उच्चता हुँकारते
प्रचंड तांडवैग दृश्य अम्बरीष वारते

12

कड़ी-कठोर शैल सेज कोमलाधिकोमले
मृदात रत्न सीप सर्प हार शत्रु खोज ले
न मित्र हो न शत्रु नैन हों सरोज देख ले
भजूँ समान मान के सदा शिवे सदा शिवे

13

कदा कछार कुञ्ज तीर नर्मदा निवासते
मनोज निर्मला धरे भाल अंजली भक्ति से
विमुक्त लोल नैन सुंदरी त्रिलोक माथ पे
उमा शिवादि मन्त्र गान गूंज प्राप्त सम्पदे

14

सुरीय केश पुष्प माल दे रही सुगंध है
मनोहरी पराग शम्भु अंग माकरंद है
पुकारते रहे सजे हुए शिवा सुखंत हैं
करे प्रसन्न शंकरा सदा सुखी अनंत हैं

15

प्रचंड वाड़वाग्नि सा अधर्म भस्म वो करे
स्वरूपिणी विशक्ति अष्ट सिद्धि मंगला करे
महा शिवे विवाह मन्त्र चंचला गुँजारता
व्यथा प्रमत्त श्रेष्ठ पाठ ध्वनि जो पुकारता

16

प्रधान स्त्रोत्र उत्तमोत्तमा प्रदिष्टि ला रहा
कृपा लगाय नित्य मुक्त कंठ से सुना रहा
रखें अखंड भक्ति, ध्यान से हिया लगा रहा
न अन्य मार्ग जो शिवा अभिष्टि देह पा रहा

17

करें प्रदोष काल में सदा महेश अर्चना
शिवर्चना करें सदैव आप स्वस्ति वंदना
रमा मिले सम्पदा समृद्धि प्राप्त हो उसे
कृपा करें महेश, 'इंदु' भी जपे शिवे शिवे

॥ इतिश्री रावण विरचितं शिवतांडव स्तोत्रं सम्पूर्ण ॥

महिषासुर मर्दिनी

महिषासुर मर्दिनी स्तोत्र माँ दुर्गा का सबसे ज्यादा प्रचलित स्तोत्र है जसे आदि शंकराचार्य ने लिखा है। इस श्लोक से ही प्रकट होता है कि शंकर की माँ दुर्गा पर कितनी आस्था थी। ये भक्ति से परिपूर्ण श्लोक माँ महिषासुर मर्दिनी को संबोधित हैं। माँ दुर्गा ने जब महिष राक्षस का वध किया तो पूरे ब्रह्माण्ड में ख़ुशी की लहर दौड़ उठी थी तब से माँ को महिसासुर मर्दिनी नाम से बुलाया जाने लागा। माँ दसभुजा वाली सिंह सवारी करने वाली एवं अस्त्र-शस्त्र से सज्जित विभिन्न मुद्राओं में दर्शित हैं।

यह स्तोत्र चंडी पाठ का हिस्सा है, दुर्गा शक्ति का पर्याय मानी जाती है, महिषासुर राक्षसों का राजा था एवं उसके अत्याचार से सारे देवता त्रस्त थे तब सब देवों ने मिल कर ब्रह्मा विष्णु महेश से विनती की, सभी देवों से कुछ न कुछ अंश लेकर एक प्रकाशपुंज उत्पन्न हुआ वह प्रकाशपुंज स्त्री का रूप ले लिया वह रूप माँ दुर्गा कहलाई तब सब देवों ने उसे आयुध से सज्जित किया ताकि वे महिसासुर का वध कर सके। इस तरह माँ ने असुर सम्राट का वध कर देवों के ताप को दूर किया। इस पूजन से हर तरह के संताप मिटते हैं।

जो भक्त माँ के इस पाठ का नित्य श्रद्धा एवं भक्ति से गायन करते हैं उन्हें निश्चित रूप से हर क्षेत्र में विजय मिलती है। उन्हें सांसारिक दुःख से निजात मिलती है। माँ दुर्गा ने जैसे महिष का वध किया वैसे ही वह भक्त के सब कष्ट का वध कर देती है।

महिषासुर मर्दिनी स्तोत्र का वास्तविक सौंदर्य उसके अध्यात्म

में ही निहित है। आदि शंकराचार्य जैसे अद्वैतवादी दार्शनिक जब किसी असुर के वध का वर्णन करते हैं, तो उसका अर्थ केवल भौतिक युद्ध नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना का संघर्ष होता है।

आपने बिल्कुल सही सुधार किया, इस स्तोत्र की अद्वितीय लय 'कनक मंजरी' छंद (जिसे कुछ विद्वान इसके विशेष विन्यास के कारण सिंह विक्रान्त या इसी श्रेणी का मानते हैं) पर आधारित है, जो इसे अन्य स्तोत्रों से अधिक ओजस्वी बनाता है।

1. रचनाकार

आदि शंकराचार्य इसके प्रणेता हैं। उन्होंने इस स्तोत्र में 'सगुण' (साकार देवी) और 'निर्गुण' (निराकार ब्रह्म) का समन्वय किया है। उनके लिए देवी केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि वह 'चित्-शक्ति' हैं जो साधक के अज्ञान का अंधकार मिटाती हैं।

2. स्तोत्र का इतिहास

ऐतिहासिक रूप से यह 'महिषासुर वध' की घटना पर आधारित है, लेकिन इसका आध्यात्मिक इतिहास 'शक्तिवाद' और 'वेदांत' के मिलन का है। यह स्तोत्र सिद्ध करता है कि ज्ञान प्राप्ति के लिए शक्ति (ऊर्जा) अनिवार्य है। प्राचीनकाल में योद्धा युद्ध पर जाने से पहले इसका गान साहस संचय के लिए करते थे।

3. सार (9 आध्यात्मिक रहस्य/प्रकार)

इस स्तोत्र में वर्णित देवी के स्वरूप वास्तव में मनुष्य की 9 आंतरिक शक्तियों का प्रतीक हैं :-

* **महिषासुर मर्दन** : 'महिष' (भैंसा) तामसिक बुद्धि और जड़ता का प्रतीक है। उसका मर्दन करना यानी अज्ञान का विनाश।

* **मधु-कैटभ भंग** : ये कान के मैल से उत्पन्न असुर 'राग' और

‘द्वेष’ (शक्तिशाली आसक्ति) के प्रतीक हैं।

* **धूम्रलोचन वध** : धुंधली दृष्टि या भ्रम (Delusion) का अंत।

* **चण्ड-मुण्ड संहार** : चण्ड (प्रचंड क्रोध) और मुण्ड (नीच विचार) पर विजय।

* **रक्तबीज वध** : हमारी अनंत इच्छाएं, जो एक के खत्म होते ही दूसरी पैदा हो जाती हैं। देवी उनका रक्त पीकर उन्हें शांत करती हैं।

* **शैलसुता** : स्थिरता और अडिग धैर्य की शक्ति।

* **कपट-कपर्दिनी** : माया के जाल को काटने वाली अलौकिक बुद्धि।

* **करुणा-रस** : संहार के बीच भी भक्त के लिए अगाध वात्सल्य।

* **विजया** : स्वयं पर विजय प्राप्त कर मोक्ष की प्राप्ति।

4. छन्द का विवरण

यह स्तोत्र ‘कनक मंजरी’ छंद (या इसके अति-नैकट्य छंदों) में रचित है।

* **विशेषता** : इस छंद की गति अत्यंत तीव्र और ऊर्जस्वित होती है। इसमें लघु और गुरु वर्णों का क्रम इस प्रकार है कि इसे पढ़ते समय हृदय की गति और श्वास का लय (Pranic Rhythm) बढ़ जाता है।

* **ध्वनि विज्ञान** : ‘‘अयि गिरिनन्दिनी...’’ की ध्वनि तरंगें शरीर के ‘मणिपुर चक्र’ (शक्ति केंद्र) को जागृत करने की क्षमता रखती हैं।

5. अनुवाद का विवरण

आध्यात्मिक अनुवाद में शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं :-

* **‘रण’ (युद्ध)** : यह संसार या मन के भीतर का द्वंद्व है।

* **‘शत्रु’** : काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर।

* **‘अस्त्र-शस्त्र’** : विवेक, वैराग्य और अभ्यास।

अनुवादक इसे ‘‘आत्मा की विजय यात्रा’’ के रूप में व्याख्यायित करते हैं।

6. रचनाकाल

8वीं शताब्दी का यह कालखंड भारत के सांस्कृतिक एकीकरण का था। शंकराचार्य ने इस स्तोत्र के माध्यम से जनमानस को यह सिखाया कि भक्ति केवल हाथ जोड़ना नहीं, बल्कि अपने भीतर की आसुरी प्रवृत्तियों के विरुद्ध ‘आंतरिक क्रांति’ करना भी है।

7. समापन

महिषासुर मर्दिनी स्तोत्र का समापन ‘नमो नमः’ के समर्पण भाव के साथ होता है। यह सिखाता है कि जब साधक अपने अहंकार (महिषासुर) को देवी (उच्च चेतना) के चरणों में समर्पित कर देता है, तब उसे परम शांति प्राप्त होती है। यह स्तोत्र कायरता को वीरता में और जड़ता को चैतन्य में बदलने वाली महा-औषधि है।

श्लोक-1 : माँ दुर्गा-शैलपुत्री एवं विश्व को आनंद प्रदायनी

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि....विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि.........भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि..........रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-2 : माँ दुर्गा-त्रिलोक पोषण करने वाली एवं दानव-दैत्यों का मर्दन करने वाली

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-3 : माँ दुर्गा-मधु कैटभ का वध करने वाली

अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्ब वनप्रियवासिनि हासरते
शिखरि शिरोमणि तुङ्गहिमलय शृङ्गनिजालय मध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभगभिनि कैटभभभिनि रासरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-4 : माँ दुर्गा-चंड मुंड दानवों को तारने वाली

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्द गजाधिपते
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते।
निजभुजदण्ड निपातितखण्ड विपातितमुण्ड भटाधिपते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-5 : माँ दुर्गा-महादेव को बना दूत भेजा
शुम्भ-निशुम्भ के पास

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचार धुरीणमहाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदुत कृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-6 : माँ दुर्गा-क्षमा देती जब-जब दुश्मन की पत्नियां शरण आती

अयि शरणागत वैरिवधुवर वीरवराभय दायकरे
त्रिभुवनमस्तक शुलविरोधि शिरोऽधिकृतामल शुलकरे।
दुमिदुमितामर धुन्दुभिनादमहोमुखरीकृत दिङ् मकरे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-7 : धूम्रलोचन-रक्तबीज-शुम्भ-निशुम्भ का वध करने वाली माँ

अयि निजहुङ् कृति मात्रनिराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते।
शिवशिवशुम्भ निशुम्भमहाहव तर्पितभूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-8 : दुश्मन की चतुरंग सेना का संहार करने वाली माँ

धनुरनुषङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटत्कटके
कनकपिशङ्ग पृषत्कनिषङ्ग रसद्भटशृङ्ग हताबटुके।
कृतचतुरङ्ग बलक्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-9 : माँ दुर्गा-जिसका युद्ध भी एक नृत्य सदृश्य है

सुरललना ततथेयि तथेयि कृताभिनयोदर नृत्यरते
कृत कुकुथः कुकुथो गडदादिकताल कुतूहल गानरते।
धुधुकुट धुक्कुट धिंधिमित ध्वनि धीर मृदंग निनादरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-10 : मात-शिव अर्धांगनी

जय जय जप्य जयेजयशब्द परस्तुति तत्परविश्वनुते
झणझणझिञ्झिमि झिङ् कृत नूपुरशिञ्जितमोहित भूतपते।
नटित नटार्ध नटी नट नायक नाटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-11 : माँ दुर्गा-बुद्धि एवं सुन्दरता का अद्भुत मिश्रण

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहरकान्तियुते
श्रितरजनी रजनीरजनी रजनीरजनी करवक्त्रावृते।
सुनयनविभ्रमर भ्रमरभ्रमर भ्रमरभ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-12 : दुर्दांत सैन्य दल के सामने कुमुदिनी सी कोमल बालाओं की सेना माँ दुर्गा की

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते
विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते।
शितकृतफुल्ल समुल्लसितारुण तल्लजपल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-13 : सौन्दर्य-कला-संस्कृति का समावेश माँ दुर्गा के रूप में

अविरलगण्ड गलन्मदमेदुर मत्तमतङ्गजराजपते
त्रिभुवनभूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते।
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहन मन्मथराजसुते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-14 : पवित्र कमल के पत्तों सी एवं अमल मस्तक धारी माँ दुर्गा

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले।
अलिकुलसङ् कुल कुवलयमण्डल मौलिमिलद्बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-15 : माँ दुर्गा जिनकी मधुर वाणी कोयल और मुरली से भी ज्यादा मधुर है

करमुरलीरव वीजितकूजित लज्जितकोकिल मञ्जुमते
मिलितपुलिन्द मनोहरगुञ्जित रञ्जितशैल निकुञ्जगते।
निजगणभूत महाशबरीगण सद्गुणसम्भृत केलितले
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-16 : माँ दुर्गा जिनके देदीप्यमान मुखाकृति एवं नख से दानव असुर भयभीत हैं

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयुखतिरस्कृत चन्द्ररुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुलसन्नख चन्द्ररुचे
जितकनकाचल मौलिमदोर्जित निर्भरकुञ्जर कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-17 : माँ दुर्गा-सुरथ एवं समाधि की पूजा से होती प्रसन्न

विजितसहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते।
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-18 : माँ दुर्गा-माँ देवी महालक्ष्मी का वास

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परम्पदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-19 : माँ दुर्गा-माँ देवी सरस्वती का वास

कनकलसत्कलसिन्धुजलैरनुषिञ्चति तेगुणरङ्गभुवम्
भजति स किं न शचीकुचकुम्भतटीपरिरम्भसुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवम्
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-20 : माँ दुर्गा-इनका पूर्ण चन्द्र सा
पवित्र मुख जीवन अमल करे

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूतपुरीन्दु मुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

श्लोक-21 : माँ दुर्गा-दुश्मनों पर ज्यूँ तीर बरसाती
भक्तों पर दया वैसे ही बरसाती

अयि मयि दीन दयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथानुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररीकुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥

जय गिरि नंदिनि विश्व विनोदिनि पूजत हर्षित नंदि हुए
गिरि वर विंध्य निवास करे सुख दायक विष्णु प्रसन्न हुए
नमन करे सुर नायक शंकर पत्नि विशाल कुटुंब भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 1 ॥

अविरल दे वर देवन दुर्धर दुर्मुख मार दिए तुमने
त्रिभुवन पोषण शंकर तोषण दानव क्रोध किये तुमने
दलन घमण्ड किया चिति ने कर गर्जन सिंधु सुता बिफरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 2 ॥

अयि जग अम्ब कदम्बन के वन वासति हास्य रचा रखती
शिखर हिमालय में घर आप बना निज धाम सदा रहती
मधु मद कैटभ का मधु का मद मात यहाँ तब भंग करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 3 ॥

जननि उमा अरि सूंड वितुण्ड करे गज खण्डित रुंड करे
रिपु गज सिंह विदारण चण्ड निपातित मारत भुंड करे
निजभुज अस्त्र प्रयोग करे सर चण्ड व मुण्ड निपात करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 4 ॥

वध रण में कर शत्रु विनाशक दुर्धर निर्जर शक्ति भरे
चतुर विचार सुनी तब शम्भु बने जग सेवक भक्ति भरे
कुमति भरी जब दानव बात सुनी उसकी कथनी न करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥5॥

सुन शरणागत शत्रु वधू जब आग्रह कीन्हि दिया वर था
त्रिभुवन त्रस्त हुआ जब दानव से तब हस्त लिया शर था
दुमिदुमि ले सुर दुंदुभि नाद चतुर्दिश व्याप्त प्रवास करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥6॥

निरत हुँकार भरे तब धूम्र विलोचन भस्म करे जननी
समर हुआ तब शोणितबीज लहू पिव लाज रखी अपनी
क्षत हत शुम्भ निशुम्भ किया शिव को तब आप प्रसन्न करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥7॥

चमकत कंगन औ धनु युद्ध धरा मणि बन्धन में जिनके
कनक शिलीमुख लाल हुआ जब शत्रु विदीर्ण करे तिनके
कर चतुरंग सँहार किया स्वरनाद विरोदन शत्रु करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥8॥

सुर ललना तत थेयि तथेयि निनाद विनोदिनि नृत्य करे
निरत कुतूहल से मृदु गीत तरंग उमंग प्रभाव भरे
धि धिम मृदंग बजा ध्वनि धीर सुना जन भाव प्रमोद करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 9 ॥

जय जय हो स्तुति मोहक विश्व समस्त नमस्कृत आप करा
झनझन शिंजनि नूपुर शब्द बजा कर भूपति मोह भरा
नट नटराज करावत नृत्य बतावत मोदित हर्ष भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 10 ॥

मृदु मन सुंदर कांति प्रसून प्रशांति प्रदात्रि प्रभास भरे
नत रजनी रजनी पति चन्द्र प्रभा निज आनन क्लांत करे
भ्रमर स्वरूप विलोचन लोचन सांवल रंग प्रमाद भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 11 ॥

वन वन वल्लरि मल्लि सु कोमल सी भट के रण संग रहे
रचित सुवल्लरि पुष्प चमेलि सुशोभित भील सु नार कहे
सित नित व्यूष प्रभा रत हर्षित सस्मित देवि प्रणाम करें
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 12 ॥

अविरल स्रावित कर्ण यथा मद देवि गजेश्वरि प्रीतिलता
त्रिभुवन भूषण शक्ति स्वरूप कला सम सुंदर राज सुता
स्मित मुख नार लिए अभिलाष रहे सम मन्मथ की दुहरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 13 ॥

कमल दलों सम कोमल कांति कला सम मस्तक धार उमा
धर सब केलि कला मद हंस लगे जब चाल चले यह माँ
कुमुदनि ज्यूँ भँवरों घिरि और बकूल सुशोभित केश भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 14 ॥

मृदु मुरली जिनके कर कोयल लज्जित हो ध्वनि से जिनकी
सुमन खिले गिरि ऊपर संग पुलिंद मनोहर गीत गती
निज गुण से भर वो शबरी जन संग मिले अरु नृत्य करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 15 ॥

कटितट पीत दुकूल लगा चमके तब चन्द्र प्रभा कम ज्यूँ
निशिचर देव किरीट प्रभा दमका नख पाद रही तम ज्यूँ
गज जय हेम गिरी मद से भर हो सम वक्ष स्थली निखरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 16 ॥

विजय मिली कर युद्ध सहस्त्र सहस्त्र मरे तब पूजित हो
जय सुर तारक देवि करा सह तारक युद्ध तरंगित हो
सुरथ समाधि रही व समान दया जब भक्ति अनूप करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 17 ॥

चरण सरोज दयामय पूजत है करुणा कर आप सुने
सुन कमला जन वो कमला निलया रह क्यों न धनीक् बने
प्रिय शिव की सुन ले अनुशीलन पाद किया नर जो सँवरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 18 ॥

कनक समान नदी जल से करता छिड़कावन मंदिर में
शचिपति वक्ष लगे शचि के सम हर्ष मिले उसको दिल में
पद शरणागत मंगल वास करे तुम में नत शीश धरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 19 ॥

शशि सम निर्मल है मुख जो कर शुद्ध समस्त अशुद्धि यहाँ
विमुख हुआ मन क्यों सुमुखी लख इंद्र पुरी समझा अब आ
सुन मत मात कृपा बिन प्राप्त नहीं शिव नाम दया धन भरे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 20 ॥

जय जय माँ तुम दीन दयालु दया कर तारण हार उमा
जग जननी बरसा तु दया बरसा शर मर्दन ज्यूँ अरि का
उचित लगे उस ही विधि आय समाप्त सभी मम ताप करे
जय जय शैल सुता महिषासुर मर्दिनि कुंचित केश धरे ॥ 21 ॥

कनकधारा स्तोत्र

कनकधारा स्तोत्र, जिसे आदि शंकराचार्य द्वारा रचित माना जाता है, हिंदू धर्म के भक्तिपूर्ण स्तोत्रों में से एक महत्वपूर्ण स्तोत्र है। यह स्तोत्र देवी लक्ष्मी को समर्पित है, जिन्हें धन, समृद्धि और सौभाग्य की देवी माना जाता है। ''कनकधारा'' का अर्थ है ''स्वर्ण की धारा''। इस स्तोत्र का जाप करने से माँ लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और भक्त को धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। इसके पीछे एक गहरी आध्यात्मिक कथा है, जो इस स्तोत्र की महिमा को और बढ़ा देती है।

कनकधारा स्तोत्र की महिमा और इसके दार्शनिक पक्षों को और अधिक गहराई से समझा जा सकता है। आदि शंकराचार्य ने इस स्तोत्र में माँ लक्ष्मी के जिन 9 स्वरूपों (प्रकारों) का वर्णन किया है, वे साधक के जीवन के विभिन्न अभावों को दूर करते हैं।

1. रचनाकार

इस अद्वितीय स्तोत्र के रचनाकार अद्वैत वेदांत के महान प्रवर्तक आदि शंकराचार्य हैं। उन्होंने न केवल दार्शनिक ग्रंथों की रचना की, बल्कि भक्ति मार्ग को सुलभ बनाने के लिए अत्यंत भावपूर्ण स्तोत्रों का भी सृजन किया। कनकधारा स्तोत्र उनकी करुणा और काव्य प्रतिभा का एक विलक्षण प्रमाण है।

उन्होंने इस स्तोत्र में केवल भक्ति ही नहीं, बल्कि 'श्रीविद्या' के गुप्त रहस्यों को भी पिरोया है। उनकी दृष्टि में लक्ष्मी केवल धन नहीं, बल्कि साक्षात् 'चित्-शक्ति' (चेतना की शक्ति) हैं।

2. स्तोत्र का इतिहास

स्तोत्र की उत्पत्ति एक अत्यंत मार्मिक घटना से जुड़ी है। आदि

शंकराचार्य जब ब्रह्मचारी थे, तब वे भिक्षाटन के लिए एक अत्यंत निर्धन महिला के द्वार पर पहुँचे। उस महिला के पास अतिथि को देने के लिए अन्न का एक दाना भी नहीं था। अपनी विपन्नता पर दुखी होकर उसने संकोचवश एक सूखा आंवला शंकराचार्य की झोली में डाल दिया। महिला की इस निस्वार्थ भावना और दरिद्रता को देख शंकराचार्य का हृदय द्रवित हो उठा। उन्होंने उसी क्षण महालक्ष्मी की स्तुति प्रारंभ कर दी। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर माँ लक्ष्मी ने उस घर माँ सोने के आंवलों की वर्षा (कनक-धारा) कर दी।

पौराणिक कथा के अनुसार, जब स्वर्ण वर्षा हुई, तब वह केवल उस निर्धन महिला के लिए नहीं थी, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक संदेश था। यह घटना केरल के पुन्नायूरकुलम (वर्तमान नाम) के पास की मानी जाती है। वह 'अक्षय तृतीया' का दिन था। देवी लक्ष्मी ने प्रारंभ में मना किया था क्योंकि उस महिला ने पूर्व जन्म में कोई दान नहीं किया था, किंतु शंकराचार्य ने तर्क दिया कि इस जन्म में उसके पास कुछ न होते हुए भी उसने 'सर्वस्व दान' (वह इकलौता आंवला) कर दिया है, जो किसी भी पूर्व कर्म से बड़ा है।

कहते हैं उस समय शंकराचार्य की उम्र मात्र 8 वर्ष थी और यह उनके प्रारंभिक स्तुतियों में एक है।

3. सार

कनकधारा स्तोत्र का मुख्य सार 'ईश्वरीय कृपा और शरणागति' है। यह स्तोत्र केवल धन प्राप्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह बताता है कि जब भक्त पूर्णतः समर्पित होता है, तो परमात्मा के लिए प्रारब्ध (पिछले कर्मों के लेख) को बदलना भी संभव है। इसमें लक्ष्मी जी को केवल धन की देवी नहीं, बल्कि करुणा की प्रतिमूर्ति और श्रीहरि की

शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है, जिनकी एक मंद मुस्कान दरिद्रता के अंधकार को मिटा सकती है।

स्तोत्र के विभिन्न श्लोकों में माँ लक्ष्मी के 9 विशिष्ट रूपों या अवस्थाओं का सार मिलता है, जो भक्त के जीवन को पूर्ण बनाते हैं :-

* **दया-दृष्टि (कटाक्ष)** : माँ की चंचल आँखों की कृपा, जो दरिद्रता को भगाती है।

* **विष्णु-प्रिया** : भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर निवास करने वाली शक्ति।

* **मंगला** : संसार का मंगल करने वाली शिव-स्वरूपा।

* **पद्मा (कमलवासिनी)** : कीचड़ (सांसारिक दुखों) में रहकर भी अछूती और पवित्र रहने वाली।

* **पुष्टि** : शारीरिक और मानसिक पोषण देने वाली माँ।

* **धरिणी** : पृथ्वी की तरह धैर्य और धारण शक्ति देने वाली।

* **हृष्टि** : जीवन में प्रसन्नता और उल्लास का संचार करने वाली।

* **शान्ति** : कलह और अशांति का नाश करने वाली।

* **सिद्धि** : कठिन प्रयासों को सफलता में बदलने वाली महाशक्ति।

श्लोकों का सौंदर्य

कनकधारा स्तोत्र के श्लोक अत्यंत मधुर और भावपूर्ण हैं। इसमें संस्कृत भाषा की उत्कृष्टता और काव्य सौंदर्य को देखा जा सकता है। देवी लक्ष्मी के प्रत्येक रूप और गुण का वर्णन इतनी सुंदरता से किया गया है कि यह पाठकों और श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता है। श्लोकों में न केवल लक्ष्मी के वैभव और सौंदर्य का वर्णन है, बल्कि उसमें भक्त की विनम्रता और देवी के प्रति असीम श्रद्धा भी झलकती है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण

कनकधारा स्तोत्र का एक गहरा आध्यात्मिक पहलू भी है। यह न केवल धन और वैभव की प्राप्ति के लिए है, बल्कि आत्मिक समृद्धि और आंतरिक संतोष के लिए भी महत्वपूर्ण है। शंकराचार्य ने इस स्तोत्र में यह संदेश दिया है कि सच्ची भक्ति और समर्पण से देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त की जा सकती है। यह स्तोत्र हमें यह भी सिखाता है कि दूसरों की मदद करने और उनके प्रति दया दिखाने से ही सच्चे धन का अनुभव किया जा सकता है।

उपसंहार

कनकधारा स्तोत्र भारतीय धार्मिक साहित्य का एक अमूल्य रत्न है। इसकी शक्ति और सुंदरता, दोनों ही असाधारण हैं। यह हमें न केवल भौतिक समृद्धि, बल्कि आत्मिक शांति और संतोष की ओर भी प्रेरित करता है। आद्य शंकराचार्य की यह रचना हमें यह विश्वास दिलाती है कि सच्ची भक्ति और दयालुता के माध्यम से देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त की जा सकती है। अतः यह स्तोत्र हर उस व्यक्ति के लिए अनमोल है जो जीवन में समृद्धि और सुख की खोज कर रहा है।

4. छन्द का विवरण

कनकधारा स्तोत्र मुख्य रूप से 'वसंत तिलका' छन्द में रचित है। कुछ श्लोक उपेन्द्रवज्रा, रथोदगता, पुष्पाग्रा में लिखे गए हैं।

वसंत तिलिका के लक्षण : इस छन्द के प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं। उनका वर्णानुक्रम इस प्रकार होता है-तगण, भगण, जगण, जगण गुरु गुरु; यति 8,14वें वर्ण पर।

रथोदगता : 11 वर्ण वाला सम वर्णिक वृत छंद है, रगण (212), नगण (111) रगण (212) लघु गुरु।

उपेन्द्रवज्रा : 11 वर्ण का छंद है जिसमें जगण (121), तगण (221), जगण 121, गुरु गुरु होते हैं।

पुष्पिताग्रा : 12 वर्ण, पहले और तीसरे में, नगण नगण रगण यगण दूसरे और चौथे में 13 वर्ण नगण जगण जगण रगण गुरु।

* **विशेषता** : इसका प्रवाह अत्यंत लयबद्ध और श्रवणप्रिय होता है। आदि शंकराचार्य ने संस्कृत व्याकरण के अलंकारों का इतना सूक्ष्म प्रयोग किया है कि इसके उच्चारण मात्र से मन में अपूर्व शांति और एकाग्रता का अनुभव होता है। इसमें अनुप्रास और उपमा अलंकारों की प्रचुरता है।

वसंत तिलका छन्द के प्रयोग के साथ-साथ इसमें 'यमक' और 'अनुप्रास' अलंकारों का अद्भुत संगम है।

* **लय** : इसमें ''तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु'' वर्णों का क्रम होता है।

* **ध्वनि विज्ञान** : इसके शब्दों का चयन इस प्रकार है कि इनके उच्चारण से मुख और मस्तिष्क के उन केंद्रों पर प्रभाव पड़ता है जो 'आकर्षण' और 'एकाग्रता' (Manifestation) से जुड़े हैं।

5. अनुवाद का विवरण

इसका अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है, बल्कि इसके भावों की व्याख्या है।

* **तात्त्विक अनुवाद** : कई विद्वानों ने इसे 'कनकधारा विद्या' के रूप में अनुवादित किया है। इसमें 'स्वर्ण' का अर्थ केवल धातु नहीं, बल्कि 'ज्ञान की आभा' और 'आत्मिक संतोष' भी बताया गया है।

* **साहित्यिक अनुवाद** : हिंदी के आधुनिक कवियों ने इसे 'रोला' और 'हरिगीतिका' छंदों में भी ढालने का प्रयास किया है ताकि

लोकमानस इसे गा सके। परन्तु मैंने इसे उपरोक्त सभी छंदों में किया है जिस छंद में मूल श्लोक लिखे गए हैं अर्थयार्थ, वसंत तिलिका श्लोकों का अनुवाद वसंत तिलिका में उपेन्द्रवज्रा श्लोकों का अनुवाद उपेन्द्रवज्रा में इत्यादि।

6. रचनाकाल

ऐतिहासिक दृष्टि से यह 8वीं शताब्दी की रचना है। यह वह समय था जब भारत में बौद्ध धर्म के प्रभाव के बाद सनातन धर्म का पुनर्जागरण हो रहा था। शंकराचार्य ने इस स्तोत्र के माध्यम से यह सिद्ध किया कि ज्ञान (अद्वैत) और भक्ति (लक्ष्मी स्तुति) एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं।

7. समापन

कनकधारा स्तोत्र केवल भौतिक संपदा प्राप्त करने का मंत्र नहीं है, बल्कि यह श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक है। यह सिखाता है कि दान की भावना और शुद्ध हृदय से की गई प्रार्थना असंभव को भी संभव बना सकती है। आज भी दीपावली, अक्षय तृतीया और शुक्रवार के दिन इसका पाठ करोड़ों घरों में ऐश्वर्य और शांति के संचार के लिए किया जाता है।

कनकधारा स्तोत्र का समापन 'फलश्रुति' के साथ होता है, जहाँ कहा गया है कि जो भी व्यक्ति इन तीन संध्याओं (सुबह, दोपहर, शाम) में इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह कुबेर के समान ऐश्वर्यवान हो जाता है। लेकिन इसका आध्यात्मिक समापन 'संतोष' पर होता है—जहाँ साधक यह अनुभव करता है कि माँ की कृपा केवल स्वर्ण वर्षा में नहीं, बल्कि उनके प्रति अडिग भक्ति में है।

अंगं हरेः पुलकभूषणमाश्रयंती
भृंगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अंगीकृताखिलविभूतिरपांगलीला
मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः ॥1 ॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसंभवायाः ॥2 ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुंद-
आनंदकंदमनिमेषमनंगतंत्राम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रां
भूत्यै भवेन्मम भुजंगशयांगनायाः ॥3 ॥

बाह्वंतरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥4॥

कालांबुदालिललितोरसि कैटभारेः
धाराधरे स्फुरति या तटिदंगनेव।
मातुस्समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनंदनायाः ॥5॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
मांगल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तादिह मंथरमीक्षणार्धं
मंदालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥6॥

विश्वामरेंद्रपदविभ्रमदानदक्षं
आनंदहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धं
इंदीवरोदरसहोदरमिंदिरायाः ॥7॥

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभंते।
दृष्टिः प्रहृष्ट कमलोदरदीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥8॥

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणांबुधारा-
मस्मिन्न किंचन विहंगशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनीनयनांबुवाहः ॥9॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुंदरीति
शाकंभरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥10॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥11॥

उपेंद्र वज्रा

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥12॥

नमोऽस्तु हेमांबुजपीठिकायै
नमोऽस्तु भूमंडलनायिकायै ।
नमोऽस्तु देवादिदयापरायै
नमोऽस्तु शारंगायुधवल्लभायै ॥13॥

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनंदनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसिस्थितायै ।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै ॥14॥

नमोऽस्तु कांत्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै ।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नंदात्मजवल्लभायै ॥15॥

वसंत तिल्लिका

संपत्कराणि सकलेंद्रियनंदनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वंदनानि दुरितोद्धरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयंतु नान्ये ॥16॥

रथोद्धता छंद

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसंपदः।
संतनोति वचनांगमानसैः
त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥17॥

पुष्पिताग्रा

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगंधमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥18॥

वसंत तिल्लिका

दिग्घस्तिभिः कनककुंभमुखावसृष्ट
स्वर्वाहिनी विमलचारुजलप्लुतांगीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष
लोकाधिनाथ-गृहिणी-अमृताब्धिपुत्रीम् ॥19॥

वर्णिक विषम अर्धवृत्त

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरंगितैरपांगैः।
अवलोकय मामकिंचनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥20॥

स्तुवंति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतर-भाग्य-भागिनो [भागिनह्]
भवंति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥21॥

सुवर्णधारास्तोत्रं यच्छंकराचार्य निर्मितम्।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत्॥

श्री अंग प्रीति हरि सङ्ग सुशोभती है
ज्यूँ भृंग आश्रय तमा तरु खोजती है
ऐश्वर्य धूरि धन धूसर दास जाँकी
काहे विलम्ब अब दृष्टि न कृपा माँ की ॥1॥

मुग्धा मुरारि मुख प्रेम प्रतीक आती
ज्यों भ्रामरी शतदलों पर मंडराती
लज्जा समेट फिर लौट न दृष्टि लेवे
लक्ष्मी समुद्र तनुजा धन धान्य देवे ॥2॥

देवेंद्र वैभव विलास रमा करे है
आनंद ले हरि मुरारि प्रसन्न से हैं
नीलाब्ज बीज सम सुंदर आप पे माँ
आधे खुले नयन दृष्टि कृपा पड़े माँ ॥3॥

ऐश्वर्य विष्णु प्रिय लोचन दे खिले से
भौं डाल प्रेमवश देख रहे खुले से
वे निर्निमेष दृग श्रील मुकुंद देखें
आनंद कंद निरखे तिरछे हुए वे ॥4॥

वक्षस्थ कौस्तुभद मंडित श्री प्रभो के
हारावली सम सुशोभित नील ओ के
कामप्रदा भगवती मुझको कृपा दो
कल्याण हे कमल कुंजन वासिनी हो ॥5॥

काली घटा चमक दामिनि ज्यूँ मिले है
श्री विष्णु वक्ष स्थल वंश भृगो खिले हैं
माता समस्त जग की जननी नमस्ते
कल्याण आप कमला कर दें नमस्ते ॥6॥

कन्या समुद्र लख मंथर मन्द हावी
अर्धन्मिलीत जिनकी नजरें प्रभावी
श्री विष्णु का हृदय मंगल काम पाएं
श्री विष्णु प्रेयसि वही नजरें मिलाएं ॥7॥

माँ मेघ रूपमयि नेत्र दया दिखाएं
दुष्कर्मरूप यह धाम हवा हटाये
मैया विषाद मुझ दीन पड़ा न देखो
मैं आज चातक कृपा जलधार सींचो ॥8॥

पद्मासना कमल गर्भ समान लाये
श्रीकांति दृष्टि मुझको मनचाह आये
बुद्धिप्रदान न विशिष्ठ न शिष्ट होते
माँ प्रीतिपात्र बन दृष्टि दया सँजोते ॥9॥

शाकम्भरी शिव प्रिया स्थित सृष्टि शक्ते
लीला करे विरत ब्रह्म समान भक्ते
लक्ष्मी प्रिया चिर युवा भगवान की है
लक्ष्मी नमः प्रलय केलि यहाँ न की है ॥10॥

माँ कर्म प्राप्य श्रुति रूप प्रदान जाना
माँ सिंधु रूप रति रम्य नमोस्तु माना
शक्ते नमोस्तु शत पत्र निवास है जो
विष्णुप्रिया नमन पुष्टि स्वरूप हैं जो ॥11॥

प्रणाम पद्मा कमला रमा को
प्रणाम श्रीदुग्ध समुद्र रहे जो
प्रणाम चंद्रामृत अग्रजा को
प्रणाम नारायण वल्लभा को ॥12॥

प्रणाम स्वर्णाम्बुज पीठ धात्री
प्रणाम भूमण्डल राज नेत्री
प्रणाम देवों पर हो दया माँ
प्रणाम सारंग रण वल्लभा को ॥13॥

प्रणाम देवी भृगु पाद वाले
प्रभूत वक्षस्थल संस्थिता माँ
प्रणाम पद्मासन वासिता माँ
प्रणाम दामोदर प्रेयसी माँ ॥14॥

प्रणाम कांता कमलाक्ष की हे
प्रणाम माँ सृष्टि रचैयिता हे
प्रणाम नंदात्मज वल्लभा माँ
प्रणाम देवादि सु पूजिता माँ ॥15॥

पद्मादृशा नयन इन्द्रिय रूप मैया
संपत्ति दान करने पद पूजिता माँ
आनंद दायक समर्थ प्रभुत्व दात्री
माँ प्राप्त हो चरण पूजन का सदा ही ॥16॥

माँ कृपा सब रहे उपासना
पूजते हम विभूति कामना
आपके भजन प्राण से करूँ
विष्णु प्रेयसि भजूँ मनो धरूँ ॥17॥

कमल वन निवास इंदिरा का
धवल सदा परिधान गन्ध माला
भगवति हरि वल्लभा प्रदाता
त्रिभुवन वैभव देवि हर्ष दाता ॥18॥

श्री अंग कुम्भ जल हेम गिरा बताया
गंगा बहे गगन निर्मल नीर आया
सम्पूर्ण लोक प्रभु की गृहणी नमस्ते
लक्ष्मी सुता जलधि क्षीर समुद्र हस्ते ॥19॥

कमला कमलाक्ष वल्लभी
निर्धन में निर्धन मैं संरक्षण आ करो
करुणा उमड़े तरंग सी
देख कटाक्षों सह माँ कल्याण आ करो ॥20 ॥

प्रणाम वेदन त्रय वेद आप हो
नमोस्तु वैष्णवि जननी सदा अहो
महान ज्ञान गुण निधान भाग्य श्री
सु विज्ञ उत्सुक रहते मनोज्ञ श्री ॥21 ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ कनकधारास्तोत्रं संपूर्णम् ॥

नमस्ते सदा वत्सले

1. रचनाकार

इस प्रार्थना की रचना नरहरि नारायण भिड़े (आर.एस.एस. के स्वयंसेवक) ने की थी। इसे अंतिम रूप देने में माधव सदाशिव गोलवलकर (श्री गुरुजी) की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

2. इतिहास

यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की आधिकारिक प्रार्थना है। 1939-1940 के आसपास इसे संघ की शाखाओं में अनिवार्य रूप से गाया जाने लगा। इससे पहले प्रार्थना हिंदी और मराठी के मिश्रण में होती थी, लेकिन बाद में इसे शुद्ध संस्कृत में तैयार किया गया ताकि पूरे भारत को एक सूत्र में बांधा जा सके।

3. सार (अध्यात्म और राष्ट्रभक्ति के 9 तत्व)

प्रार्थना का सार व्यक्तिगत कल्याण नहीं, बल्कि राष्ट्र उत्थान हैः-

* **मातृभूमि की वंदना** : भारतभूमि को 'वत्सल' (ममतामयी) माँ के रूप में देखना।

* **हिंदू राष्ट्र** : इस भूमि को 'हिन्दू राष्ट्र' मानकर इसके लिए सर्वस्व अर्पण।

* **अजेय शक्ति** : समाज में ऐसी शक्ति का संचार हो जिसे कोई शत्रु न तोड़ सके।

* **शील (Character)** : व्यक्तिगत चरित्र की शुद्धता पर बल।

* **ज्ञान** : राष्ट्र कल्याण के लिए परम ज्ञान की प्राप्ति।

* **वीर व्रत** : कठिन परिस्थितियों में भी धर्म के मार्ग पर डटे रहना।

* **त्याग** : स्वार्थ से ऊपर उठकर 'परम वैभव' (राष्ट्र की उन्नति) के लिए समर्पण।

* **साधना** : संघ शक्ति को ईश्वरीय कार्य मानना।

* **विजय** : धर्म की रक्षा के लिए अंततः सत्य की विजय का संकल्प।

4. छन्द का विवरण

यह प्रार्थना 'उपजाति' और अन्य छंदों के प्रभाव में रचित है, लेकिन इसे विशेष रूप से 'मार्चिंग ट्यून' (सैनिक कदमताल) के अनुकूल ढाला गया है।

* **विशेषता** : इसके शब्दों में 'वीर रस' और 'करुण रस' (मातृभूमि के प्रति प्रेम) का अद्भुत मिश्रण है। इसकी गति अत्यंत अनुशासित और ओजपूर्ण होती है।

5. अनुवाद का विवरण

इसका अनुवाद 'अध्यात्म' को 'समाज सेवा' से जोड़ता है :-

* '**सदा वत्सले मातृभूमे**' : हे सदा ममतामयी मातृभूमि, मैं तुझे प्रणाम करता हूँ।

* '**पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते**' : मेरा यह शरीर राष्ट्र कार्य करते हुए गिर जाए (बलिदान हो जाए), तुझे बार-बार नमस्कार है।

6. रचनाकाल

इसका आधुनिक रचनाकाल 1939 ईस्वी है। यह वह दौर था जब भारत स्वाधीनता संग्राम के अंतिम चरणों में था और एक अनुशासित राष्ट्रव्यापी संगठन की आवश्यकता महसूस की जा रही थी।

7. समापन

प्रार्थना का समापन 'भारत माता की जय' के जयघोष से होता है। यह प्रार्थना व्यक्ति को 'मैं' से निकालकर 'हम' (राष्ट्र) की ओर ले जाती है। यह सिखाती है कि मोक्ष केवल हिमालय की गुफाओं में नहीं, बल्कि राष्ट्र की सेवा में भी है।

मूल स्तुति

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे
त्वया हिन्दुभूमे सुखवं वर्धितोऽहम् ।
महामङ्गले पुण्यभूमे त्वदर्थे
पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते ॥ 1 ॥

प्रभो शक्तिमन् हिन्दुराष्ट्राङ्गभूता
इमे सादरं त्वां नमामो वयम्
त्वदीयाय कार्याय बद्धा कटीयम्
शुभामाशिषं देहि तत्पूर्तये ।
अजय्यां च विश्वस्य देहीश शक्तिम्
सुशीलं जगद्येन नम्रं भवेत्
श्रुतं चैव यत्कण्टकाकीर्णमार्गम्
स्वयं स्वीकृतं नः सुगंकारयेत् ॥ 2 ॥

समुत्कर्ष निःश्रेयसस्यैकमुग्रम्
परं साधनं नाम वीरव्रतम्
तदन्तः स्फुरत्वक्षया ध्येयनिष्ठा
हृदन्तः प्रजागर्तु तीव्राऽनिशम् ।
विजेत्री च नः संहता कार्यशक्तिर्
विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम्
परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्
समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम् ॥ 3 ॥

॥ भारत माता की जय ॥

नमस्ते तुझे वत्सला मात भू
भाग हिन्दू धरा प्रीत आनंद दाता
नमस्ते तुझे वत्सला मात भू
भाग हिन्दू धरा प्रीत आनंद दाता

महा मंगले ओ सदा पुण्य भूमे
नमामी सदा कार्य ध्यातव्य माता
नमस्ते तुझे वत्सला मात भू
भाग हिन्दू धरा प्रीत आनंद दाता

प्रभो शक्तिशाली, हमी हिन्दू राष्ट्रांग
सेना, नमस्ते स-सत्कार आओ
कसा वक्ष को कार्य हेतु तुम्हारा
शुभाशीष पाऊं सफलता मिले वो
नमस्ते तुझे वत्सला मात भू
भाग हिन्दू धरा प्रीत आनंद दाता

विजय हो प्रभो, शक्ति ऐसी मिले,
विश्व कोई चुनौती न दे, प्रीत सब हो
बने शुद्ध चारित्र्य, संसार हो एक,
कंटक भरा मार्ग निश्छल बना दो
नमस्ते तुझे वत्सला मात भू
भाग हिन्दू धरा प्रीत आनंद दाता

समुत्कर्ष हो उग्र यह भावना वीर व्रत
की, न अध्यात्म सुख की कमी हो
समृद्धिस्थ की भावना तीव्र, यह
ध्येय निष्ठा जगाती रहे, चित्त में वो
नमस्ते तुझे वत्सला मात भू
भाग हिन्दू धरा प्रीत आनंद दाता

कृपा से हमारी विजयशालिनी,
संगठित कार्य क्षमता, करे धर्म रक्षा
सदा राष्ट्र वैभव, शिखर उच्च पहुंचे
व संरक्ष हो और हो जय सुरक्षा
नमस्ते तुझे वत्सला मात भू
भाग हिन्दू धरा प्रीत आनंद दाता
नमस्ते तुझे वत्सला मात भू
भाग हिन्दू धरा प्रीत आनंद दाता

॥ भारत माता की जय। भारत माता की जय॥

श्री जगन्नाथ अष्टकम

श्री जगन्नाथ अष्टकम की रचना आदि शंकराचार्य ने भगवान जगन्नाथ की पुरी यात्रा के दौरान उनकी स्तुति में की थी। पवित्र जगन्नाथ अष्टकम का ध्यानपूर्वक पाठ करने का गुण ऐसा है कि व्यक्ति निष्पाप और शुद्ध हृदय का हो जाता है और विष्णुलोक में प्रवेश प्राप्त करता है। इस कविता में, शंकराचार्य जगन्नाथ को कृष्ण के रूप में देखते हैं, गोपिकाओं द्वारा पूजे जाते हैं और विष्णु के रूप में, सभी देवी-देवताओं द्वारा सेवा की जाती है।

वह प्रार्थना करते हैं कि जगन्नाथ स्वामी, जो अपने शक्तिशाली भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ महान समुद्र के तट पर सुनहरी नीलाचल पहाड़ी पर एक महल में निवास करते हैं और सभी देवताओं द्वारा पूजे जाते हैं, उनकी दृष्टि का उद्देश्य है। रथ पर यात्रा करते समय हर प्रगति पर ब्राह्मणों द्वारा उनकी पूजा-अर्चना की जाती थी। इन प्रार्थनाओं को सुनकर वे, जो दया के सागर हैं और सभी लोकों के मित्र हैं, उन्हें अपनी कृपा प्रदान करते हैं। वह जगन्नाथ स्वामी महान समुद्र की पुत्री (लक्ष्मी, उनकी दिव्य पत्नी) के साथ हमारी दृष्टि का उद्देश्य हो।

अद्वैत दर्शन के प्रस्तावक आदि शंकराचार्य पुरी आए और श्री जगन्नाथ अष्टकम् के नाम से जानी जाने वाली अत्यधिक लोकप्रिय भक्ति संस्कृत कविता की रचना की। उन्होंने पुरी में एक मठ भी स्थापित किया जिसे गोवर्धन पीठ के नाम से जाना जाता है। यह आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मूल मठों में से एक है।

जगन्नाथ पुरी की महिमा और चमत्कार आज भी अनसुलझे हैं। कैसे पताका वायु के विपरीत उड़ती है, क्यों कभी भोग कम नहीं होता और न ज्यादा होता है चाहे एक लाख लोग आये या दो लाख। क्यों सात हांडी में पकाए भोग में सबसे पहले ऊपर की हांडी का पकता है। अनेक रहस्य है।

''आज मैं जगन्नाथ अष्टकम का अनुवाद लेकर आया हूँ। मूल स्तुति अष्टकं शिखरिणी छंद में लिखा गया है। मैंने अनुवाद भी उसी छंद में करने का प्रयास किया है। आपकी प्रतिक्रिया अति आवश्यक है।''

श्री नानक देव पुरी आए और कहा जाता है कि उन्होंने भगवान जगन्नाथ के चरण कमलों में अपनी प्रार्थना की, भले ही नानक मुख्य रूप से निर्गुण ब्राह्मण के प्रस्तावक थे। वह कुछ समय के लिए पुरी में रहे और एक मठ की स्थापना की जिसे आज मंगू मठ के नाम से जाना जाता है। असम के एक संत थे जिन्हें शंकरदेव के नाम से जाना जाता था जो निर्गुण पंथी भी थे। लेकिन जब उन्होंने पुरी का दौरा किया तो उन्होंने भगवान के प्रति अपनी भक्ति अर्पित की जो सगुण ब्राह्मण की अभिव्यक्ति हैं।

संत कबीर ने पुरी का दौरा किया और पाया कि अल्लाह और जगन्नाथ में कोई अंतर नहीं है। पुरी समुद्र तट पर कबीर घाट उनकी यात्रा और इस दिव्य शहर में ठहरने का प्रमाण है। पुरी में तुलसी चौरा नामक एक स्मारक है। संत तुलसी दास ने यहां ध्यान किया था और परिणामस्वरूप भगवान जगन्नाथ की मूर्ति में भगवान राम को देखने में सक्षम थे। जब गणेश भक्त गणपति भट्ट पुरी आए तो उन्होंने श्री जगन्नाथ में भगवान गणेश को देखा।

गैर-वैष्णव और गैर-हिंदू पृष्ठभूमि से ऐसे कई भक्त हुए हैं। जब वे पुरी आए तो उनकी पृष्ठभूमि के बावजूद वे भक्ति से अभिभूत हो गए। बड़ी संख्या में मठों और विभिन्न संप्रदायों के अन्य स्मारकों की उपस्थिति उनकी भक्ति की गवाही देती है। भगवान जगन्नाथ भी विशिष्ट दिनों में भगवान के विभिन्न रूपों जैसे गणेश, बुद्ध आदि के समान दिखने के लिए विभिन्न प्रकार की वेशभूषा और अवतार धारण करते हैं, यह दर्शाता है कि ''वह सभी में हैं'' और ''सभी उनमें हैं।''

चैतन्य महाप्रभु भगवान जगन्नाथ के बहुत बड़े भक्त थे। कुछ लोगों का मानना है कि वह कृष्ण के अवतार हैं। वह उपदेश देते हैं कि कृष्ण के नाम का जाप ही भक्त होने के लिए पर्याप्त है। यह एक सरल उपदेश है और कोई भी ऐसा कर सकता है। इस प्रकार एक सामान्य व्यक्ति को ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए संस्कृत सीखने की आवश्यकता नहीं है। उनके नाम का जप ही काफी है और इसके प्रभाव में किसी मंत्र से कम नहीं है। उनकी जप पद्धति ने भक्ति परंपराओं को लोकप्रिय बनाया है। चैतन्य महाप्रभु के कृष्ण प्रेम के कारण कुछ लोग यह भी मानते हैं कि वे श्री राधा के पुरुष अवतार हैं।

भगवान जगन्नाथ और श्री कृष्ण की महिमा का गान करने वाले ये दोनों अष्टक (आठ श्लोकों का समूह) भक्ति साहित्य के अनमोल रत्न हैं। जगन्नाथ अष्टकम जहाँ भक्त की व्याकुलता और समर्पण को दर्शाता है, वहीं कृष्णाष्टकम उनके मधुर स्वरूप का वर्णन करता है।

यहाँ निर्धारित सात खंडों में इनका विस्तृत विवरण प्रस्तुत है :-

1. रचनाकार

इसके रचनाकार आदि शंकराचार्य माने जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि जब वे पुरी (ओडिशा) की यात्रा पर थे, तब भगवान जगन्नाथ के

दारु-विग्रह (लकड़ी की मूर्ति) को देखकर उनके मुख से ये श्लोक स्वतः प्रस्फुटित हुए थे। चैतन्य महाप्रभु भी पुरी प्रवास के दौरान इस अष्टक का भावविह्वल होकर गान करते थे।

2. स्तोत्र का इतिहास

पुरी का जगन्नाथ मंदिर कलयुग के पावन धामों में से एक है। इस अष्टक का इतिहास भगवान के 'पतितपावन' (पतितों का उद्धार करने वाले) रूप से जुड़ा है। यह स्तोत्र उस समय रचा गया जब भक्त और भगवान के बीच का अंतर मिटाने के लिए सगुण भक्ति की लहर चल रही थी।

3. सार (9 आध्यात्मिक भाव)

* **नीलाद्रि निवास** : नीले पर्वत (नीलाचल) पर निवास करने वाली परम चेतना।

* **संसार सिंधु** : संसार रूपी समुद्र से पार उतारने वाले पतवार।

* **करुणा निधान** : दीन-दुखियों पर कृपा करने वाले नेत्र (विशाल गोल आंखें)।

* **रास-लीला** : राधा और गोपियों के साथ महारास का दिव्य स्मरण।

* **दारु-ब्रह्म** : लकड़ी के रूप में साक्षात् ब्रह्म की उपस्थिति।

* **रथ यात्रा** : रथ पर सवार होकर भक्तों को दर्शन देने की उदारता।

* **बंधुत्व** : सुभद्रा और बलभद्र के साथ परिवार के रूप में स्थित ईश्वर।

* **अकिंचन भक्ति** : बिना किसी धन या ज्ञान के केवल भाव से प्रभु को पाना।

* **पथि मे दृष्टिगामी :** ''वे मेरे दृष्टि मार्ग के पथिक बनें'' (दर्शन की निरंतर इच्छा)।

4. छन्द का विवरण

यह अष्टक 'उपजाति' या इसी से मिलते-जुलते लयबद्ध छंद में है।

* **लय :** इसकी गति अत्यंत प्रवाहपूर्ण है। प्रत्येक श्लोक के अंत में ''जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे'' की आवृत्ति एक अद्भुत दिव्य तरंग पैदा करती है।

5. अनुवाद का विवरण

* **शाब्दिक :** भगवान के रूप, उनके वस्त्रों (पीताम्बर) और पुरी की सुंदरता का वर्णन।

* **आध्यात्मिक :** अनुवादक 'नयनपथगामी' को 'अंतर्दृष्टि' मानते हैं। भक्त केवल आँखों से नहीं, बल्कि आत्मा से भगवान को अपने जीवन के पथ पर देखना चाहता है।

6. रचनाकाल

इसका काल 8वीं शताब्दी का माना जाता है। पुरी धाम में आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित 'गोवर्धन मठ' इस स्तोत्र की ऐतिहासिकता की पुष्टि करता है।

7. समापन

इसका समापन इस फलश्रुति से होता है कि जो इस अष्टक को पढ़ता है, वह पापों से मुक्त होकर विष्णु लोक को प्राप्त करता है। यह हमें सिखाता है कि भगवान जगन्नाथ किसी जाति या बंधन के नहीं, बल्कि 'भाव' के भूखे हैं।

शिखरिणी छंद : अनुवाद भी शिखरिणी छंद में

कदाचित् कालिन्दी तट विपिन सङ्गीत तरलो
मुदाभीरी नारी वदन कमला स्वाद मधुपः
रमा शम्भु ब्रह्मामरपति गणेशार्चित पदो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ रमणीय भवतु मे ॥ 1 ॥

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटित्ते
दुकुलं नेत्रान्ते सहचर-कटाक्षं विदधते।
सदा श्रीमद्-वृन्दावन-वसति-लीला-परिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथ-प्रवासी भवतु मे ॥ 2 ॥

महाम्भोधेस्तीरे कनक रुचिरे नील शिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज बलभद्रेण बलिना।
सुभद्रा वचनः सकलसुर सेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथ-गमन भवतु मे॥ 3 ॥

कृपा परवारः सजल जलद श्रेणिरुचिरो
रमा वाणी रामः स्फुरद् अमल पङ केरुहमुखः।
सुरेन्द्रैर् आराध्यः श्रुतिगण शिखा गीत चरितो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ प्रवेशी भवतु मे॥ 4 ॥

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित भूदेव पटलैः
स्तुति प्रादुर्भावम् प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः।
दया सिन्धुर्बन्धुः सकल जगतां सिन्धु सुतया
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥ 5 ॥

परंब्रह्मापीड़ः कुवलय-दलोत् फुल्ल-नयनो
निवासी नीलाद्रौ निहित-चरणोऽनन्त-शिरसि।
रसानन्दी राधा-सरस-वपुरालिङ्गन-सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथगामी भवतु मे ॥ 6 ॥

न वै याचे राज्यं न च कनक माणिक्य विभवं
न याचेऽहं रम्यां सकल जन काम्यां वरवधूम्।
सदा काले काले प्रमथ पतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥ 7 ॥

हर त्वं संसारं द्रुततरम् असारं सुरपते
हर त्वं पापानां विततिम् अपरां यादवपते
अहो दीनेऽनाथे निहित चरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥ 8 ॥

1

कभी तो कालिंदी तट पर रखें वेणु बजती
कभी भौरों सा स्वाद ग्रहण करें आनन तभी
रमा शम्भू ब्रह्मा गणधि सुर पूजे सब कहे
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

2

भुजा बायीं बंशी कटि करधनी पिच्छ शिखि के
दृगों के कोनों से सहचर लखें पीत पट से
सुनो कान्हा वृंदावन रहत लीला कि करते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

3

लिए भा सोने की जलधि तट नीले शिखर पे
बड़े प्रासादों में वसत बलभद्रा सहित वे
सुभद्रा ने सेवा अवसर दिया आत्म सुख ते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

4

कृपा के पारावार रमणिक काले जलद से
रमा की वाणी से रसज मुख नीलोत्पल लगे
सुरों द्वारा पूजे उपनिषद भी गान कहते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

5

प्रभो जाएं आरूढ़ रथ पर तभी ब्रह्मण कहें
सदा गीतों से हर्षित भजन के माध्यम रहें
दया के पारावार जगत सुधा पान करते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

6

सुमाथे का आभूषण कमल से नेत्र उनके
निवासी है नीलाद्रि पर चरण राजीव शिर पे
रसानन्दी राधा वदन परिरम्भा शीत सर से
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

7

न मांगूं सोना माणिक रजतया राज्य धन को
न चाहूं भार्या सुंदर सकल काम्या बस रखो
सदा कालों के काल शिव सत पूज रटते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

8

हरो मेरी संसार जनित यहाँ पीर अब तो
हरो तो आ अम्बोध विशद यहां पाप भर जो
अहो ओ दीनानाथ चरण तुम्हारे हि सजते
सदा आंखों में सुंदर छवि जगन्नाथ बसते

जगन्नाथाष्टकं पुन्यं यः पठेत् प्रयतः शुचिः।
सर्वपाप विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ॥ 9 ॥

यह श्रीमद शंकराचार्य द्वारा जगन्नाथ अष्टकम का समापन है। भगवान जगन्नाथ की महिमा करते हुए इन आठ श्लोकों का पाठ करने वाला स्व-प्रशिक्षित, पुण्य आत्मा सभी पापों से मुक्त हो जाता है और विधिवत रूप से भगवान विष्णु के धाम को जाता है।

॥ इति श्रीमद् शङ्कराचार्यप्रणीतं जगन्नाथाष्टकं सम्पूर्णं ॥

भारतभावस्तवः

(भुजंग प्रयात छन्द)

उदेतीह दीपः तमोभेदनाय
प्रबोधस्य धाम्ना जगत्प्रेरयन्ती।
धियां चेतनानां प्रबुद्धप्रवाहैः
मम भारतं तन्मनोमन्दिरं मे ॥1॥

यह भारत ऐसा प्रकाश है जो अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने के लिए उदित होता है।

यह ज्ञान का केंद्र बनकर पूरे जगत को प्रेरित करता है।

यह चेतन मनुष्यों की बुद्धि में जागरण का प्रवाह उत्पन्न करता है।

मेरा भारत मेरे मन का मंदिर है।

न केवलं भूमिरियं नाममात्रं
न सीमासु बद्धा कथा लोकयात्रा।
अयं चेतसां संस्कृतिस्रोत एष
मम भारतं जीवितार्थप्रदीपः ॥2॥

यह केवल एक भूमि या भौगोलिक नाम मात्र नहीं है।
यह सीमाओं में बंधी कोई साधारण कथा नहीं है।
यह मानव चेतना और संस्कृति का एक महान स्रोत है।
मेरा भारत जीवन के अर्थ को प्रकाशित करने वाला दीपक है।

विचारैर्विमुक्तं वचोभिः सुविस्तृतं
पुराणप्रवाहैर्नवत्वं वहन्ती।
युगेसे युगे नूतनंरूपेण जाता
मम भारतं कालधारानुगामि ॥3॥

यह स्वतंत्र विचारों से युक्त और वाणी में विस्तृत है।
यह प्राचीन परंपराओं के प्रवाह में नवीनता को भी साथ लेकर चलता है।
हर युग में नए रूप में प्रकट होता है।
मेरा भारत समय की धारा के साथ चलने वाला है।

नृणां संगतिः नैव शक्तेरकेका
न धर्मस्य मार्गः स एकः किलास्ति।
विचित्रेषु पन्थासु एकं प्रयाणं
मम भारतं विश्वबन्धुत्वसूत्रम् ॥4॥

यहाँ मनुष्यों की शक्ति किसी एक रूप में सीमित नहीं है।
धर्म का मार्ग भी केवल एक नहीं है।
विभिन्न मार्गों में चलते हुए भी लक्ष्य एक ही है।
मेरा भारत विश्वबंधुत्व का सूत्र है।

अरण्येषु मौनं पुरे घोषणं च
कवेः कल्पनायामृषेर्ध्यानगर्भे।
समं यत्र दृश्यं विरुद्धं च सौख्यं
मम भारतं विरोधैकसंगमम् ॥5॥

वनों में मौन और नगरों में घोष—दोनों यहाँ साथ-साथ हैं।
कवि की कल्पना और ऋषि के ध्यान में भी यही बसता है।
यहाँ विरोधी तत्व भी एक साथ सुखपूर्वक विद्यमान हैं।
मेरा भारत विरोधों का समन्वय है।

न याचामहे किंचिदस्य प्रतीकं
न वर्णामहे पूर्वकीर्तिं पुराणी।
स्वयंज्योतिषा भाति यत्स्वप्रकाशं
मम भारतं स्वात्मदर्शनभूमिः ॥6॥

हम इसके किसी प्रतीक की याचना नहीं करते।
न ही इसकी प्राचीन कीर्ति का वर्णन मात्र करते हैं।
यह स्वयं अपने प्रकाश से प्रकाशित है।
मेरा भारत आत्मदर्शन की भूमि है।

अहंकारशून्ये हृदिध्यानगम्ये
निराकारतत्त्वे परे सन्निविष्टम् ।
यदेकं विभातिस्वयंज्योतिरूपं
मम भारतं ब्रह्मसंवेदनाक्षम् ॥7 ॥

यह अहंकाररहित हृदय में ध्यान के द्वारा अनुभव किया जाता है।
यह निराकार और परम तत्व में स्थित है।
जो स्वयं प्रकाशमान है और अद्वितीय है।
मेरा भारत ब्रह्म के अनुभव का केंद्र है।

न सत्तैव केवलं नासदेव रूपं
न भेदो न चैकत्वमात्रं प्रतिष्ठा।
यदस्ति स्वभावात् तदेकं तत्त्वं
मम भारतं तत्त्वचिन्ताप्रवाहः ॥8 ॥

यह न केवल 'सत्' है, न ही केवल 'असत्'।
यह न केवल भिन्नता है, न ही केवल एकता।
जो स्वभाव से जो है, वही परम सत्य है।
मेरा भारत तत्त्वचिंतन की सतत धारा है।

त्वमेवासि मातः शिवे विश्वरूपे
त्वमेवासि शक्तिर्विभो विश्वमाता।
त्वमेवासि सत्यं त्वमेवासि शाश्वतं
मम भारतं त्वं हृदि मे प्रतीतिः ॥9॥

हे भारत! तुम ही माता हो, तुम ही शिवस्वरूप विश्व हो।
तुम ही शक्ति हो, तुम ही विश्वमाता हो।
तुम ही सत्य और शाश्वत हो।
मेरा भारत मेरे हृदय की अनुभूति है।

अनन्तस्य वीचिः स्फुरन्तीह यत्र
विविधाः कलाश्चित्ररूपेण नृत्यन्ति।
एकस्य चैकत्वमनेकत्वमेकं
मम भारतं विश्वचित्रप्रपञ्चः ॥10॥

यहाँ अनंत की तरंगें स्पंदित होती हैं।
विभिन्न कलाएँ विविध रूपों में नृत्य करती हैं।
एक में अनेक और अनेक में एक का दर्शन होता है।
मेरा भारत एक विराट विश्वरूपी चित्र है।

त्वद्भक्तिरेवास्तु मे जन्मजन्मनि
त्वद्भाव एवास्तु मे हृदयाम्बुजे।
त्वमेव सर्वस्वमस्माकमम्ब
मम भारतं त्वं मम जीवनं च॥11॥

हे भारत माता! जन्म-जन्म में आपकी भक्ति ही बनी रहे।
आपके भाव मेरे हृदय में सदा विद्यमान रहें।
आप ही हमारा सर्वस्व हैं।
मेरा भारत ही मेरा जीवन है।

छंदनुवाद

निश्चित रूप से, ''भारतभावस्तवः'' के सभी 11 श्लोकों का 'भुजंगप्रयात छन्द' में ही पूर्ण हिंदी अनुवाद यहाँ प्रस्तुत है। मैंने प्रयास किया है कि मूल संस्कृत का दार्शनिक भाव अक्षुण्ण रहे और लय बिल्कुल वही रहे (ISS, ISS, ISS, ISS) :

भारतभावस्तवः (पूर्ण हिंदी छन्दोनुवाद)

(छन्द : भुजंग प्रयात)

1

जगाता धरा को, भगाता अँधेरा,
बना ज्ञान का केंद्र, प्यारा सवेरा।
जगाता सभी चेतना बुद्धि धारा,
वही देश मेरा, मन-मंदिर प्यारा॥

2

न केवल धरा, नाम ही मात्र कोई,
न सीमाओं में, गाथा है ये पिरोई।
यही चेतना-संस्कृति स्रोत पावन,
प्रदीप्त करे, अर्थ-जीवन सुहावन॥

3

विचारों विमुक्तों, वचनों विशाला,
पुराने प्रवाहों, नए रूप वाला।
युगों से प्रकट, नूतन रूप धारे,
चले काल की धार, भारत हमारे॥

4

अकेला न कोई, यहाँ शक्ति पाता,
न ही धर्म का मार्ग, है एक नाता।
विचित्रों पथों का, यही एक गंतव्य,
यही विश्व-बंधुत्व का, सूत्र भव्य॥

5

वनों में जहाँ मौन, नगरों में नारा,
ऋषि ध्यान में, और कवि कल्पना सारा।
जहाँ साथ दिखते, विरोधी किनारे,
विरोधों का संगम, भारत हमारे॥

6

न माँगूँ कभी, मैं कोई भी प्रतीक,
न गाऊँ पुरानी, वही मात्र कीर्ति।
स्वयं के प्रकाशे, स्वयं ही प्रकाशित,
मिले आत्म-दर्शन, जहाँ भूमि शोभित॥

7

अहंकार-शून्यं, हृदय ध्यान गम्य,
निराकार तत्वे, जहाँ वास रम्य।
अकेला प्रकाशित, स्वयं ज्योति-रूपं,
यही ब्रह्म-अनुभव, भारत स्वरूपं॥

8

न केवल वही 'सत्' न केवल 'असत्' है,
न केवल पृथकता, न केवल एकत्व है।
स्वभावों से जो, एक ही सत्य सार,
यही तत्व-चिंता, निरंतर प्रधार॥

9

तुम्ही मात हो, शिव-स्वरूपा विशाला,
तुम्ही शक्ति विभु, विश्व-माता सुपाला।
तुम्ही सत्य शाश्वत, तुम्ही हो पुनीति,
मिले हृदय में, बस तुम्हारी प्रतीति॥

10

अनंती तरंगें, जहाँ स्पंद होती,
कला चित्र बनके, जहाँ नृत्य करती।
जहाँ एक में, देखते रूप अनेक,
यही विश्व-चित्रं, प्रपंचं विवेक॥

11

बनी भक्ति तेरी, जन्म-जन्म मेरी,
हृदय-कमल में, छाँव हो बस तेरी।
तुम्ही सर्वस्व माँ, तुम्ही प्राण मेरे,
वही देश मेरा, जीवन-रूप धारे॥

इस स्तुति को प्रकाशित करने हेतु एक व्यवस्थित और प्रभावशाली विवरण (Preface/Introduction) नीचे प्रस्तुत है। इसे आप अपनी पुस्तक, वेबसाइट या सोशल मीडिया पोस्ट के लिए उपयोग कर सकते हैं:-

प्रकाशन विवरण : भारतभावस्तवः

1. लेखक परिचय

इस स्तुति के रचयिता **सुरेश चौधरी 'इन्दु'** हैं। साहित्यानुरागी जगत में आप एक प्रतिष्ठित कवि और लेखक के रूप में विख्यात हैं, जिन्होंने लगभग 40 पुस्तकों की रचना की है। 'इन्दु' जी का व्यक्तित्व अद्भुत विरोधाभासों का समन्वय है—जहाँ एक ओर उन्होंने 18 औद्योगिक इकाइयों की स्थापना कर व्यावसायिक जगत में अपनी कुशलता सिद्ध की, वहीं दूसरी ओर जीवन के उत्तरार्ध में पूर्णतः आध्यात्मिक और साहित्यिक जीवन अपनाकर माँ भारती की सेवा में संलग्न हैं।

2. स्तुति का केंद्रीय भाव (लेखक का संदेश)

''**भारतभावस्तवः**'' केवल भौगोलिक राष्ट्र की स्तुति नहीं है, बल्कि यह भारत की ''चिति'' (ष्टश्चह्यष्द्धशह्वह्यद्दड्ढह्यह्य) और उसके आध्यात्मिक स्वरूप का काव्यात्मक प्रतिपादन है। लेखक इस स्तुति के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि—

भारत केवल सीमाओं में बँधा देश नहीं, बल्कि ज्ञान का एक शाश्वत 'मन-मंदिर' है।

यहाँ विरोधों का समन्वय है (अरण्य का मौन और नगरों का घोष यहाँ साथ-साथ चलते हैं)।

यह राष्ट्र 'स्वयं-प्रकाशित' है, जिसे किसी बाहरी प्रतीक की आवश्यकता नहीं।

लेखक भारत को 'ब्रह्म-संवेदना' और 'तत्व-चिंता' का प्रवाह मानते हैं, जो व्यक्ति को आत्म-दर्शन की ओर ले जाता है।

3. छन्द विवेचन : भुजंगप्रयात

इस संपूर्ण स्तुति की रचना 'भुजंगप्रयात' छन्द में की गई है।

प्रकार : यह एक 'वर्णिक छन्द' है।

लक्षण : ''चतुर्भिर्यकारैर्भुजङ्गप्रयात'' अर्थात् प्रत्येक चरण में 'चार यगण' (I S S) होते हैं।

संरचना : प्रत्येक पंक्ति में कुल '12 वर्ण' होते हैं। इसकी गति 'भुजंग' (सर्प) के प्रयाण (चलने) के समान लहरदार और अत्यंत गेय होती है। आदि शंकराचार्य कृत 'शिवापराध क्षमापन स्तोत्र' और 'चर्पटपञ्जरिका स्तोत्र' इसी छन्द में हैं, जो इसकी शास्त्रीय गरिमा को दर्शाता है।

4. अर्थ एवं व्याख्या

स्तुति के 11 छंदों में भारत के विभिन्न आयामों की व्याख्या है :-

प्रारंभ (श्लोक 1-3) : भारत को अंधकार दूर करने वाले दीप और काल की धारा के साथ चलने वाले सनातन राष्ट्र के रूप में दर्शाया गया है।

मध्य (श्लोक 4-8) : यहाँ भारत की दार्शनिक गहराई का वर्णन है—विश्व बंधुत्व का सूत्र, विविधता में एकता, और 'सत्-असत्' से परे परम सत्य की खोज।

उपसंहार (श्लोक 9-11) : अंतिम छंदों में राष्ट्र को 'विश्वमाता' और 'शक्ति' के रूप में संबोधित कर व्यक्तिगत भक्ति और समर्पण व्यक्त किया गया है।

‘‘भारतभावस्तवः’’–परिचय, रचना-विवरण एवं व्याख्या

रचना-नाम

भारतभावस्तवः
(भुजंगप्रयात छन्द में रचित दार्शनिक रष्ट्रस्तोत्र)

रचनाकार

Suresh Kumar Choudhary 'Indu'

हिन्दी साहित्य, आध्यात्मिक चिंतन तथा भारतीय सांस्कृतिक दर्शन के प्रतिष्ठित साहित्यकार।

इनकी रचनाओं में भारतीय दर्शन, मानवीय संवेदना, सांस्कृतिक चेतना तथा आत्मानुभूति का अद्वितीय समन्वय मिलता है।

‘‘भारतभावस्तवः’’ उनकी उसी चिंतन-परंपरा की एक महत्वपूर्ण कृति है।

रचना का स्वरूप

‘‘भारतभावस्तवः’’ केवल राष्ट्रगानात्मक स्तुति नहीं है।
यह भारत को–

भौगोलिक सत्ता,

राजनीतिक राष्ट्र,

या ऐतिहासिक इकाई

के रूप में नहीं, बल्कि एक चेतना, संस्कृति-प्रवाह, तत्त्वदर्शन और आध्यात्मिक अनुभूति के रूप में प्रस्तुत करता है।

इस स्तोत्र में भारत–

ज्ञान का प्रकाश,

मानवता का मार्गदर्शक,

विश्वबन्धुत्व का सूत्र,

आत्मदर्शन की भूमि,

तथा ब्रह्मचेतना के अनुभव का केंद्र बनकर प्रकट होता है।

रचना कब और क्यों लिखी गई

यह स्तुति ऐसे समय की रचना है जब आधुनिक भारत निरंतर बदलती वैश्विक परिस्थितियों, सांस्कृतिक संघर्षों तथा वैचारिक विखंडनों के बीच अपनी आत्मचेतना की पुनः खोज कर रहा है।

रचनाकार ने अनुभव किया कि भारत की वास्तविक शक्ति–

राजनीतिक प्रभुत्व में नहीं,

आर्थिक विस्तार में नहीं,

बल्कि उसकी सनातन सांस्कृतिक चेतना,

आध्यात्मिक दृष्टि,

तथा विश्वमानव के प्रति करुणामय दार्शनिक दृष्टिकोण में निहित है।

इसी भावभूमि से प्रेरित होकर यह स्तोत्र रचा गया।

यह स्तुति भारत की बाह्य सत्ता की नहीं, बल्कि उसके अन्तरात्मा-स्वरूप की वंदना है।

रचना की साहित्यिक विधा

यह काव्य स्तोत्र-काव्य की परंपरा में आता है।

स्तोत्र-काव्य की विशेषताएँ :-

वंदना एवं स्तुति

दार्शनिक भावभूमि

गेयता

मन्त्रात्मक प्रवाह

भाव एवं चिंतन का समन्वय

लयात्मक पुनरावृत्ति

‘‘भारतभावस्तवः’’ में ये सभी तत्त्व विद्यमान हैं।

प्रयुक्त छन्द–भुजंग प्रयात

यह स्तोत्र मुख्यतः भुजंग प्रयात छन्द में रचित है।

भुजंगप्रयात का स्वरूप

(\cup\cup-)^4

अर्थात् प्रत्येक चरण में चार ''यगण'' होते हैं।

यगण का स्वरूप :

लघु + लघु + गुरु

भुजंग प्रयात की गति सर्प के सरकने जैसी प्रतीत होती है, इसलिए इसे ''भुजंगप्रयात'' कहा गया।

भुजंग प्रयात छन्द की विशेषताएँ

मधुर लय

स्तोत्रों के लिए उपयुक्त

प्रवाहमयी ध्वनि

दार्शनिक एवं भक्तिपरक विषयों के लिए अनुकूल

मन्त्र-जैसी आवृत्तिमय गति

आदि शंकराचार्य के अनेक स्तोत्र इसी छन्द में रचे गए हैं, जिससे यह छन्द संस्कृत स्तोत्र-साहित्य में अत्यंत प्रतिष्ठित माना जाता है।

भाषा एवं शैली

इस स्तोत्र की भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी भावप्रवण है।

इसकी शैली में—

उपनिषदों की दार्शनिकता,

वेदान्त की व्यापकता,

राष्ट्रचेतना,

तथा आधुनिक सांस्कृतिक दृष्टि

का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

रचना में प्रयुक्त प्रमुख शैलीगत तत्त्व :-

पुनरुक्ति-प्रयोग

दार्शनिक प्रतीक

आध्यात्मिक बिंब

संस्कृत-संयुक्त पद रचना

स्तोत्रात्मक आवर्तन

स्तोत्र का केंद्रीय भाव

इस रचना का मूल संदेश है कि–

भारत केवल एक राष्ट्र नहीं, बल्कि मानवता की चेतना का प्रकाश है।

यह स्तोत्र भारत को :

आत्मज्ञान,

सहअस्तित्व,

विविधता में एकता,

विश्वबंधुत्व,

तथा ब्रह्मानुभूति

की भूमि के रूप में देखता है।

दार्शनिक आधार

‘‘भारतभावस्तवः’’ में निम्न दार्शनिक धाराओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है :-

वेदान्त

अद्वैत

उपनिषद्-चिंतन

सनातन सांस्कृतिक दृष्टि

विश्वमानववाद

गेयता एवं पाठ

यह स्तोत्र गेय है और सामूहिक पाठ, सांस्कृतिक आयोजनों, राष्ट्रचेतना कार्यक्रमों तथा आध्यात्मिक सभाओं में प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

यदि इसे मंद्र लय में उच्चारित किया जाए तो इसकी मन्त्रात्मक शक्ति और अधिक प्रभावी हो उठती है।

समापन

''भारतभावस्तवः'' आधुनिक युग में रचित एक ऐसा दार्शनिक राष्ट्रस्तोत्र है जिसमें भारत की आत्मा, उसकी संस्कृति, उसकी आध्यात्मिक चेतना और विश्वमानव के प्रति उसका सनातन संदेश अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हुआ है।

यह केवल कविता नहीं, बल्कि भारत के आध्यात्मिक स्वरूप का काव्यमय चिंतन है।

मातृ-स्तोत्रम्
(भुजंग प्रयात छंद)

नमो मातृरूपे दयासिन्धुसारे
सदा वात्सल्यधारां वहन्त्यै उदारे।
कृपादृष्टिवृष्ट्या भयं तापहन्त्री
नमस्ते नमस्ते जगत्त्राणकर्त्री ॥1॥

मुखं वीक्ष्य मातुः क्षुधा याति दूरे
स्नेहधाराप्रपाते प्रपूरेऽपि पूरे।
शिशुं रक्षति या प्राणरक्षाप्रकामं
भजेऽहं सदा तां जननीस्वरूपाम् ॥2॥

यदा पीडितोऽहं विपत्तौ निमग्नः
तदा मातृहस्तः सुखं दातुमग्नः।
न कश्चित्प्रियोऽस्ति मातृतुल्यो धरित्र्यां
नमो दिव्यमूर्त्यै सुवात्सल्यकर्त्र्यै ॥3॥

न सा मानसी केवलं रामायणं वा
न वेदार्थमन्त्रा गाथा वा पुराणा।
तुलसीव पावन्यङ्गणे या विराजे
तथा मातृमूर्तिः सदा पूजनीया ॥4॥

श्रुतीनां ऋचो वा मुनीनां कवित्वं
सदा दिव्यपुष्पं वात्सल्यहारं।
पराशक्तिरूपा हि सा मातृदेवी
भजे मातृपादौ ह्यनन्तस्वरूपे ॥5॥

श्वसितुं मलयं सौरभं शीतलं यत्
मन्दं मन्दमीरः प्रवाति स्म नित्यम्।
तथा मातृसान्निध्यसौख्यं सदा मे
हरत्येव तापं शमं च प्रयच्छेत् ॥6॥

हृदि सप्तवर्णैर्दीपार्चिधारा
ललाटे विभातीन्द्रचापप्रकाशः।
तनोति स्वरूपे वात्सल्यरश्मिं
नमस्ते नमस्ते प्रभापुञ्जमूर्त्यै ॥7॥

कुपुत्रो भवेत् क्वापि लोके कदाचित्
न माता कुमाता भवेत् कर्हिचित् सा।
क्षमत्येव बालस्यापराधान् सदा या
भजे मातृमूर्तिं दयापूर्णभावात् ॥8॥

भयं यत्र दृश्येत दुःखाज़्बुदैश्च
नभश्छाद्यते यत्र घोरान्धकारैः ।
तदा मातृछाया सुशीतां ददाति
सदा रक्षणं सा कवचं भवत्येव ॥9॥

नमस्ते मृदुस्नेहपीयूषधारे
नमस्ते जगन्मङ्गलाधारसारे ।
तव श्रीपदेषु प्रणामं करोमि
स्वजीवनपुष्पं सप्रेम समर्प्ये ॥10॥

माँ-स्तुति (हिंदी भुजंग प्रयात)

नमो मातु तेरी दया सिन्धु धारा
सदा प्यार की तू बहाती फुहारा।
कृपा से तू हरती हृदय का अँधेरा
नमस्ते नमस्ते जगत् का सवेरा ॥1 ॥

तुझे देखते ही क्षुधा दूर भागे
मधुर स्नेह से मन के आँगन जागे।
शिशु रक्षा में प्राण तक वार देती
भला कौन माँ-सी दुलारी जगत् में ॥2 ॥

कभी दुःख के बादल मुझे घेर लेते
तभी माँ के कर शीश पर आ ठहरते।
न दुनिया में कोई सहारा है ऐसा
मुझे आज तक माँ से प्यारा न देखा ॥3 ॥

न केवल कथा में न पूजा-विधा में
तू रहती सदा हर हृदय की शिला में।
तुलसि-सी पवित्रा लगे घर की देहरी
माँ तेरी महिमा लगे सबसे गहरी ॥4 ॥

ऋषियों की ऋचाएँ भले गूँजती हों
पुराने पुराणों की बातें सजी हों।
मगर माँ के चरणों का सुख और ही है
वही प्रेम जीवन का सच और ही है॥5॥

मलय की हवा-सा तेरा मृदु स्पर्श
मिटाता हृदय का पुराना सब क्लेश।
तेरे पास आते ही मन खिल उठे माँ
तेरी छाँव में हर व्यथा भूल जाए॥6॥

हृदय में तेरे प्रेम दीपक जलें माँ
नयन में दया के सुनहले सपन माँ।
लुटाती रही तू सदा प्यार की ज्योति
नमो तेजमूर्ति नमो स्नेहज्योति॥7॥

कुपुत्र मिले लाख इस जगत् के भीतर
कुमाता न देखी गई आज तक पर।
सभी भूल बच्चों की हँसकर भुलाती
माँ अपनी कृपा से सदा गले लगाती॥8॥

जहाँ घोर डर हो अँधेरा घना हो
जहाँ दुःख का सावन निरंतर तना हो।
वहाँ माँ की छाया कवच बन के आए
हमें हर विपत्ति से बाहर बचाए ॥9॥

नमो स्नेह की अमृतमय मंद धारा
नमो विश्व का शुभ उजाला तुम्हारा।
तुम्हारे चरण में नमन ले के आया
हृदय-पुष्प जीवन सहित चढ़ाया ॥10॥

मातृ-स्तोत्रम् : परिचय, रचना-विवरण एवं व्याख्या

रचना-नाम :

मातृ-स्तोत्रम् :
(भुजंगप्रयात छन्द में रचित वात्सल्य-स्तुति)

रचनाकार

Suresh Kumar Choudhary 'Indu'

हिन्दी साहित्य और आध्यात्मिक काव्यधारा के प्रतिष्ठित रचनाकार, जिनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना, करुणा, दर्शन तथा भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

''मातृ-स्तोत्र'' उनकी भावप्रधान स्तोत्र-रचनाओं में एक महत्वपूर्ण काव्यकृति है।

रचना का स्वरूप

‘‘मातृ-स्तोत्रम्’’ केवल माता की सामान्य प्रशंसा नहीं है। यह मातृत्व को–

करुणा,

त्याग,

संरक्षण,

वात्सल्य,

तथा दिव्य शक्ति

के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

इस स्तोत्र में माता केवल जैविक जननी नहीं, बल्कि–

जीवन की प्रथम गुरु,

प्रेम की अखण्ड धारा,

दुःखहरिणी शक्ति,

तथा ईश्वर के साकार वात्सल्यस्वरूप

के रूप में चित्रित हुई है।

रचना कब और क्यों लिखी गई

यह स्तुति उस भावभूमि से उत्पन्न हुई है जहाँ रचनाकार ने अनुभव किया कि संसार में यदि कोई प्रेम पूर्णतः निस्वार्थ है तो वह मातृप्रेम है।

आधुनिक जीवन की भागदौड़, स्वार्थ और संबंधों की क्षीण होती आत्मीयता के बीच रचनाकार ने मातृत्व को मानवता की अंतिम शरण और करुणा के शाश्वत स्रोत के रूप में अनुभव किया।

इसी अनुभूति ने इस स्तोत्र को जन्म दिया।

यह रचना केवल भावुक स्मरण नहीं, बल्कि मातृत्व की आध्यात्मिक महिमा का काव्यमय वंदन है।

साहित्यिक विधा

यह काव्य स्तोत्र-साहित्य की परंपरा में आता है।

स्तोत्र-काव्य की प्रमुख विशेषताएँ

वंदना एवं प्रार्थना

गेयता

लयात्मकता

मन्त्रात्मक प्रवाह

भावप्रधान अभिव्यक्ति

आध्यात्मिक संवेदना

''मातृ-स्तोत्र'' इन सभी गुणों से युक्त है।

प्रयुक्त छन्द—भुजंग प्रयात

यह स्तोत्र मुख्यतः भुजंग प्रयात छन्द में रचित है।

भुजंग प्रयात का छन्द-विन्यास

(\cup\cup-)^4

अर्थात् प्रत्येक चरण में चार 'यगण' होते हैं।

यगण का स्वरूप :

लघु + लघु + गुरु

इस छन्द की गति सर्प के मृदु संचरण जैसी प्रतीत होती है, इसलिए इसे ''भुजंगप्रयात'' कहा गया है।

भुजंग प्रयात की विशेषताएँ

मधुर और प्रवाहमयी लय

स्तोत्र एवं प्रार्थना के लिए अत्यंत उपयुक्त

भावों की सतत धारा

करुणा एवं भक्ति की अभिव्यक्ति में प्रभावी

श्रवण में मन्त्र-जैसी अनुभूति

इसी कारण संस्कृत स्तोत्र-साहित्य में यह छन्द अत्यंत लोकप्रिय रहा है।

भाषा एवं शैली

इस स्तोत्र की भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी सहज भावपूर्ण है।

रचना की शैली में :

स्तोत्रीय पुनरावृत्ति,

करुणा का प्रवाह,

वात्सल्य के कोमल बिंब,

तथा आध्यात्मिक ऊँचाई

का सुंदर समन्वय है।

स्तोत्र का केंद्रीय भाव

इस स्तोत्र का मूल भाव है—

‘‘माता केवल संबंध नहीं, बल्कि ईश्वर की करुणा का प्रत्यक्ष स्वरूप है।’’

रचना में माता को :

दुःखहरिणी,

रक्षिका,

क्षमामयी,

जीवनधारा,

तथा प्रेम की परम अभिव्यक्ति

के रूप में चित्रित किया गया है।

प्रमुख भाव-तत्त्व

1. वात्सल्य

माता के प्रेम को अमृतधारा के समान बताया गया है।

2. करुणा

माता संतानों के दोषों को क्षमा करने वाली शक्ति है।

3. संरक्षण

मातृछाया को कवच एवं शरण के रूप में चित्रित किया गया है।

4. आध्यात्मिकता

माता को पराशक्ति एवं दिव्य सत्ता का रूप माना गया है।

काव्यगत विशेषताएँ

इस स्तोत्र में अनेक काव्यगत सौंदर्य उपस्थित हैं :-

अनुप्रास

पुनरुक्ति

रूपक

प्रतीकात्मकता

लयात्मक आवर्तन

संस्कृत-संयुक्त पदावली

विशेषतः ‘‘नमस्ते नमस्ते’’ जैसे आवर्तन स्तोत्र को मन्त्रात्मक प्रभाव प्रदान करते हैं।

गेयता एवं पाठ

यह स्तोत्र गेय है और–

मातृपूजन,

सांस्कृतिक सभाओं,

भक्ति-संगीत,

पारिवारिक आयोजनों,

तथा आध्यात्मिक मंचों

पर अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

यदि इसे मंद्र लय में पाठ किया जाए तो इसकी करुणामयी भावधारा और अधिक प्रभावशाली हो उठती है।

समापन

''मातृ-स्तोत्रम्'' आधुनिक संवेदना और शास्त्रीय स्तोत्र-परंपरा का सुंदर समन्वय है।

इसमें मातृत्व को केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सार्वभौमिक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

यह रचना माता के प्रति श्रद्धा, प्रेम और कृतज्ञता की एक गहन काव्यमयी अभिव्यक्ति है।

कृष्णाष्टकम

आदि शंकराचार्य द्वारा रचित ''भजे व्रजैकमण्डनं...'' (कृष्णाष्टकम) भक्ति साहित्य की एक ऐसी मधुर रचना है जो कृष्ण के ब्रज-स्वरूप, उनके सौंदर्य और उनकी अलौकिक लीलाओं का जीवंत चित्रण करती है। आपके द्वारा निर्धारित सात खंडों में इसका विस्तृत आध्यात्मिक विवरण यहाँ प्रस्तुत है :-

1. रचनाकार

इस अत्यंत कर्णप्रिय अष्टक के रचनाकार आदि शंकराचार्य हैं। यद्यपि शंकराचार्य ज्ञान और वैराग्य के मार्तण्ड माने जाते हैं, परंतु इस स्तोत्र में उनकी 'मधुरा-भक्ति' का स्वरूप प्रकट होता है। उन्होंने सिद्ध किया है कि जिस निर्गुण ब्रह्म की वे चर्चा करते हैं, वही ब्रज में कृष्ण के रूप में सगुण और साकार होकर लीला कर रहा है।

2. स्तोत्र का इतिहास

इसका इतिहास भगवान कृष्ण की ब्रज-लीलाओं से संबंधित है। यह स्तोत्र उस समय की स्मृतियों को संजोता है जब कृष्ण गोकुल और वृंदावन की गलियों में अपनी मुरली की तान से चराचर जगत को सम्मोहित करते थे। आदि शंकराचार्य ने इस अष्टक की रचना उन भक्तों के लिए की जो भगवान के सौम्य, सुंदर और आनंदमय रूप (माधुर्य भाव) की उपासना करना चाहते थे।

3. सार (9 आध्यात्मिक भाव/विशेषताएं)

इस अष्टक के श्लोकों में कृष्ण के 9 विशिष्ट पक्षों का सार समाहित है :-

* **व्रजैकमण्डनः** जो समस्त ब्रजमंडल के एकमात्र आभूषण हैं।

* **नन्द-नन्दनः** जो भक्तों के आनंद को बढ़ाने वाले पुत्र के रूप में हैं।

* **मुरली-वादनः** उनकी मुरली की ध्वनि 'नाद-ब्रह्म' का प्रतीक है जो जीवात्मा को परमात्मा की ओर खींचती है।

* **सौंदर्य-लहरी** : उनके कपोलों पर झूमते कुंडल और मस्तक पर मोरपंख मन को स्थिर करने के केंद्र हैं।

* **पाप-भंजनः** "समस्त-पाप-खण्डन"—जो अपने स्मरण मात्र से जन्मों के पापों को काट देते हैं।

* **रास-विहारी** : राधा और गोपियों के साथ महारास करने वाले, जो आत्मा और परमात्मा के मिलन का प्रतीक है।

* **गोवर्धन-धारी** : जो इंद्र (अहंकार) का मान मर्दन कर अपनी उंगली पर पर्वत उठाकर शरणागत की रक्षा करते हैं।

* **भक्त-वत्सल** : जो कुब्जा जैसी दासी और सुदामा जैसे सखा पर समान कृपा करते हैं।

* **यमुना-तट विहार** : जो चित्त की निर्मलता (यमुना) के तट पर निरंतर क्रीड़ा करते हैं।

4. छन्द का विवरण

यह अष्टक 'भुजंगप्रयात' छन्द में रचित है।

* **लक्षण** : जैसा कि पहले भी चर्चा हुई, भुजंगप्रयात (सर्प की गति) की लय अत्यंत तीव्र और मनोहारी होती है।

* **विशेषता** : प्रत्येक श्लोक के अंत में "भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं, स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दन" का जो दोहराव है, वह एक मन्त्रात्मक कीर्तन की तरह कार्य करता है। इसके उच्चारण

से हृदय में भक्ति के रसों का संचार होता है।

5. अनुवाद का विवरण

* **शाब्दिक** : इसमें कृष्ण के शारीरिक सौंदर्य (जैसे घनश्याम रंग, लाल होंठ, चंचल नेत्र) और उनके वस्त्रों के अलंकारों का विस्तृत वर्णन है।

* **अध्यात्म** : अनुवादक इसे 'चित्तरंजन' प्रक्रिया मानते हैं। जब हम कृष्ण के रूप में डूबते हैं, तो संसार का आकर्षण स्वतः समाप्त हो जाता है। ''स्वभक्तचित्तरंजनं'' का अर्थ है कि वे भक्त के चित्त को सांसारिक विकारों से हटाकर अपने दिव्य आनंद में रंग देते हैं।

6. रचनाकाल

इसका रचनाकाल 8वीं शताब्दी माना जाता है। यह आदि शंकराचार्य के उस काल की रचना है जब वे अद्वैत दर्शन के साथ-साथ 'सगुण भक्ति' के माध्यम से जन-सामान्य को ईश्वर से जोड़ रहे थे।

7. समापन

इस कृष्णाष्टकम का समापन इस विश्वास के साथ होता है कि जो व्यक्ति प्रतिदिन ''नन्दनन्दन'' का स्मरण करता है, उसके जीवन से समस्त दुखों और पापों का खंडन हो जाता है। यह स्तोत्र हमें सिखाता है कि भक्ति में केवल त्याग नहीं, बल्कि 'परमानंद' का उत्सव है।

आदि शंकर द्वारा रचित कृष्णाष्टकम भगवान श्री कृष्ण के विग्रह रूप का मनोहारी वर्णन है जिसे उन्होंने अति प्रभावशाली पञ्चचामर छंद में लिखा है, उसकी मादकता देखने लायक है। मैंने उसी छंद में अनुवाद का प्रयास किया है ताकि वही मादकता बनी रहे।

श्री आदिशंकर रचित कृष्णाष्टकम्

(पञ्चचामर छंद में)

भजे व्रजैक मण्डनम्, समस्त पाप खण्डनम्
स्वभक्त चित्त रञ्जनम्, सदैव नन्द नन्दनम्
सुपिन्छ गुच्छ मस्तकम्, सुनाद वेणु हस्तकम्
अनङ्ग रङ्ग सागरम्, नमामि कृष्ण नागरम्॥ 1॥

मनोज गर्व मोचनम् विशाल लोल लोचनम्
विधूत गोप शोचनम् नमामि पद्म लोचनम्
करारविन्द भूधरम् स्मितावलोक सुन्दरम्
महेन्द्र मान दारणम्, नमामि कृष्ण वारणम्॥ 2॥

कदम्ब सून कुण्डलम् सुचारु गण्ड मण्डलम्
व्रजान्गनैक वल्लभम् नमामि कृष्ण दुर्लभम्
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दयाम्
युतम सुखैक दायकम् नमामि गोप नायकम्॥ 3॥

सदैव पाद पङ्कजम् मदीय मानसे निजम्
दधानमुत्तमालकम्, नमामि नन्द बालकम्
समस्त दोष शोषणम्, समस्त लोक पोषणम्
समस्त गोप मानसम्, नमामि नन्द लालसम् ॥ 4 ॥

भुवो भरावतारकम् भवाब्दि कर्ण धारकम्
यशोमती किशोरकम्, नमामि चित्त चोरकम्
दृगन्त कान्त भङ्गिनम्, सदा सदालसंगिनम्
दिने दिने नवम् नवम् नमामि नन्द संभवम् ॥ 5 ॥

गुणाकरम् सुखाकरम् क्रुपाकरम् कृपापरम्
सुरद्विषन्निकन्दनम्, नमामि गोप नन्दनम्
नवीनगोप नागरम् नवीन केलि लम्पटम्
नमामि मेघ सुन्दरम् तथित प्रभालसथ्पतम् ॥ 6 ॥

समस्त गोप नन्दनम्, हृदम्बुजैक मोदनम्
नमामि कुञ्ज मध्यगम्, प्रसन्न भानु शोभनम्
निकामकामदायकम् दृगन्त चारु सायकम्
रसालवेनु गायकम्, नमामि कुञ्ज नायकम्॥ 7॥

विदग्ध गोपिका मनो मनोज्ञा तल्पशायिनम्
नमामि कुञ्ज कानने प्रवृद्ध वह्नि पायिनम्
किशोरकान्ति रञ्जि’’तं, द्रुगन्जनं सुशोभितम्
गजेन्द्र मोक्ष कारिणम्, नमामि श्रीविहारिणम्॥ 8॥

यथा तथा यथा तथा तदैव कृष्ण सत्कथा
मया सदैव गीयताम् तथा कृपा विधीयताम
प्रमानिकाश्टकद्वयम् जपत्यधीत्य यः पुमान
भवेत् स नन्द नन्दने भवे भवे सुभक्तिमान॥ 9॥

भावार्थ : पञ्चचामर छंद में ही

भजो ब्रजेश श्याम को, समस्त पाप नाश हो
स्वभक्त चित्त नाद हो, सदैव कृष्ण जाप हो
सुपंख मोर के धरे, निनाद वेणु हाथ रे
अनंग रंग सागरे नमामि कृष्ण सांवरे ॥ 1 ॥

अनंग दर्प नाश को विशाल लोल नेत्र को
न शोक ताप गोप का, नमो सरोज नेत्र को
उठा पहाड़ हस्त से, छटा मनोहरी हरे
सुरेश दर्प चूरते, नमामि कृष्ण सांवरे ॥ 2 ॥

कदम्ब पुष्प कुंडले, कपोल गोल हासिते
ब्रजांगना प्रिये हरे, नमामि कृष्ण दुर्लभे
यशोमती दुलार दे, सदैव आप हर्ष दें
गवाल बाल चाहते नमामि गोप बावरे ॥ 3 ॥

सरोज पाद आपके, सदैव हर्ष वंदना
मदपत्त केश घुंघरावली नमामि नंदना
समस्त दोष तारते समस्त लोक धारते
समस्त गोपिका प्रिये नमामि नंद तारदे ॥ 4 ॥

उतार भूमि भार को, भवी समुद्र पाम है
यशोमती किशोर चित्त चोर को प्रणाम है
दृगन्त कांत भंगिमा सदैव गोपिका नमो
विभक्त भक्त नित्य नंद नंद नामिका नमो ॥ 5 ॥

प्रदत्त हैं गुणी समस्त पूर्णता कृपा करें
समस्त व्याधि नाश आप देवता भला करें
नवीन गोप मित्र संग आप खेल खेलते
नमामि पीत वस्त्र मेघ रंग देह धारिते ॥ 6 ॥

समस्त गोपिका प्रिये प्रसन्न चित्त आप हैं
विराज कुंज मध्य हर्ष भानु भांति आप है
स्वभक्त चाह पूर्णकारि तीर सी निगाह है
रसाल वेणु गान गायकी नमामि आर्य है ॥ 7 ॥

विदेह गोपिका मनस्थ सेज आप साजते
वियोग अग्नि भक्त की प्रशांत आप राखते
किशोर कांति आभ संग नेत्र अंजनी लगा
गजेंद्र मोक्ष दायि शक्ति श्री विहार वंदना ॥ 8 ॥

जहाँ कहीं रहूँ सदैव आपकी कथा सुनूँ
कृपा करें प्रभो सुगीत आपके सदा भजूँ
द्विअष्ट पान कृष्ण जो करे कृपा बनी रहे
सदैव कृपा भक्ति वहाँ नंद लाल की रहे ॥ 9 ॥

श्री अष्टलक्ष्मी स्तोत्र

1. रचनाकार

इस स्तोत्र के रचनाकार आदि शंकराचार्य माने जाते हैं। उन्होंने लक्ष्मी जी के केवल धन प्रदाता रूप को ही नहीं, बल्कि जीवन के आठ अनिवार्य आयामों (आठ लक्ष्मी) के रूप में प्रतिष्ठित किया है। चूंकि यह स्तोत्र भी कनक मंजरी में लिखा गया है और महिषासुर मर्दिनी भी कनक मंजरी में है तो यह भ्रांति है कि यह श्लोक भी आदि शंकर का है। मैं इससे सहमत नहीं हूँ, क्योंकि जो लय और अंत्यानुप्रास और यमक अलंकारों का प्रयोग आदि शंकर करते हैं उसका अभाव इस स्तोत्र में स्पष्ट है।

मेरे अनुसार इसके निर्माता महर्षि व्यास होने चाहिए क्योंकि इसकी शैली श्रीमद भागवत पुराण से मिलती है।

2. स्तोत्र का इतिहास

पौराणिक काल से ही लक्ष्मी जी के विभिन्न रूपों की पूजा का विधान है। शंकराचार्य ने इन बिखरे हुए स्वरूपों को एक सूत्र में पिरोकर 'अष्टलक्ष्मी स्तोत्र' की रचना की। ऐतिहासिक रूप से यह स्तोत्र मध्यकाल में दक्षिण भारत के मंदिरों में बहुत लोकप्रिय हुआ और आज यह वैश्विक स्तर पर लक्ष्मी साधना का आधार है।

3. सार (8 स्वरूपों का आध्यात्मिक विवरण)

यह स्तोत्र जीवन की पूर्णता के 8 प्रकारों का वर्णन करता है :-

* **आदि लक्ष्मी** : सृष्टि की मूल शक्ति, जो मोक्ष प्रदान करती हैं।

* **धान्य लक्ष्मी** : केवल अन्न नहीं, बल्कि शुद्ध पोषण और कृषि की अधिष्ठात्री।

* **धैर्य लक्ष्मी** : संकट के समय अडिग रहने वाला साहस।

* **गज लक्ष्मी** : राजसी वैभव, पशु धन और सामर्थ्य की देवी।

* **संतान लक्ष्मी** : वंश वृद्धि और परिवार के गौरव की रक्षा।

* **विजय लक्ष्मी** : बाधाओं और शत्रुओं पर जीत दिलाने वाली शक्ति।

* **विद्या लक्ष्मी** : ज्ञान, कला और विवेक प्रदाता।

* **धन लक्ष्मी** : भौतिक संपदा और आर्थिक समृद्धि।

4. छन्द का विवरण

जैसेकि मैंने ऊपर बताया है कि यह स्तोत्र कनक मंजरी छंद में लिखा गया है जिसकी विधा है।

कनक मंजरी छंद का विधान (लक्षण)

- **वर्ण संख्या** : 23 प्रतिचरण (4 लघु + 6 भगण + 1 गुरु)।
- **गण विधान** : 4 लघु () + 6 भगण () + 1 गुरु ()।
- **यति** : 13 और10 वर्णों पर यति।
- **प्रकार** : समतुकांत (चारों चरण अंत में समान ध्वनियों पर खत्म होते हैं)।

5. अनुवाद का विवरण

* **शाब्दिक** : देवी के आभूषणों, वाहनों और उनके द्वारा किए गए असुर संहार का वर्णन।

* **आध्यात्मिक** : अनुवादक इसे 'मनुष्य के व्यक्तित्व विकास' के आठ चरण मानते हैं। बिना 'धैर्य' के 'धन' व्यर्थ है और बिना 'विद्या' के 'विजय' अधूरी है। चूंकि मैंने अनुवाद कनक मंजरी छंद में ही किया है तो पूरा ध्यान रखा है कि इसका वास्तविक भाव क्षीण न हो और न ही इसकी लय बाधित हो।

6. रचनाकाल

निश्चय ही यह स्तोत्र पिंगल के बाद का है और पिंगल ईसा से ढाई शताब्दी पूर्व के हैं और यूँ तो शोधकर्ताओं नें 12 व्यास का वर्णन किया है जो कि - 250 से + 800 ईस्वी तक में हुए बताए गए हैं, अतः यह उसी समय हुआ होना चाहिए चूंकि लक्ष्मी की स्तुति है तो छठवीं या सातवीं सदी के होने की प्रबल संभावना है।

7. समापन

अष्टलक्ष्मी स्तोत्र का समापन इस प्रार्थना के साथ होता है कि साधक को केवल पैसा ही नहीं, बल्कि वह 'ऐश्वर्य' प्राप्त हो जो उसे धर्म के मार्ग पर बनाए रखे।

अथ श्री अष्टलक्ष्मी स्तोत्र

आद्य लक्ष्मी

सुमनस वन्दित सुन्दरि माधवि, चन्द्र सहोदरि हेममये,
मुनिगण वन्दित मोक्षप्रदायिनि, मंजुल भाषिणी वेदनुते।
पंकजवासिनी देव सुपूजित, सद्गुण वर्षिणी शान्तियुते,
जय जय हे मधुसूदन कामिनी, आद्य लक्ष्मी परिपालय माम्॥ 1॥

धनलक्ष्मी

धिमिधिमि धिन्दिमि धिन्दिमि, दिन्धिमि दुन्धुभि नाद सुपूर्णमये,
घुमघुम घुंघुम घुंघुंम घुंघुंम, शंख निनाद सुवाद्यनुते।
वेद पुराणेतिहास सुपूजित, वैदिक मार्ग प्रदर्शयुते,
जय जय हे मधुसूदन कामिनी, धनलक्ष्मी रूपेणा पालय माम्॥ 2॥

विद्यालक्ष्मी

प्रणत सुरेश्वर भारति भार्गवि, शोकविनाशिनि रत्नमये,
मणिमय भूषित कर्णविभूषण, शान्ति समावृत हास्यमुखे।
नवनिधि दायिनि कलिमलहारिणि, कामित फलप्रद हस्तयुते,
जय जय हे मधुसूदन कामिनी, विद्यालक्ष्मी सदा पालय माम्॥3॥

धान्यलक्ष्मी

अयिकलि कल्मष नाशिनि कामिनी, वैदिक रूपिणि वेदमये,
क्षीर समुद्भव मंगल रूपणि, मन्त्र निवासिनी मन्त्रयुते।
मंगलदायिनि अम्बुजवासिनि, देवगणाश्रित पादयुते,
जय जय हे मधुसूदन कामिनी, धान्यलक्ष्मी परिपालय माम्॥4॥

धैर्यलक्ष्मी

जयवरवर्षिणी वैष्णवी भार्गवि, मन्त्रस्वरूपिणि मन्त्रमये,
सुरगण पूजित शीघ्र फलप्रद, ज्ञान विकासिनी शास्त्रनुते।
भवभयहारिणी पापविमोचिनी, साधु जनाश्रित पादयुते,
जय जय हे मधुसूदन कामिनी, धैर्यलक्ष्मी परिपालय माम्॥5॥

संतानलक्ष्मी

अयि खगवाहिनि मोहिनी चक्रिणि, राग विवर्धिनि ज्ञानमये,
गुणगणवारिधि लोकहितैषिणि, सप्तस्वर भूषित गाननुते।
सकल सुरासुर देवमुनीश्वर, मानव वन्दित पादयुते,
जय जय हे मधुसूदन कामिनी, सन्तानलक्ष्मी परिपालय माम्॥6॥

विजयलक्ष्मी

जय कमलासिनि सद्गति दायिनि, ज्ञान विकासिनी ज्ञानमये,
अनुदिनमर्चित कुन्कुम धूसर, भूषित वसित वाद्यनुते।
कनकधरास्तुति वैभव वन्दित, शंकरदेशिक मान्यपदे,
जय जय हे मधुसूदन कामिनी, विजयलक्ष्मी परिपालय माम्॥7॥

गजलक्ष्मी / राज लक्ष्मी

जय जय दुर्गति नाशिनि कामिनि, सर्वफलप्रद शास्त्रमये,
रथगज तुरगपदाति समावृत, परिजन मण्डित लोकनुते।
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित, ताप निवारिणी पादयुते,
जय जय हे मधुसूदन कामिनी, गजरूपेणलक्ष्मी परिपालय माम्॥8॥

अष्टलक्ष्मी श्लोक का हिंदी में काव्यानुवाद कनक मंजरी छंद में

मनुज भले सब वंदन सुन्दरि माधवि का कर हर्षित हैं
शशि भगिनी मुनि पूजित हेम मयी मृदु वेद स्वरूपित है
कमलिनिवास सभी सुर पूजित भक्तगुणों पर हर्षित है
जय जय हे मधुसूदन कामिनि आद्य सु श्री जय वन्दित है॥1॥

धमधम ढोल बजे घुघु शंख बजे मधु नाद सुना बहके
घुमघुम घुंघम ध्वनि करे सब शंख निनाद सुना लहके
विरत पुराण कथा इतिहास बताकर मार्ग सु सिंचित है
जय जय हे मधुसूदन कामिनि धन्य सु श्री जय वन्दित है॥2॥

नमति विनाशक शोक सुरेश्वरि भारति भार्गवि रत्न मयी
कनक विभूषित कर्ण मणीमय शांत समाहित हास्य मयी
नव निधि दायनि कलि प्रभाव विनाश करे वर सिंचित है
जय जय हे मधुसूदन कामिनि बुद्धि सु श्री जय वन्दित है॥3॥

शुचि कलि कल्मष काट करो प्रभु की प्रिय वैदिक रूप बढ़ी
जलधि सुता तुम क्षीर समाहित मंगल कारक मन्त्र सधी
कमल निवासित मंगल दायिनि सन्त बड़े नित पूजित हो
जय जय हे मधुसूदन कामिनि धान्य सु श्री जय वन्दित है॥4॥

जय वरदान सुता ऋषि भार्गव रूपिणि आकर दे रहती
सुरगण पूजित मन्त्र स्वरूप प्रदान करो फल ज्ञान मती
भवभय नाश करो सब पाप हरो मुनि से अभिनंदित है
जय जय हे मधुसूदन कामिनि धैर्य सु श्री जय वन्दित है ॥ 5 ॥

गरुड़ सवारन मोहिनि चक्रणि ज्ञान मयी नित राग सजे
जगहित गुण समाहित सप्त स्वरा कमला नित भाव जगे
सकल मनुष्य सुरासुर साधु प्रणाम करें पदनोभित हैं
जय जय हे मधुसूदन कामिनि धान्य सु श्री जय वन्दित है ॥ 6 ॥

जय कमलासिनि सद्गति दायिनि, ज्ञान विकासिनी ज्ञान गहो
प्रतिदिन कुंकुम पूजित हो तब कुंकुम धूसर मंडित हो
चरण प्रसंशय वैभव वंदन शंकर देशिक गावत है
जय जय हे मधुसूदन कामिनि धान्य सु श्री जय वन्दित है ॥ 7 ॥

जय जय दुर्गति नाशिनि विष्णु प्रिया फल दायिनि शास्त्रमयी
गज रथ तुरंग सैन्य समावृत लोक सभी तुम पूज्य अयी
हरि हर ब्रह्म सुपूज्य सभी दुख दूर करे पद वन्दित है
जय जय हे मधुसूदन कामिनि धान्य सु श्री जय वन्दित है ॥ 8 ॥

फ़लश्रृति श्लोक

अष्टलक्ष्मी नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विष्णुवक्षःस्थलारूढे भक्तमोक्षप्रदायिनी॥

शङ्ख चक्र गदाहस्ते विश्वरूपिणिते जयः।
जगन्मात्रे च मोहिन्यै मङ्गलम शुभ मङ्गलम॥

निर्वाण षट्कम
(भुजंग प्रयात में)

आदि शंकराचार्य द्वारा रचित 'निर्वाण षट्कम' (जिसे 'आत्मषट्कम' भी कहा जाता है) अद्वैत वेदांत का शिखर है। यह स्तोत्र शब्दों में लिपटा हुआ साक्षात् ब्रह्म-ज्ञान है। आपके द्वारा निर्धारित पैटर्न में इसका आध्यात्मिक और छंदबद्ध विवरण यहाँ प्रस्तुत है :-

1. रचनाकार

इस महान स्तोत्र के रचयिता आदि शंकराचार्य हैं। कहा जाता है कि जब वे आठ वर्ष के थे और अपने गुरु की खोज में नर्मदा तट पर पहुंचे, तब आचार्य गोविंद भगवत्पाद ने उनसे पूछा—''तुम कौन हो?'' बालक शंकर ने उत्तर में जिन छह श्लोकों का उच्चारण किया, वही 'निर्वाण षट्कम' कहलाए। यह किसी परिचय का नहीं, बल्कि 'अहं' के विसर्जन का गान है।

2. स्तोत्र का इतिहास

इसका इतिहास किसी पौराणिक युद्ध से नहीं, बल्कि स्वयं की खोज से जुड़ा है। यह उस समय की रचना है जब भारतीय दर्शन कर्मकांडों में उलझा हुआ था। शंकराचार्य ने इस स्तोत्र के माध्यम से यह स्थापित किया कि मनुष्य का वास्तविक परिचय उसकी जाति, नाम, रूप या संबंधों में नहीं, बल्कि उस अनंत चेतना में है जो अपरिवर्तनीय है। यह 'नेति-नेति' (यह नहीं, यह भी नहीं) की उपनिषदीय पद्धति का काव्य रूपांतरण है।

3. सार (9 आध्यात्मिक सोपान/प्रकार)

यद्यपि इसमें छह श्लोक हैं, किंतु यह साधक को 9 प्रकार के बंधनों से मुक्त कर 'शिवत्व' तक ले जाता है :-

* **मनो-बुद्धि अहंकार (अंतःकरण)** : मैं सोचने वाली, निर्णय लेने वाली या अहंकार करने वाली वृत्ति नहीं हूँ।

* **पंचप्राण** : मैं शरीर को चलाने वाली वायु (प्राण, अपान आदि) भी नहीं हूँ।

* **सप्तधातु** : मैं हाड़-मांस और रक्त से बना यह भौतिक शरीर नहीं हूँ।

* **पंचज्ञानेंद्रिय** : मैं कान, जिह्वा, नासिका या नेत्रों का अनुभव नहीं हूँ।

* **पंचतत्व** : मैं पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का मिश्रण नहीं हूँ।

* **षड्रिपु** : काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर मुझमें नहीं हैं।

* **धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष** : मैं जीवन के इन चार पुरुषार्थों के भी पार हूँ।

* **पुण्य-पाप** : सुख-दुख और पुण्य-पाप के द्वंद्व मेरा स्पर्श नहीं कर सकते।

* **गुरु-शिष्य परंपरा** : अंत में, मैं न गुरु हूँ न शिष्य, मैं केवल वही हूँ जो 'है'।

4. छन्द का विवरण

यह स्तोत्र 'भुजंगप्रयात' छन्द में लिखा गया है।

* **लक्षण** : 'भुजंग' का अर्थ है सर्प और 'प्रयात' का अर्थ है गति। इस छन्द की गति सर्प की चाल की तरह अत्यंत लयबद्ध और सुंदर होती है।

* **संरचना :** इसके प्रत्येक चरण में चार 'यगण' होते हैं।

* **प्रभाव :** इस छन्द के साथ जब ''चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्'' का गान किया जाता है, तो वह मन को शांत कर समाधि की अवस्था की ओर ले जाता है। यह छन्द चित्त की चंचलता को लयबद्ध करने के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

5. अनुवाद का विवरण

इसका अनुवाद 'नकारात्मकता से सकारात्मकता' की ओर ले जाने वाला है :-

* **'न' (नहीं) :** अनुवादक इसे 'इनकार' नहीं बल्कि 'अतिक्रमण' मानते हैं। जब हम कहते हैं कि ''मैं मन नहीं हूँ'', तो अनुवाद का गहरा भाव यह है कि मैं मन का साक्षी हूँ।

* **शिवोऽहम् :** इसका शाब्दिक अनुवाद ''मैं शिव हूँ'' है, लेकिन आध्यात्मिक अनुवाद ''मैं कल्याणकारी शुद्ध चैतन्य हूँ'' होता है। यहाँ 'शिव' व्यक्ति नहीं, बल्कि अवस्था (Pure Consciousness) हैं।

6. रचनाकाल

इसका रचनाकाल 8वीं शताब्दी का प्रारंभिक समय माना जाता है। यह आदि शंकराचार्य की उन प्रारंभिक अनुभूतियों में से एक है जिसने आगे चलकर 'अद्वैत वेदांत' की नींव रखी। यह काल भारतीय दर्शन के पुनरुत्थान का स्वर्ण युग था।

7. समापन

निर्वाण षट्कम का समापन ''न चोपाधिभेदो न मे मुक्तिबन्धः'' से होता है, जिसका अर्थ है कि मेरे लिए न कोई बंधन है और न ही मुक्ति की आवश्यकता, क्योंकि मैं तो सदैव मुक्त ही हूँ। यह स्तोत्र हमें सिखाता है कि हम इस संसार में रहने वाले शरीर नहीं, बल्कि शरीर में रहने वाला अनंत संसार हैं।

मूल स्तोत्र

मनो बुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहम् न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे न च व्योम भूमिर् न तेजो न वायुः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥1 ॥

न च प्राण संज्ञो न वै पञ्चवायुः न वा सप्तधातुर् न वा पञ्चकोशः न वाक्पाणिपादौ न चोपस्थपायू चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥2 ॥

न मे द्वेष रागौ न मे लोभ मोहौ मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः न धर्मो न चार्थो न कामो ना मोक्षः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥3 ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखम् न मन्त्रो न तीर्थं न वेदाः न यज्ञाः अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥4 ॥

न मे मृत्युशंका न मे जातिभेदो पिता नैव मे नैव माता न जन्म न बन्धुर् न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यो चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥5 ॥

अहं निर्विकल्पो निराकार रूप विभुर्व्याप्यसर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम् सदा मे समर्थ्वम् न मुक्तिर् न बन्धः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥6 ॥

अनुवाद : भुजंग प्रयात में

1

न ही बुद्धि में हूँ न ही चित्त में हूँ अहंकार के हूँ मनोद्वार माना
न कानों न जिव्हा न हूँ नासिका नेत्र में भी न आकाश में है ठिकाना
न हूँ अग्नि में मैं' धरा में नहीं मैं' न मैं वायु तेजस्व रूपा, दिवा हूँ
वही शुद्ध हूँ चेतना मैं चिदानंद रूपा अनादी अनंता शिवा हूँ

2

मुझे ना कहो प्राण की चेतना मैं नहीं देह की पंच वायु बताना
न हूँ सप्त सी धातु या देह संरचना पञ्च कोशीकि काया न जाना
न हाथों न पाओं न वाणी बताना न इन्द्री निमज्जा नहीं मैं धुआं हूँ
वही शुद्ध हूँ चेतना मैं चिदानंद रूपा अनादी अनंता शिवा हूँ

3

न मैं बैर प्रेमों न मोहों भरी धारणा हूँ न लोभीत इंसान जानो
न ही मत्सरों में घिरा मैं न दर्पों भरी जिंदगी जान मेरी न मानो
परे थी सदा मोह लिप्सा मुझ में न मैं धर्म के बन्धनों के सिवा हूँ
वही शुद्ध हूँ चेतना मैं चिदानंद रूपा अनादी अनंता शिवा हूँ

4

दुखों में सुखों में नहीं है मिले चैन पापी न पावन अभिव्यक्ति जानो
न मंत्रों न तीर्थों न यज्ञों न ही ज्ञान में हूँ सभी की मुझे शक्ति जानो
कभी भोगने हेतु भोक्ता नहीं हूँ न भोजन कदापि बताना जिवा हूँ
वही शुद्ध हूँ चेतना मैं चिदानंद रूपा अनादी अनंता शिवा हूँ

5

मुझे है न भय मृत्यु का ही न ही जाति के बंधनों में फँसा हूँ बताओ
न माता पिता की न कोई जनम से मुझे ज्ञात बंधन कहाँ मैं बताओ
न मेरा कहीं शिष्य गुरु मित्र बंधु स्वजन भी नहीं है सदा मैं जिवा हूँ
वही शुद्ध हूँ चेतना मैं चिदानंद रूपा अनादी अनंता शिवा हूँ

6

न मैं निर्विकल्प रहता हूँ निराकार चिंतन बनाया गया हूँ सदा ही
पृथक इन्द्रियों को न जानो न ही हूँ विचारों मनन का यदा ही कदा ही
न कल्पनीय ना मुक्ति हूँ मैं न कोई लगा आवरण हूँ सपन मैं दिवा हूँ
वही शुद्ध हूँ चेतना मैं चिदानंद रूपा अनादी अनंता शिवा हूँ

गोपी गीत

गोपी गीत श्रीमद्भागवत पुराण के दसवें स्कंध (अध्याय 31) का एक अत्यंत भावपूर्ण और आध्यात्मिक अंश है। यह विरह भक्ति की पराकाष्ठा है, जहाँ गोपियाँ कृष्ण के अंतर्धान होने पर उनके वियोग में रुदन और स्तुति करती हैं। आपके द्वारा निर्धारित सात खंडों में इसका विस्तृत आध्यात्मिक विवरण यहाँ प्रस्तुत है :-

1. रचनाकार

इसके मूल रचनाकार महर्षि वेदव्यास हैं, जिन्होंने श्रीमद्भागवत महापुराण की रचना की। गोपियों के मुख से निकले ये वचन वास्तव में शुद्ध प्रेमाभक्ति के सिद्धांत हैं। आदि शंकराचार्य से लेकर चैतन्य महाप्रभु तक, अनेक आचार्यों ने इसे 'भक्ति मार्ग का सर्वोच्च शिखर' माना है।

2. स्तोत्र का इतिहास

इसका इतिहास रासलीला के प्रसंग से जुड़ा है। शरद पूर्णिमा की रात जब भगवान कृष्ण गोपियों के साथ महारास कर रहे थे, तब गोपियों के मन में यह सूक्ष्म 'अहंकार' जागृत हुआ कि भगवान केवल उनके वश में हैं। इस गर्व को दूर करने के लिए कृष्ण अचानक अंतर्धान (अदृश्य) हो गए, तब भगवान की खोज में व्याकुल होकर गोपियों ने यमुना के तट पर जो विलाप और वंदना की, वही 'गोपी गीत' के रूप में अमर हुआ।

3. सार (9 आध्यात्मिक भाव)

गोपी गीत में 'विरह' के माध्यम से अध्यात्म के 9 गहरे रहस्यों

को समझाया गया है :-

* **शरणागति** : ''हे नाथ! हम आपकी दासी हैं, आप हमारे स्वामी हैं।'' (अहंकार का पूर्ण विसर्जन)

* **कृतज्ञता** : गोपियाँ मानती हैं कि कृष्ण के जन्म से ही ब्रज की महिमा बढ़ी है।

* **आध्यात्मिक प्यास** : आँखों की प्यास बुझाने के लिए कृष्ण के दर्शन की तड़प, जो मोक्ष से भी ऊपर है।

* **सर्वस्व अर्पण** : घर, परिवार और लोक-लाज को छोड़कर केवल ईश्वर में मन लगाना।

* **विश्व-कल्याण** : कृष्ण की कथाओं को 'तप्त जीवन' के लिए औषधि (कथामृतज़) बताना।

* **भय-मुक्ति** : इंद्रिय जनित कष्टों और मृत्यु के भय का कृष्ण की कृपा से नाश।

* **प्रेम का शुद्ध स्वरूप** : प्रेम में किसी वस्तु की मांग नहीं, बल्कि केवल प्रिय की प्रसन्नता चाहना।

* **व्यापकता** : गोपियाँ स्वीकार करती हैं कि कृष्ण केवल यशोदा के पुत्र नहीं, बल्कि समस्त देहधारियों के अंतरात्मा हैं।

* **पुनर्मिलन की प्रार्थना** : स्वयं को ईश्वर के चरणों में समर्पित कर उनके दर्शन की याचना।

4. छन्द का विवरण

गोपी गीत 'उपजाति' छन्द में रचित है।

* **विशेषता** : इसमें कुल 19 श्लोक हैं। प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं।

* **लय** : इसकी गति करुण रस से ओतप्रोत है। यह छन्द हृदय

की पीड़ा और पुकार को व्यक्त करने के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। इसे गाने पर एक विशेष प्रकार की मानसिक तरलता और भक्ति भाव उत्पन्न होता है।

5. अनुवाद का विवरण (आध्यात्मिक अर्थ)

इसके अनुवाद में 'विरह' के दो अर्थ मिलते हैं :-

* **शाब्दिक** : प्रेमिका का अपने प्रेमी के प्रति वियोग।

* **आध्यात्मिक** : जीवात्मा का परमात्मा से बिछड़ने का दुख।

अनुवादक श्लोक ''तव कथामृतं तप्तजीवन'' की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि संसार की अग्नि में जलते हुए जीव के लिए ईश्वर की चर्चा ही एकमात्र अमृत है। यहाँ 'गोपी' शब्द का आध्यात्मिक अर्थ है - जिसने अपनी इंद्रियों (गो) को कृष्ण में लगा दिया हो।

6. रचनाकाल

श्रीमद्भागवत का रचनाकाल विद्वानों के अनुसार अति प्राचीन है, लेकिन लिखित रूप में इसे द्वापर युग के अंत और कलयुग के प्रारंभ की संधि का माना जाता है। साहित्यिक दृष्टि से इसे 'पुराण काव्य' की श्रेणी में रखा जाता है, जहाँ छंदों के माध्यम से उच्च दर्शन समझाया गया है।

7. समापन

गोपी गीत का समापन गोपियों के विलाप और भगवान के पुनः प्रकट होने की पृष्ठभूमि के साथ होता है। यह सिखाता है कि 'अहंकार' ईश्वरीय मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है। जैसे ही गोपियों का मद टूटा और वे शुद्ध प्रेम में रोने लगीं, भगवान प्रकट हो गए। यह स्तोत्र हमें सिखाता है कि ईश्वर को पाने के लिए केवल 'तड़प' (Longing) की आवश्यकता है, किसी बाहरी आडंबर की नहीं।

महारास शरद पूर्णिमा के दिन रचा गया था। कहते हैं कि यह रात्रि इतनी बड़ी हो गयी थी जितनी की छह महीने का समय होता है। कब रात्रि का समापन हुआ पता ही न चला। भगवान् कृष्ण ने शुद्ध शाश्वत भक्ति योग की शिक्षा इस प्रेम योग से दी। ईश्वर ज्ञान से बढ़कर भक्ति से एवं भक्ति से भी बढ़कर प्रेम के वशीभूत होकर भक्त जनों के पास पहुँच जाते हैं। महारास हेतु शरद पूर्णिमा का समय ही क्यूँ चुना गया यह भी वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक कारण है। वर्ष भर में मात्र शरद पूर्णिमा की रात्रि को ही चन्द्रमा अपनी समस्त 16 कलाओं के साथ उदित होता है एवं चन्द्र किरणें इस प्रकार प्रभाषित होती हैं कि ये एक विशेष प्रकार की ऊर्जा प्रदान करती हैं जो अमृत तुल्य हैं इसीलिए आज के दिन खीर चंद्रप्रभा में रख कर पीते हैं ताकि खीर में बसी अमृत बूँदें शरीर को मिले। वैज्ञानिक दृष्टि से इस 16 कलाओं के चन्द्रमा की रोशनी सभी प्रकार से मिलती हैं जो शारीरिक गठन विशेषतः अस्थि के लिए प्रभावकारी होती हैं। इन किरणों में विटामिन ‘‘ई’’ भी होता है जिससे आँखों को विशेष लाभ मिलता है। ये किरणें आँखों की रेटिना पर सीधा प्रभाव छोड़ती हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से चन्द्र कला 16 है एवं कृष्ण भी 16 कलाओं को लेकर अवतरित हुए हैं। प्रत्येक कला एक संस्कार की द्योतक हैं। सम्पूर्ण कलाओं को एक रात्रि में पा जाना यर्थाथ जीवन को मोक्ष के करीब हो जाना, अतः इस रात्रि में महारास कर भगवन 16 कलाओं द्वारा गोपियों को जो की इन्द्रिय को जीत चुकी हैं उन्हें मोक्ष का द्वार दिखाते हैं।

16 कलाओं के बारे में विस्तृत जानकारी

आपने सुना होगा कुमति, सुमति, विक्षित, मूढ़, क्षित, मूर्च्छित, जाग्रत, चैतन्य, अचेत आदि ऐसे शब्दों को जिनका संबंध हमारे मन और मस्तिष्क से होता है, जो व्यक्ति मन और मस्तिष्क से अलग रहकर बोध करने लगता है वही 16 कलाओं में गति कर सकता है।

चन्द्रमा की सोलह कला : अमृत, मनदा, पुष्प, पुष्टि, तुष्टि, ध्रुति, शाशनी, चंद्रिका, कांति, ज्योत्सना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्ण और पूर्णामृत। इसी को प्रतिपदा, दूज, एकादशी, पूर्णिमा आदि भी कहा जाता है।

उक्तरोक्त चंद्रमा के प्रकाश की 16 अवस्थाएं हैं उसी तरह मनुष्य के मन में भी एक प्रकाश है। मन को चंद्रमा के समान ही माना गया है। जिसकी अवस्था घटती और बढ़ती रहती है। चंद्र की इन सोलह अवस्थाओं से 16 कला का चलन हुआ। व्यक्ति का देह को छोड़कर पूर्ण प्रकाश हो जाना ही प्रथम मोक्ष है।

* **मनुष्य (मन) की तीन अवस्थाएं** : प्रत्येक व्यक्ति को अपनी तीन अवस्थाओं का ही बोध होता है - जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति। क्या आप इन तीन अवस्थाओं के अलावा कोई चौथी अवस्था जानते हैं? जगत तीन स्तरों वाला है - 1. एक स्थूल जगत, जिसकी अनुभूति जाग्रत अवस्था में होती है। 2. दूसरा सूक्ष्म जगत, जिसका स्वप्न में अनुभव करते हैं और 3. तीसरा कारण जगत, जिसकी अनुभूति सुषुप्ति में होती है।

तीन अवस्थाओं से आगे : सोलह कलाओं का अर्थ संपूर्ण बोधपूर्ण ज्ञान से है। मनुष्य ने स्वयं को तीन अवस्थाओं से आगे कुछ नहीं

जाना और न समझा। प्रत्येक मनुष्य में ये 16 कलाएं सुप्त अवस्था में होती है। अर्थात इसका संबंध अनुभूत यथार्थ ज्ञान की सोलह अवस्थाओं से है। इन सोलह कलाओं के नाम अलग-अलग ग्रंथों में भिन्न-भिन्न मिलते हैं :-

1. अन्नमया, 2. प्राणमया, 3. मनोमया, 4. विज्ञानमया, 5. आनंदमया, 6. अतिशयिनी, 7. विपरिनाभिमी, 8. संक्रमिनी, 9. प्रभवि, 10. कुंथिनी, 11. विकासिनी, 12. मर्यदिनी, 13. सन्हालादिनी, 14. आह्लादिनी, 15. परिपूर्ण और 16. स्वरूपवस्थित।

* **अन्यत्र -** 1. श्री, 2. भू, 3. कीर्ति, 4. इला, 5. लीला, 6. कांति, 7. विद्या, 8. विमला, 9. उत्कर्शिनी, 10. ज्ञान, 11. क्रिया, 12. योग, 13. प्रहवि, 14. सत्य, 15. इसना और 16. अनुग्रह।

* **कहीं पर -** 1. प्राण, 2. श्रधा, 3. आकाश, 4. वायु, 5. तेज, 6. जल, 7. पृथ्वी, 8. इन्द्रिय, 9. मन, 10. अन्न, 11. वीर्य, 12. तप, 13. मन्त्र, 14. कर्म, 15. लोक और 16. नाम।

16 कलाएं दरअसल बोध प्राप्त योगी की भिन्न-भिन्न स्थितियां हैं। बोध की अवस्था के आधार पर आत्मा के लिए प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक चन्द्रमा के प्रकाश की 15 अवस्थाएं ली गई हैं। अमावस्या अज्ञान का प्रतीक है तो पूर्णिमा पूर्ण ज्ञान का।

19 अवस्थाएं : भगवद् गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने आत्म तत्व प्राप्त योगी के बोध की उन्नीस स्थितियों को प्रकाश की भिन्न-भिन्न मात्रा से बताया है। इसमें अग्निर्ज्योतिरहः बोध की 3 प्रारंभिक स्थिति हैं और शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् की 15 कला शुक्लपक्ष की 01 हैं। इनमें से आत्मा की 16 कलाएं हैं।

आत्मा की सबसे पहली कला ही विलक्षण है। इस पहली अवस्था

या उससे पहली की तीन स्थिति होने पर भी योगी अपना जन्म और मृत्यु का दृष्टा हो जाता है और मृत्यु भय से मुक्त हो जाता है।

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः॥

अर्थात् जिस मार्ग में ज्योतिर्मय अग्नि-अभिमानी देवता हैं, दिन का अभिमानी देवता है, शुक्लपक्ष का अभिमानी देवता है और उत्तरायण के छह महीनों का अभिमानी देवता है, उस मार्ग में मरकर गए हुए ब्रह्मवेत्ता योगीजन उपयुक्त देवताओं द्वारा क्रम से ले जाकर ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। (8-24)

भावार्थ : श्रीकृष्ण कहते हैं जो योगी अग्नि, ज्योति, दिन, शुक्लपक्ष, उत्तरायण के छह माह में देह त्यागते हैं अर्थात् जिन पुरुषों और योगियों में आत्म ज्ञान का प्रकाश हो जाता है, वह ज्ञान के प्रकाश से अग्निमय, ज्योर्तिमय, दिन के समान, शुक्लपक्ष की चांदनी के समान प्रकाशमय और उत्तरायण के छह माहों के समान परम प्रकाशमय हो जाते हैं अर्थात् जिन्हें आत्मज्ञान हो जाता है। आत्मज्ञान का अर्थ है स्वयं को जानना या देह से अलग स्वयं की स्थिति को पहचानना।

विस्तार से...

1. **अग्नि :** बुद्धि सतोगुणी हो जाती है दृष्टा एवं साक्षी स्वभाव विकसित होने लगता है।
2. **ज्योति :** ज्योति के समान आत्म साक्षात्कार की प्रबल इच्छा बनी रहती है। दृष्टा एवं साक्षी स्वभाव ज्योति के समान गहरा होता जाता है।
3. **अह :** दृष्टा एवं साक्षी स्वभाव दिन के प्रकाश की तरह स्थित हो जाता है।

16 कला - 15 कला शुक्लपक्ष + 01 उत्तरायण कला = 16

1. बुद्धि का निश्चयात्मक हो जाना।
2. अनेक जन्मों की सुधि आने लगती है।
3. चित्त वृत्ति नष्ट हो जाती है।
4. अहंकार नष्ट हो जाता है।
5. संकल्प-विकल्प समाप्त हो जाते हैं। स्वयं के स्वरूप का बोध होने लगता है।
6. आकाश तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। कहा हुआ प्रत्येक शब्द सत्य होता है।
7. वायु तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। स्पर्श मात्र से रोग मुक्त कर देता है।
8. अग्नि तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। दृष्टि मात्र से कल्याण करने की शक्ति आ जाती है।
9. जल तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। जल स्थान दे देता है। नदी, समुद्र आदि कोई बाधा नहीं रहती।
10. पृथ्वी तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। हर समय देह से सुगंध आने लगती है - नींद, भूख प्यास नहीं लगती।
11. जन्म, मृत्यु, स्थिति अपने अधीन हो जाती है।
12. समस्त भूतों से एकरूपता हो जाती है और सब पर नियंत्रण हो जाता है। जड़ चेतन इच्छानुसार कार्य करते हैं।
13. समय पर नियंत्रण हो जाता है। देह वृद्धि रुक जाती है अथवा अपनी इच्छा से होती है।
14. सर्वव्यापी हो जाता है। एक साथ अनेक रूपों में प्रकट हो सकता है। पूर्णता अनुभव करता है। लोक कल्याण के लिए संकल्प धारण कर सकता है।

15. कारण का भी कारण हो जाता है। यह अव्यक्त अवस्था है।
16. उत्तरायण कला-अपनी इच्छा अनुसार समस्त दिव्यता के साथ अवतार रूप में जन्म लेता है। जैसे-राम, कृष्ण यहां उत्तरायण के प्रकाश की तरह उसकी दिव्यता फैलती है।

सोलहवीं कला पहले और पन्द्रहवीं को बाद में स्थान दिया है। इससे निर्गुण सगुण स्थिति भी सुस्पष्ट हो जाती है। सोलह कला युक्त पुरुष में व्यक्त अव्यक्त की सभी कलाएं होती हैं। यही दिव्यता है।

गोपी गीत 31वें अध्याय में वर्णित है यह विशुद्ध अध्यात्म-प्रेम-भक्ति-अनुराग का द्योतक है। इसमें प्रभु से मिलन की सीधी स्थिति बताई गयी है, अतः इसे प्राणों का प्राण कहते हैं। कोई भी भागवत कथा सम्पूर्ण गोपी गीत के बिना अधूरी कही जाती है।

छंद शास्त्र में इंदिरा छंद अन्य दो नामों से और जाना जाता है - 1. ललित छंद, 2. कनक मंजरी छंद। कनक मंजरी पुष्प में एक मादकता होती है वैसे ही इस गीत में एक शिष्ट मादकता है। गोपी-गीत रुषी-रूपा और श्रुति-रूपा गोपियों द्वारा गाया गया बताया जाता है और वे इंदिरा छंद की ज्ञाता थीं। इंदिरा का मतलब होता है ऐश्वर्य एवं जो ऐश्वर्य दान से हो अतः आध्यात्मिक धन दान करने वाला यह गीत प्रभु को आकर्षित करता है। गोपियाँ जब इस ऐश्वर्य के दान को ग्रहण करती हैं तो यह मात्र भक्ति का वरदान है, जो कि भगवान् कृष्ण के रूप में उन्हें चाहिए, अन्य कुछ नहीं, कोई भी सांसारिक वस्तु नहीं।

श्रीमद् भागवतम् को पांचवाँ वेद माना जाता है, इसके हर शब्द गूढ़ अर्थ के साथ शोभित हैं। सम्पूर्ण सृष्टि की रचना से लेकर 22 अवतार तक का वर्णन इसमें किया गया है। पहले नौ स्कंध श्रवणीय हैं, जिनमें कथानक के रूप में विभिन्न कथाएं बताई गयी हैं। दसवाँ

स्कंध प्रभु की लीला दर्शाता है एवं सम्पूर्ण भागवत का एक तिहाई भाग दशम स्कंध में है। 335 अध्याय में से 90 अध्याय कहे गए हैं प्रभु की लीला के बारे में, अतः दशम स्कंध को भागवत का प्राण माना गया है। दशम स्कंध में 29वें अध्याय से 33वें अध्याय में गोपियों के साथ रास का वर्णन है। रास जिसे आधुनिक युग में अर्थ बदल कर घृणित बना दिया गया है। वह एक सच्चा अध्यात्म का एवं आस्था का द्योतक है। गोपी शब्द दो अक्षरों से बना है - 'गो' धातु इन्द्रियों को दर्शाती हैं एवं 'पी' तत्सम पीने को यथार्थ इन्द्रियों को पीकर वश में करना, जो इन्द्रियों को वश में कर ले वह गोपी और रास दर्शाता है। किसी भी स्थिति में काम, निश्छल भक्ति प्रेम से ऊपर नहीं है। जब प्रभु ने रास लीला की थी उस समय उनकी आयु मात्र 7 वर्ष थी। क्या 7 वर्ष की आयु के बालक के साथ काम से युक्त नृत्य हो सकता है। जो वर्णन है उसमें प्रभु की वेणु धुन से खींची सारी गोपियाँ चली आ रही थी, उनमें आयु का कोई भेद नहीं था। वृद्ध भी थे, बालिका भी थी, वेणु की धुन एकाग्रचित होकर ध्यानमग्न होने की दशा है। जब हम एकाग्र होकर किसी भी तरफ ध्यान मग्न हो जाते हैं तो किसी भी अन्य वस्तु का असर नहीं होता। उसी अवस्था में गोपियाँ परम साधना की अवस्था में थी, उन्हें सब तरफ प्रभु ही प्रभु नजर आ रहे थे। हर गोपी के साथ एक प्रभु, क्या यह लीला किसी भी मायने में विकृत हो सकती है। कहते हैं श्रीराम का चरित्र अनुकरणीय है, उन्होंने सब कुछ करके दिखाया। श्रीकृष्ण का चरित्र श्रवणीय है, उन्होंने सब कुछ कह कर बताया। गोपी गीत 31वें अध्याय में वर्णित है यह विशुद्ध अध्यात्म-प्रेम-भक्ति-अनुराग का द्योतक है। इसमें प्रभु से मिलन की सीधी स्थिति बताई गयी है, अतः इसे प्राणों का प्राण कहते है। कोई भी

भागवत कथा सम्पूर्ण गोपी गीत के बिना अधूरी कही जाती है।

गोपी गीत स्तोत्र (प्रशंसा) के रूप में जाना जाता है और इस स्तोत्र मात्र शब्दों की माला नहीं बल्कि गोपियों की प्रेम-भावना की प्रस्तुति है। गोपी-गीत, कृष्ण के यश (प्रसिद्धि) को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। यूँ तो ऐश्वर्य बिना (धन) यश संभव नहीं हो सकता। यश इसके बिना प्रसारित नहीं किया जा सकता। ऐश्वर्य गोपी-गीत में बहुत अच्छी तरह से माधुर्य लिए प्रवाहित होता है, अतः यह गीत एक मादकता लिए हुए है। इस मादकता को इंदिरा छंद ही पूर्ण रूप से न्याय दे सकता था अतः इसे इसी छंद में कहा गया।

इस छंद के प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं जो शरणागति एकादशी को बिम्बित करते हैं। यह एकादश ही कृष्ण को गीत के पश्चात् प्रकट होने के लिए विवश करता है। लघु गुरु के क्रम से सज़ा यह छंद विरह एवं रुदन की लय के लिए जाना जाता है। यह लघु गुरु का क्रम ही इस गीत को लय प्रदान करता है एवं यह भी इंगित करता है कि कब छंद पश्चात् रुदन की सिसकारी आती है। यह लय ही ध्वनि योजना कहलाती है, यह एक प्रेरक सन्देश देती है, इसी सन्देश को पाकर श्रीकृष्ण तत्काल प्रकट हो जाते हैं।

गोपी गीत को सरल गैय रूप में उसी इंदिरा छंद में लिखने का प्रयत्न किया है जिस छंद में मूल रूप से लिखा गया है। अंतिम श्लोक अलकावली छंद में है परन्तु उसे मैंने इंदिरा छंद में ही लिखा है एवं विवेचना भी इस नासमझ बुद्धि के अनुसार सरसी छंद में की है। गोपी गीत के महात्म्य को विभिन्न छंदों में लिखने का प्रयास हुआ है ताकि यह पुस्तक पूरी खंड काव्य बन जाए।

मूल श्लोक

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥1॥

शरदुदाशये साधुजातसत्स-
रसिजोदरश्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका
वरद निघ्नतो नेह किं वधः ॥2॥

विषजलाप्ययाद्व्यालराक्षसा-
द्वर्षमारुताद्वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद्विश्वतोभया
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥3॥

न खलु गोपिकानन्दनो भवा-
नखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान्सात्वतां कुले ॥4॥

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।
करसरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥5॥

व्रजजनार्तिहन्वीर योषितां
निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो
जलरुहाननं चारु दर्शय ॥6॥

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं
तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।
फणिफणार्पितं ते पदांबुजं
कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥7॥

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यती-
रधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥8॥

तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥9॥

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः
कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥10॥

चलसि यद्व्रजाच्चारयन्पशून्
नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः
कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥11॥

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै-
र्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन्मुहु-
र्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥12॥

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं
धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपङ्कजं शंतमं च ते
रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥13॥

सुरतवर्धनं शोकनाशनं
स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।
इतररागविस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥14॥

अटति यद्भवानह्नि काननं
त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते
जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद्दृशाम् ॥15॥

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवा-
नतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः
कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥16॥

रहसि संविदं हृच्छयोदयं
प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते
मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥17 ॥

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते
वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् ।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥18 ॥

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेष
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किंस्वित्कू
र्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥19 ॥

1

जय रहे सदा नाथ आपकी,
ब्रज धरा बनी पुण्य जाप की
बसति इन्दिरा आ यहाँ प्रिये,
जनम ले किया स्वर्ग जानिये

नयन ढूंढ़ते श्याम आपको,
दरस दे हठी काट पाप को
अरण गोपियाँ खोजती तुझे,
दयित आ करो क्षीण ना मुझे

2

ह्रदय प्रेम स्वामी सदा तुम्ही,
रह अमोल दासी बनी हम्ही
शरद चांदनी ताल में गहे,
नयन चारुता हैं चुरा रहे

हनन शस्त्र से हो नहीं सदा,
वध हुआ इन्हीं चक्षु से यहाँ
वरद आपकी दासिका बनी,
सुरत नाथ ये दृष्टि क्यों तनी

3

ऋषभ नाथ रक्षा करी तूने
गरल नीर भी तो लगा छूने
मरण आ रहा था अघा रुपी
अलग काल दावानली झुकी

वृषभ दैत्य व्योमासुरा वहाँ
अनल चंचला अंध वायु का
तृण असुर वर्षा धरा सभी
समय आ बचाया हमें तभी

4

अपितु गोपिकानन्दना रहे
प्रिय सखे नहीं मात्र ये कहें
स तन आप स्वामी पधारते
नमन प्रार्थना ब्रह्म मानते

परम मित्र तू मात्र हो नहीं
विशन तू यशोदा जना नहीं
जनम ले यदू वंश आ गए
मन रखा जभी प्रार्थना करे

5

यदु शिरोमणे लालसा भरी
जनम मृत्यु की आपने करी
वृषिण धुर्य अच्छेद रूप हो
अभय दान दे आप भूप हो

शरण ले धरा मुक्ति ला रहे
नमन कान्त लक्ष्मी तुम्हे करें
कमल हस्त माथे साथ है
अनल काम की आज शांत है

6

ब्रज जनों हितों हेतु आप तो
हनन दुःख का पूर्ण काम हो
मदिर मंद मुस्कान आपकी
झलक एक भक्तों कु तारती

भजन दासिका आपकी करें
प्रिय सखे तुम्हारे निसार दें
रुठ नहीं हम से प्रेम दान दो
चरण धो पखारा तु मान दो

7

पद सरोज तारें हमे प्रिये
बदन धारियों के तुम्ही हिये
हरत पाप को श्री दबाय के
चरण आपके गोद लाय के

दमन कालिया नाग का किया
मृदुल पाद से वेदना लिया
विरह वेदना तृप्त हो प्रिये
दहकते हुए वक्ष शांत किये

8

कमल लोचना माधुरी इडा
अमृत शब्द है एक एक ला
मधुर मुग्ध वाणी करे जहाँ
वचन बोल मोहे हमें यहाँ

अधर पान हो दान चेतना
जगत दान दिव्या सचेतना
सब पिला हमें आप प्राण दें
हम रहें सदा दासिका कहें

9

अमृत शब्द लीला रचें यहाँ
जगत त्रास का दुःख नाश हाँ
रच सु गान ज्ञानी करे कथा
परम मंगला प्राप्त हो तथा

श्रवण मात्र उद्धार चाहता
मरण लोक दानी बड़े पता
हरण सर्व हो पाप ताप का
महत होय लीला प्रताप का

10

चितवनें रसीली हंसी लुटे
वचन गुप्त आलाप चीकुटे
स्मरण है हमें भोग की प्रिये
अटल आप लीला करें हिये

मनन मंगला ध्यान मंगला
ह्रदय स्पर्श लीला व निश्चला
कुहुक क्षोबती आज भी हमें
मन अतीव वार्ता सदा छले

11

नलिन सुन्दरं नाथ मानिए
पग चुभे चराने गऊ गए
गमन ग्राम से बेकली करे
मन विचार आता चुभे तृणे

प्रियतमे तृणों के चुभें नहीं
फसल शूल कैसे लगे नहीं
चलत काल सोचो प्रिये ज़रा
वन विशाल है सोच लो ज़रा

12

दिन ढले प्रिये लौटते जभी
वन प्रस्थान को देख ले सभी
मुख सरोज नीली लटें सजी
उड़ घनी पड़ी धूल गौ रजी

दरस दे छटा मोहनी हमें
ह्रदय प्रेम सम्पूर्ण हो मिले
मिलन कामना जागती रही
मदिर प्रेम की वासना गही

13

प्रियस हे तुम्ही कष्ट नाशते
शरण भक्त जो आय तारते
पुरण कामना ये समस्त हो
चरण ध्यान लाव्याधि पस्त हो

परम पाद कल्याण कारि ये
कम व्यथा रहे वक्ष धारिये
ह्रदय शांत होगा सखे सुनें
पद सरोज ला धारिये गुणे

14

अधर आपके पी सुधा मिले
मधुर हर्ष बांटे सुराग्रि ले
दमन शोक हो रोक हो यहाँ
वितर आप ना हों हमें कहा

ध्वनि समाय वंशी बसे हिये
जनक आप आसक्ति टालिये
इतर कोय हो नाहि आपसे
गहन भक्ति का वास हो बसे

15

वन विहार जो भोर जा रहे
युग प्रतीत तेरे बिना लगे
समय सांझ की लौटते तभी
घुँ अलकावली देख भागती

पलक का उठाना न सिध्य है
जगत का विधाता अविद्य है
कुटिल कष्टकारी लगो तुम्ही
सतत सोचती वारिजा वहीं

16

गिरिश छोड़ के बंधु मात को
सकल पुत्र भाई सजात को
कर अमानना त्याग दी उन्हें
सघन कामना छाड़ि दी तिन्हें

कितव चाल को जानती सदा
मधुर गान तो मोहती यदा
कपट रात्रि धारी त्रिया यहाँ
किशन क्यों तूने छोड़ यूँ दिया

17

मिलन भावना प्रेम भाव को
विजन आपका मेल चाव को
हंसित बात एकांत वास हे
गठन वक्ष तेरा रमा रहे

रहसि छेड़ते गोपिका सदा
रमण नित्य है इंदिरा कदा
वरत गोपिका लालसा बढ़े
मन रहा न आसक्त प्रागढ़े

18

प्रकट हो किये तू भला इसे
ब्रजधरा ऋणी है स्वभाग्य से
हनन पाप सर्वदा गला
हृदय लालसा विश्व मंगला

हवन औषिधी दान दो यहाँ
हृदय रोग का नाश हो यहाँ
मदन मोहना भक्ति दो हमें
शमन द्वेष का शक्ति दो हमें

19

स्तन कठोर कैसे धरो पगा
कमल से तुम्हारे पगा झगा
धरण होय संकोच मानती
वन चुभा कुषा शूल जानती

चरण की व्यथा जान आपकी
व्यथित हो रही गोपिका सभी
नमन श्याम गोविन्द आपको
नमन कृष्ण गोपाल आपको

इति श्रीमद्भागवत महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां गोपीगीतं नामैकत्रिंशोऽध्यायः

परिचय

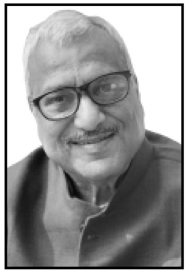

सुरेश चौधरी 'इंदु'

पिता का नाम : स्व. भोलाराम चौधरी

माता का नाम : श्रीमती दुर्गावती चौधरी

जन्म स्थान : जमशेदपुर (वर्तमान में झारखंड)

जन्म तिथि : 14 जुलाई, 1952

शिक्षा : विज्ञान में स्नातक, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, एकोल सुपेरियारे रोबर्ट दी सौबोर्न फ्रांस द्वारा पीएचडी (अर्थ एवं वित्त विश्लेषण) में स्वीकृत मानद; (BSc, FCA, PhD) आरंभिक शिक्षा जमशेदपुर भारतीय मोडल स्कूल कक्षा 7 तक, फिर ADLS हाईस्कूल में मैट्रिक 1963-1967, फिर जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज से विज्ञान में स्नातक (1967-1971)। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स कोलकाता (दास एंड प्रसाद) से चार्टर्ड (1972-1976)।

जीवन वृतांत : 1977-1982, उषा अलॉयस एंड स्टील्स में मैनेजर फाइनेंस के रूप में कार्य। 1982-83 बिहार अलॉइ स्टील्स लिमिटेड में वाइस प्रेसीडेंट कमर्शियल। तत्पश्चात् निजी इस्पात एवं इस्पात से संबंधित कुल 18 कारखाने बड़ोदरा, गोधरा, मेघनगर, जमशेदपुर, चांडिल, बड़बिल, कोलकाता में लगाये। 2008 से 2011 तक आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्य किया।

लेखन में रूचि 2011 से स्वास्थ्य के चलते। सभी कार्य छोड़कर केवल अध्ययन एवं लेखन की ओर झुकाव, तब से नियमित लेखन एवं शोध कार्य। लेखन में विशेष कर-हाइकु, मुक्त छंद, छंद मुक्त, छंद, बाल कविता, आलेख, आध्यात्म, शोध वैदिक सनातन दर्शन एवं आर्थिक विषय पर। भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखों एवं कविताओं का नियमित प्रकाशन, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉग अकेदेमिया, एडु में नियमित लेख प्रकाशन।

'ताजा टीवी' एवं 'दूरदर्शन' पर समय-समय पर चर्चाओं में भागीदारी।

अनुवादित कार्य का विवरण

1.1 श्री दुर्गतिविनाशनी : श्री दुर्गा सप्तशती का भावानुवाद छंद मुक्त लयबद्ध जिसकी विवेचना महामंडलेश्वर साक्षी जी महाराज एवं प्रसिद्ध साहित्य समीक्षक श्री वीरेन्द्र गोस्वामी, जयपुर ने लिखी। पुस्तक के दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

1.2 प्रांजलि (भाग-2) : श्रीमद्भागवत एवं वेदों के 101 सूक्तों पर आधारित छंद मुक्त प्रार्थनाएँ, समीक्षा डॉ. उम्मेद सिंह बैद, पुस्तक में प्रार्थना के साथ उधृत श्लाकों की संख्या भी दी गयी है।

1.3 वेद से वेदांत तक-मूल पाठ सहित : 9 उपनिषद : ईशोपनिषद्, केन उपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्न उपनिषद, मंडूक उनिपद, मांडूक्य उपनिषद, ऐतरिय उपनिषद, तैतरीय उपनिषद, श्वेताश्वेतर उपनिषद का छंद मुक्त काव्यात्मक अनुवाद, पुरुष सूक्त एवं नासदीय सूक्त का छंदोबद्ध अनुवाद।

समीक्षा : अंशु त्रिपाठी, प्रसिद्ध कवयित्री, डॉ. अल्पना गोस्वामी, विभागाध्यक्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग।

1.4 आदिशंकर रसमाधुरी :

मूल संस्कृत पाठ के साथ : आदि शंकराचार्य के निम्नलिखित स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद

1. भजगोविंद : चौपाई एवं दोहों में अनुवाद
2. महिषासुर मर्दिनी : कनक मंजरी छंद
3. देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् : हरिगीतिका छंद में
4. निर्वाण षटकम : कुकुम्भ छंद में
5. श्री गंगा स्त्रोत : लावणी छंद में अनुवाद
6. कनकधारा स्त्रोत : मूल छंद में

आशीर्वचन प्रसिद्ध गौ भक्त संत एवं रामजन्मभूमि के प्रमुख आचार्य धर्मेन्द्र द्वारा।

1.5 हर हर महादेव : मूल संस्कृत पाठ के साथ मंत्रों एवं स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद :
विषय की विषद व्याख्या स्व-लिखित

1. शिव स्तुति-स्व-रचित संस्कृत में
2. महामृत्युंजय मंत्र : धनाक्षरी में
3. शिव पंचार मंत्र : चतुष्पदी में
4. द्वादश ज्योर्तिलिंग : चतुष्पदी में
5. रावण रचित शिवताण्डवस्तोत्रज़

यह स्त्रोत अनंग शेखर छंद में लिखा गया है, इसे इसी छंद में अनुवाद किया है।

6. श्री शिव महिम्न स्तोत्र : चतुष्पदी एवं लावणी छंद
7. रूद्राष्टक (तुलसीदास रचित) : चतुष्पदी में
8. शिव मानस पूजा स्त्रोत : षष्टपदी में आशीर्वचन आचार्य धर्मेन्द्र जी एवं बालव्यास जी द्वारा

1.6 सुभाषितम : मूल संस्कृत श्लोकों सहित भारतीय नीतिशास्त्र एवं विभिन्न सुभाषित 108-108 श्लोकों की दो माला का दोहों में अनुवाद।

1.7 गोपी गीत : यूँ तो गोपी गीत 19 श्लोकों का एक गीत जो इंदिरा छंद में लिखा गया है, परंतु यह गहन शोध का विषय है एवं प्रत्येक श्लोक अध्यात्म की ऊँचाई की छूता दृष्टिगत है। इसका अनुवाद भी इंदिरा छंद में ही किया है और विस्तार और विस्तृत भाष्य विभिन्न छंदों में है। यह एक खंड काव्य है।

1.8 सुर तरिंगिणी : देव सरिता माँ गंगा की समस्त कहानी एवं संस्कृत मूल के साथ गंगा लहरी, गंगा स्त्रोत, गंगाष्टकम (कालिदास, आदिशंकर, वाल्मीकि द्वारा रचित) का छंदों में अनुवाद, गंगा का अवतरण हुआ है तो क्या हुआ होगा व्यवहारिक दृष्टिकोण।

1.9 अप्रकाशित : भागवत में वर्णित अनेक गीतों एवं स्तुतियों जैसे, भ्रमर गीत, वेणु गीत, वर्षा गीत, कुन्ती द्वारा स्तुति, गर्भ स्तुति, गज मोक्ष मंत्र आदि का मूल संस्कृत पाठ सहित विभिन्न छंदों में अनुवाद। **विवरण इस प्रकार है :-**

क्रम	सूक्त/गीत/स्तुति वेदों से	मूल छंद	अनुवाद का छंद
1.	पुरुष सूक्त	निचृदनुष्टुप	चतुष्पदी
2.	नाशदीय सूक्त	नीचृत्रिष्टुप	चतुष्पदी
3.	हिरण्यगर्भ सूक्त	त्रिषटुप	लावणी
4.	संज्ञान सूक्त	विराननुष्टुप	गीतिका
5.	श्री सूक्त	महा जगति	हरिगीतिका
	भागवत के गीत/स्तुति		
6.	भ्रमर गीत	शार्दूलविक्रीडीत	हरिगीतिका
7.	वर्षा गीत	वसांततालिका	दोहा-चौपाई
8.	यूगल गीत	स्वागता	स्वागता
9.	वेणु गीत	वंशस्थ	हरिगीतिका
10.	प्रणय गीत	उपेन्द्रवज्रा	कुकुम्भ
11.	धुन गीत	वसंततालिका	कुकुम्भ
12.	गजेन्द्र मोक्ष	स्तरगधरा	दोहा-चौपाई
13.	कुंती स्तुति		चतुष्पदी
14.	वसुदेव स्तुति		चतुष्पदी
15.	गर्भ स्तुति		धनाक्षरी
16.	चतुर्शलोकी भागवत		धनाक्षरी
17.	अन्य: कृष्णाष्टकम	पैंचचामर	पैंचचामर

अन्य भाषा से अनुवाद

2.10 अड़सठ शरद रवीन्द्र की शरण : रवीन्द्र के मूल 68 बंगला गीतों को देवनागरी में लिखकर अनुवाद प्रथम अनुवाद है, जो छंदबद्ध है। अभी तक जितने भी अनुवाद हुए हैं, वे सब छंद मुक्त अतुकांत या तुकांत अनुवाद ही हुए हैं। इसकी समीक्षा प.बंगाल के पूर्व राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. राजश्री शुक्ल, प.बंगाल शिक्षण विश्वविद्यालय की उपकुलपति डॉ. सोमा बंदोपाध्याय एवं पं. सुरेश नीरव ने की है।

अध्यात्म एवं धर्म पर आधारित पुस्तकें

3.11 भारतीय दर्शन : भारत के मुक्त 6 दर्शनों का परिचय। इसमें सनातन धर्म के आस्तिक दर्शनों की प्रारंभिक जानकारी है।

3.12 भारत की अन्य दर्शन : भारत के अन्य दर्शन जिन्हें नास्तिक दर्शन कहा गया है। उनके बारे में प्रारंभिक जानकारी, ये दर्शन जैसे चवार्क, बुद्ध, जैन दर्शन हैं।

3.13 वेदान्त : आदि शंकराचार्य द्वारा चार धामों के चार महावाक्य की विस्तृत चर्चा, जिसकी भूमिका लिखी है दर्शन के महाज्ञानी डॉ. उम्मेद सिंह वैद ने।

3.14 श्रीमद्भागवत महापुराण–परिचय एवं समीक्षा : श्रीमद्भागवत को पंचम वेद भी कहा गया है पर आजकल हर गली–मोहल्ले में हम भागवत के पाठ पर फिल्मी तर्ज के गानों पर लिखे भजनों पर नृत्य देखते हैं। एक व्यवहारिक दृष्टि से भागवत की समीक्षा की गई है, इसमें भागवत कथा के बारे में नहीं बल्कि उसके लिखने के उद्देश्य के बारे में बताया गया है।

3.15 वेदों का परिचय एवं समीक्षा : चार वेद क्या है। इनमें क्या विषय वस्तु है। इनका भाष्य किसने–किसने लिखा है। उन भाष्यों में क्या है। समुचित जानकारी जिसे एक हिन्दू को ही नहीं बल्कि विश्व के हर प्राणी को जानना आवश्यक है।

3.16 मनुस्मृति–परिचय एवं समीक्षा : कालांतर में मनुस्मृति को अभिशाप घोषित कर दिया गया है, जबकि यह हर भारतीय की और भारतीय संस्कृति की रूलबुक है। इसमें जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों के निर्वहन का नियम बताया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रेक्षप मंत्रों एवं शंकाओं का निवारण करने का प्रयत्न किया गया है।

3.17 भ्रम और भ्रांतियाँ : सनातन धर्म में व्याप्त भ्रम जैसे दलित का शोषण 5000 वर्षों से हो रहा है इत्यादि का तथ्यपरक उत्तर, कई भ्रांतियाँ दूर होंगी इसे पढ़ने से।

शोध पुस्तक

3.18 चमत्कृत करती भाषा संस्कृत : संस्कृत कितनी चमत्कारी भाषा है, उसके हर पहलू पर क्रमशः आलेख लिखे थे, उनका संग्रह इस पुस्तक में है।

काव्य

4.19 तिमिर ढलेगा : आशाओं को जागृत करती 101 प्रेरक कविताओं की पुस्तक जिसका तीसरा संस्करण छप कर आ चुका है।

4.20 बुलबुले–सी जिंदगी : 101 छंद मुक्त कविताएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लिखी हुई, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध गीतकार रमेन्द्र मोहन त्रिपाठी एवं प्रसिद्ध लेखक शिखर चंद जैन ने लिखी है, पुस्तक का दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

4.21 कुछ माणिक कुछ मोती : प्रांजल हिन्दी में रचित छंदबद्ध कविताएँ अलग–अलग विषय पर क्रमबद्ध, समीक्षा प्रख्यात गीतकार श्री विष्णु सक्सेना, श्रीमती सरिता शर्मा एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने लिखी हैं, पुस्तक आर्ट पेपर पर बहुरंगी है।

4.22 प्रांजलि : जीवन दर्शन पर आधारित 101 प्रार्थनाएँ, छंद मुक्त, समीक्षा वीरेन्द्र गोस्वामी, सर्वेश अस्थाना एवं भागवताचार्य पं. श्रीकांत शर्मा बालव्यास जी ने लिखी है। पुस्तक के दो संस्करण आ चुके हैं।

बाल गीत

4.23 आसमान को छू लें : जयपुर के कल्याण सिंह शेखावत के संग यह बाल गीत की पुस्तक बहुरंगी बड़ी साइज में बालकों को मोहती बनी है, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध बाल लेखक संजय जायसवाल 'संजय' एवं आकाशवाणी, कोलकाता की उद्घोषिका सविता पोद्दार ने लिखी है।

अन्य काव्य

4.24 हे माँ : कुल देवी शक्ति स्वरूप माँ जीण भवानी को समर्पित पुस्तिका जिसमें संस्कृत स्तुति से आरंभ कर के 18 सनातन छंदों की रचनाएँ लिखी गई है।

4.25 माँ : मेरी जननी को हर वर्ष काव्याञ्ली देता रहा हूँ, उनके देहावसान पर समर्पित पुस्तिका, जिसमें 20 गीत छंद बद्ध एवं छंद मुक्त दोनों है।

4.26 शून्य से शून्य तक : दृश्य बनाते हुए 81 कविताएं जो जीवन के विभिन्न आयामों पर लिखी गई है, ये कविताएं छंद मुक्त ले बद्ध है।

विविध

5.27 मूल्यांकन : भारतीय अर्थव्यवस्था का आंकलन 2019 में इसे स्व. विलास राव जी के सहयोग से लिखा था। भारत अर्थव्यवस्था के हर पहलू पर गहन चिंतन आंकड़ों के साथ एवं सुझाव प्रधानमंत्री कार्यालय भेजे गए, जिसमें कई सुझावों को मंजूरी मिली।

5.28 भारत की आर्थिक स्थिति में क्या उचित (प्रकाशनाधीन) : समय-समय पर भारतीय अर्थव्यवस्था पर लेख लिखता रहा हूँ। नोटबंदी का सुझाव भी देने वाले कुछ लोगों में से मैं भी था। इन लेखों को एकत्रित कर पुस्तक का रूप दिया गया है।

5.29 भारतीय काव्य संहिता : भारत में प्रचलित सभी काव्य विधाओं का विवरण लिखने की विधा कैसे लिखें, किन बातों का ध्यान रखें-छंद, छंद मुक्त, मुक्त छंद, हाइकु, गीतिका, गज़ल इत्यादि।

यात्रा संस्मरण

5.30 ऐक्सडेनल टूर इन हाइबेरनेसन : यात्रा संस्मरण, लेख की अनियोजित यात्रा के 7 माह जिसमें उसने पूरे भारत का भ्रमण किया। उन भ्रमणों का रोचक विवरण ललित निबंध रूप में। पुस्तक निखिल प्रकाशन आगरा से प्रकाशित।

संवत 2081 में प्रकाशित

5.31 : इंदु प्रभा - छंद बद्ध कविताओं का संग्रह जिन्हें विषयानुसार अनुक्रमित किया गया है।

5.32 : मैं जीवन दंड विधान हूं-नवगीत एवं छंद वद्ध गीतों का संग्रह

5.33 : लघु उपनिषद त्रयी (मांडूक्य, ईश, केन उपनिषद का व्यावहारिक अर्थों सहित भाष्य मूल श्लोक के साथ)

5.34 : इंदु पदावली (कृष्ण भक्ति पद) : 92 कृष्ण भक्ति के एवं 21 राम भक्ति के पद। पद जो एक लुप्त होती विधा है, उसे पुनर्जीवित करने का प्रयास।

5.35 : इंदु पदावली (भाग 2) निर्गुण पद : कबीर, रैदास, दादू इत्यादि संतों की परंपरा को बढ़ाते हुए 95 निर्गुण पद।

5.36 : दोहांजलि, निर्गुण सगुण एवं नीति परक 711 दोहों का अनुपम संग्रह जिसमें 51 दोहे मीतू कनोडिया जी के सौजन्य से समाहित किये गए हैं।

कुछ प्रमुख सम्मान :

1. भारत गौरव (इस्पात में अभूतपूर्व कार्य हेतु तत्कालीन इस्पात मंत्री के कर-कमलों से दिल्ली की एक स्वयंसेवी संस्था द्वारा।)
2. केंद्रीय सचिवालय द्वारा राजभाषा गौरव पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी द्वारा।
3. विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि विक्रमशिला हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा।

4. साहित्य शिरोमणि दामोदरदास चतुर्वेदी साहित्य शिखर सम्मान 2021 एवं 2022 (पूर्व में यह सम्मान अटल बिहारी वाजपेयी, पंडित गोपालदास नीरज, उदप्ताप सिंह जी इत्यादि को मिला है।)
5. श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार साहित्य सम्मान, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन पूर्वी सिंहभूम शाखा द्वारा।
6. साहित्य मार्तण्ड सम्मान प्रसिद्ध संस्था बिहार हिंदी सम्मेलनी, पटना द्वारा।
7. हिंदी साहित्य शिरोमणि मानद सम्मान, साहित्य मण्डल श्रीनाथ द्वारा।
8. 'हिंदी सेवा सम्मान' श्रवण संस्था व शोध संस्थान, हरिद्वार द्वारा।
9. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' साहित्य रत्न सम्मान सह नगद राशि प्रख्यात संस्था अभ्युदय द्वारा।
10. मानद पीएचडी वैदिक हिंदी साहित्य में लेगॉस यूनिवर्सिटी की शोध इकाई 'इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनस मैनिज्मन्ट एंड रेसर्च टेक्नोलॉजी' द्वारा।

विशेष उपलब्धि : 1116 दिनों में 1000 भजन लिखकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया जो कि इंटरनेशनल बुक ऑफ रेकॉर्ड्स द्वारा प्रकाशित और प्रमाणित किया गया।

साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधि : अंतर्राष्ट्रीय संस्था रचनाकार (शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन का एक प्रकल्प) के संस्थापक सभापति, संस्था प्रति वर्ष साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु दस व्यक्तियों को सम्मानित करती है एवं नगद राशि भी भेंट करती है।

शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन के संस्थापक न्यासी जो कैंसर पीड़ित असहाय रोगियों के नि:शुल्क चिकित्सा की सुविधा प्रदान करती है।